Vol.25, Issue 11 | Annual Subscription ₹ 600

सितंबर 2026

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

Rotary

Advertise in Rotary News

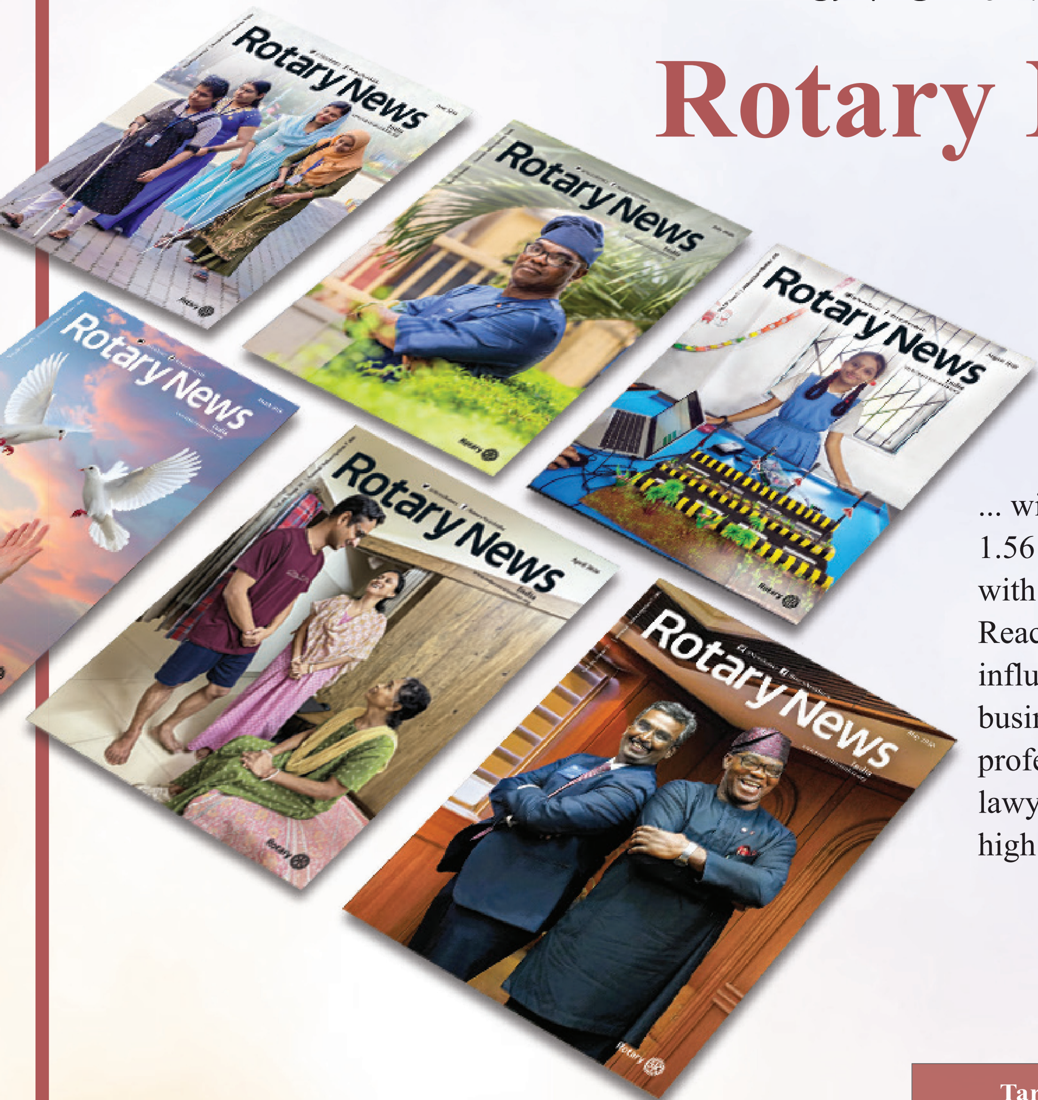

... with a circulation of 1.56 lakh, and connect with 6 lakh readers. Reach some of the most influential industrialists, businessmen, finance professionals, doctors, lawyers and other high flyers.

Tariff (per insert)	
Back cover	₹1,00,000
Inner Front Cover	₹60,000
Inner Back Cover	₹60,000
Inside Full Page	₹30,000
Specifications	
17 x 23 cm	Full page
Advertisements in colour only	

GST 5% applicable

Rotary News Trust

Phone: 044 42145666

e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Attractive discounts available for advertisements of three months and above.

विषयसूची

36

एक-एक नन्हे दिल को जोड़ते हुए

12

रोटरी को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का सफर

40

कमज़ोर नवजातों के लिए माँ का दूध

22

अपने बदलाव की कहानियाँ साझा करें

46

'वुमन ऑन व्हील्स' का जलवायु अभियान

30

मन की सेहत, रोटरी का साथ

महत्वपूर्ण सूचना

सदस्यता शुल्क में संशोधन

प्रिय पाठकों,

भारत सरकार द्वारा पत्रिकाओं के लिए डाक रियायत समाप्त किए जाने से प्रति डाक शुल्क ₹0.70 पैसे से बढ़कर ₹16 हो गया है। इसी कारण हमें वार्षिक सदस्यता शुल्क में संशोधन करने का निर्णय लेना पड़ा है।

नई वार्षिक सदस्यता दरें इस प्रकार हैं:

- प्रिंट संस्करण: ₹600 • ई-वर्ज़न: ₹360

संशोधित सदस्यता शुल्क 1 जुलाई 2026 से प्रभावी होगा। इसके अनुसार आपको चालान (इनवॉइस) भेजा जाएगा।

हम रोटेरियनों से ई-वर्ज़न अपनाने का भी आग्रह करते हैं। यह पर्यावरण-अनुकूल है तथा डाक विलंब के बिना समय पर उपलब्ध हो जाता है।

संपादक

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

रो ई अध्यक्ष का सार्थक संदेश

रो ई अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला की सभी रोटेरियनों के लिए शांति निर्माण को लेकर दी गई अपील ने मुझे बेहद प्रभावित किया है। बेहतर दुनिया के लिए शांति स्थापित करने पर उनका जोर आज के दौर में बेहद प्रासंगिक है, जब दुनिया के कई हिस्सों में भयानक युद्ध जारी हैं और हजारों निर्दोष लोग, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं, मारे जा रहे हैं।

बाबालोला का संदेश मानवता की जड़ को छूता है। आखिर रोटरी अस्पताल, स्कूल और दूसरी सुविधाएं बनाने के लिए कितनी भी मेहनत क्यों न करे, अगर युद्ध कुछ ही मिनटों में इन्हें तबाह कर दें और इंसानी जानें चली जाएं, तो इन प्रयासों का क्या अर्थ रह जाएगा?

अगर शांति के साथ प्रेम और करुणा भी कदम से कदम मिलाकर चलें, तभी यह सच्ची और स्थायी

सेवा होगी-जहां हर इंसान को रंग, जाति, धर्म या राष्ट्रीयता से परे एक-दूसरे का सम्मान करना सिखाया जाए।

सुरेश गोकुलदास
रोटरी क्लब कोयंबटूर
मिड-टाउन - मंडल 3206

अगस्त अंक में रो ई अध्यक्ष बाबालोला कहते हैं कि शांति निर्माण हमारे प्रमुख कार्यक्षेत्रों में से एक है और इसे सोच-समझकर आगे बढ़ाना चाहिए। हम जो भी काम करें, उसमें शांति निर्माण को रणनीतिक और उद्देश्यपूर्ण तरीके से शामिल करना जरूरी है। यही चुनौती उन्होंने हमारे सामने रखी है।

इसलिए हम चाहे जल परियोजना, व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम या सेवा के अन्य सात प्रमुख कार्यक्षेत्रों में से किसी भी क्षेत्र में परियोजना करें, हमें यह जरूर देखना चाहिए कि क्या हमारी परियोजना शांति निर्माण में योगदान दे रही है और समुदाय में स्थायी बदलाव ला रही है।

एन जगतीशन
रोटरी क्लब एलुरु
मंडल 3020

इंटरेक्टर्स की अहम भूमिका

दिल्ली में NEET परीक्षा को लेकर CJP के विरोध प्रदर्शन के दौरान जंतर-मंतर पर जो कुछ हुआ, उसने लोगों का काफी ध्यान खींचा और अलग-अलग प्रतिक्रियाएं सामने आईं। सोशल मीडिया पर वीडियो तेजी से वायरल हुए। कुछ युवा छात्रों की भाषा और व्यवहार ने यह सवाल भी खड़ा किया कि आज की युवा पीढ़ी सार्वजनिक रूप से अपनी बात किस तरह रख रही है।

Gen Zee के इस विरोध प्रदर्शन से हमें सम्मान, जिम्मेदारी, संवेदनशीलता और रचनात्मक संवाद जैसे मूल्यों पर विचार करने का अवसर मिलता है। ये वे मूल्य हैं जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में इंटरेक्टर्स के माध्यम से रोटरी द्वारा किए जा रहे काम को देखकर मुझे उम्मीद मिलती है। राष्ट्र निर्माण सिर्फ आज लोगों की सेवा करना नहीं, बल्कि कल के नागरिकों को तैयार करना भी है। युवा इंटरेक्टर्स को प्रोत्साहित करके रोटरी भारत के भविष्य को आकार दे रही है। जब बच्चे संवेदनशीलता, सम्मान, जिम्मेदारी और सेवा-भाव के साथ बड़े होते हैं, तो यही मूल्य उन्हें एक बेहतर दुनिया बनाने में योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रियदर्शिनी कनोरिया
रोटरी क्लब दिल्ली साउथेक्स - मंडल 3011

सब कुछ क्लब से शुरू होता है

रोटरी न्यूज़ का अगस्त अंक बहुत अच्छा है। डायरेक्टर स्पीक में RI डायरेक्टर के पी नागेश ने इसे बहुत खूबसूरती से कहा है-सब कुछ क्लब से शुरू होता है। क्लब स्तर पर ही विचार परियोजनाओं का रूप लेते हैं और अनजान लोग परिवार बन जाते हैं। यहीं एक सदस्य से सेवा की शुरुआत होती है और धीरे-धीरे उसका असर पूरी दुनिया तक पहुंचता है। हर स्थायी बदलाव की पहली बैठक क्लब में ही होती है।

एक हाथ मिलाना, एक परियोजना, एक जिंदगी में बदलाव। क्लब हॉल से लेकर समुदाय तक, यहीं रोटरी सच में जीवंत होती है।

एस नटराजन
रोटरी क्लब कूथापाक्कम - मंडल 2981

सदस्यता बनाए रखने की जादुई रणनीति

अगस्त अंक में RID नागेश का संदेश सदस्यता बनाए रखने की एक बेहतरीन और बहुआयामी रणनीति प्रस्तुत करता है। वे बिल्कुल सही कहते हैं, पूरी रोटरी दुनिया में सदस्यों को बनाए रखना हमारी सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। लोग वहीं टिकते हैं, जहां उनका स्वागत होता है, उन्हें सम्मान मिलता है, वे जुड़ाव महसूस करते हैं और उनके योगदान की सराहना की जाती है।

इसलिए सदस्यता बनाए रखना केवल किसी एक कमेटी की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर रोटेरियन की जिम्मेदारी है।

आर मुरली कृष्णा
रोटरी क्लब बरहामपुर
मंडल 3262

अगस्त अंक में मनसा कुटीरा पर प्रकाशित शानदार लेख के लिए धन्यवाद। इस लेख में इस महत्वपूर्ण परियोजना के सफर, प्रयासों और उसके प्रभाव को जिस खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है, हम उसकी सराहना करते हैं। लेख ने

न केवल परियोजना की उपलब्धियों को सामने रखा, बल्कि इसके पीछे छिपी सेवा भावना और सामूहिक प्रतिबद्धता को भी बखूबी उजागर किया है।

समुदाय के लोगों के जीवन में मनसा कुटीरा जो बदलाव ला रहा है, उसे सामने लाने के लिए हम *रोटरी न्यूज़* टीम के आभारी हैं। इस लेख से इस पहल को व्यापक पहचान मिलेगी और अधिक लोग इसके उद्देश्य से जुड़ने के लिए प्रेरित होंगे। हम रोटरी न्यूज़ टीम को इस परियोजना की कहानी को इतनी आत्मीयता और स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद देते हैं। आपका प्रोत्साहन हमारे लिए बहुत मायने रखता है और हमें स्थायी प्रभाव पैदा करने के लिए और बेहतर काम करने की प्रेरणा देता है।

राकेश बाबू के एल
रोटरी क्लब मैसूर मिड-टाउन
मंडल 3181

यह पत्र आपके स्टाफ सदस्य मुत्तुकुमारन द्वारा अगस्त अंक में तमाले, घाना में हमारे हालिया बाल नेत्र शल्य चिकित्सा मिशन पर लिखे लेख के संदर्भ में है।

इस कहानी को प्रकाशित करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें अफ्रीका, खासकर उप-सहारा अफ्रीका, में चिकित्सा सेवाओं की भारी जरूरत को सामने लाया गया है। मुत्तुकुमारन ने सभी तथ्यों की पुष्टि के लिए कई बार फोन भी किया।

उम्मीद है कि अफ्रीका और दुनिया के अधिक से अधिक रोटरी क्लब और मंडल TRF की मदद से नेत्र सर्जनों से जुड़ेंगे और जरूरी चिकित्सा सेवाओं की इस कमी को दूर करने में योगदान देंगे।

डॉ के वी रविशंकर
रोटरी ई-क्लब ऑफ बैंगलोर
मंडल 3191

जून और जुलाई क्लब इंस्टॉलेशन के महीने होते हैं। इनमें से कई कार्यक्रम बड़े पैमाने पर, अक्सर महंगे स्टार होटलों में आयोजित किए जाते हैं और इन पर काफी खर्च होता है।

कार्यक्रम आमतौर पर देर शाम शुरू होते हैं और कई बार आधी रात तक चलते हैं। रोटेरियनों को अपने परिवार के साथ इनमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

देर शाम के कार्यक्रम कभी-कभी जरूरी हो सकते हैं, लेकिन इनके असर पर विचार करना भी जरूरी है। अगले दिन आमतौर पर कामकाजी दिन होता है। स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों, कारोबारियों, फैक्ट्री कर्मचारियों और वरिष्ठ नागरिकों को अगले दिन अपनी सामान्य दिनचर्या में लौटना होता है।

देर रात तक चलने वाले कार्यक्रम कई प्रतिभागियों के लिए असुविधाजनक होते हैं।

हमें यह भी सोचना चाहिए कि क्या ऐसे भव्य समारोह वास्तव में जरूरी हैं। इन पर होने वाला भारी खर्च वंचित लोगों के लिए सार्थक सेवा परियोजनाओं में लगाया जा सकता है।

रोटेरियन होने के नाते हमें सादगी, विवेकपूर्ण खर्च और संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग का उदाहरण पेश करना चाहिए। मेरा सभी रोटरी क्लबों से आग्रह है कि भविष्य में अपने इंस्टॉलेशन कार्यक्रम सादगीपूर्ण तरीके से आयोजित करें।

टी डी वासु, मंडल 3233

कवर पर:
हैदराबाद में रो ई अध्यक्ष थिंका बाबालोला, रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम और रो ई निदेशक के पी नागेश के साथ।
चित्र: रशीदा भगत

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारि और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp **पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।**

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है? या यह आपके जंक फोल्डर में जा रही है?

हम हर महीने आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन **ROTARY NEWS PLUS** निकालते हैं। यह प्रत्येक सदस्य को महीने के मध्य तक ई-मेल द्वारा भेजा जाता है।

रोटरी न्यूज़ प्लस हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर पढ़ें।

1.25 मिलियन सिर्फ एक संख्या नहीं है

चित्र : एंड्रयू एसीबो

रोटरी हमेशा से लोगों के बारे में रही है। परियोजनाओं के बारे में नहीं, आंकड़ों के बारे में नहीं-लोगों के बारे में। 2030 में अपनी 125वीं वर्षगांठ तक 1.25 मिलियन रोटेरियनों और 125,000 रोटरेक्टर्स तक पहुंचने का हमारा लक्ष्य भी दरअसल लोगों से ही जुड़ा है। मैं इस लक्ष्य की फिर से बात इसलिए नहीं कर रहा कि मुझे उम्मीद है कि यह संख्या अपने आप आपको प्रेरित करेगी। आंकड़े शायद ही कभी ऐसा करते हैं। मैं इसे इसलिए दोहरा रहा हूं क्योंकि मुझे चिंता है कि इतना बड़ा लक्ष्य कहीं हमारी क्लब की रोजमर्रा की गतिविधियों से दूर और महज एक आंकड़ा बनकर न रह जाए। मैं ऐसा नहीं चाहता। इसलिए आइए, एक बार फिर समझें कि इसके पीछे वास्तव में क्या है।

मैं आपके क्लब के लिए एक आसान-सा अभ्यास सुझाता हूं। पिछले पांच से सात वर्षों पर नज़र डालिए और अपना सबसे अच्छा वर्ष चुनिए। शायद वह वह साल था जब नए सदस्य जुड़े और, इससे भी महत्वपूर्ण, क्लब के साथ बने रहे। या शायद वह साल था जब क्लब की बैठकें सदस्यों के लिए कैलेंडर की एक और जिम्मेदारी नहीं, बल्कि ऐसी जगह बन गई थीं, जिसका उन्हें इंतजार रहता था। वह साल खोजिए। फिर मैं आपसे कहता हूं- अपने सर्वश्रेष्ठ से भी बेहतर करने का प्रयास कीजिए। यह आसपास के किसी क्लब या पड़ोसी मंडल से आगे निकलने की दौड़ नहीं है। रोटेरियनों के बीच इसे कभी प्रतियोगिता नहीं बनना चाहिए। यह खुद को अपने ही सर्वोच्च मानक पर कसने और फिर उस स्तर तक दोबारा पहुंचने की चुनौती है।

आखिर 2030 का यह सदस्यता लक्ष्य मेरे लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि मैं बार-बार इसकी बात करता हूं? क्योंकि इन आंकड़ों के पीछे एक-एक इंसान है, जिसकी जिंदगी रोटरी बदल सकती है-ठीक वैसे ही जैसे मेरी और आपकी जिंदगी बदली है। रोटरी ने मुझे दशकों तक कायम रहने वाली दोस्तियां दीं, जीवन में एक ऐसा उद्देश्य दिया, जिसकी तलाश मुझे खुद नहीं पता थी, और समय के साथ ऐसा अपनापन दिया जो मेरे परिवार का ही विस्तार लगने लगा।

इसलिए उन्हें अपनी कहानी बताइए। ईमानदारी से बताइए कि रोटरी ने आपको कैसे बदला। सिर्फ उन परियोजनाओं की बात न करें जिन्हें आपने पूरा किया या जो धन आपने जुटाया, बल्कि यह भी बताएं कि इस सफर में आप खुद कैसे बदले। ऐसी कहानियां अक्सर वहां तक पहुंचती हैं, जहां और कुछ नहीं पहुंच पाता।

अगर हम ऐसा 'स्थायी प्रभाव पैदा करना' चाहते हैं, जो पीढ़ियों तक महसूस किया जाए, तो हमें अपने साथ और लोगों को जोड़ना होगा, ताकि वे हमारे काम को आगे बढ़ाने में हमारे साथ खड़े हों।

आइए, सिर्फ इस महीने नहीं, बल्कि हर महीने और हर साल मिलकर रोटरी को और मजबूत, और आनंदमय और उस परिवार के और करीब बनाएं, जो मेरे लिए हमेशा से रोटरी रही है।

अपना सर्वश्रेष्ठ वर्ष खोजिए। फिर आइए, मिलकर अपने सर्वश्रेष्ठ से भी बेहतर करें।

ओलायिंका बाबालोला
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

हर मोड़ पर रोमांच

हाल के दिनों में हमने भारत की युवा पीढ़ी, खासकर Gen Zee, के जीवन में बड़े बदलाव देखे हैं। शिक्षा व्यवस्था की हालत को लेकर उनकी चिंताएं भी खुलकर सामने आई हैं-व्यवस्था का बढ़ता व्यावसायीकरण, भ्रष्टाचार और दूसरी गड़बड़ियां, जिनसे पूरा तंत्र समाज के एक खास वर्ग के हित में झुकता नजर आता है। जब देशभर में निराशा, हताशा और विरोध के बादल हमारे आसमान को घेर रहे थे, तभी 2026 ग्लासगो कॉमनवेल्थ गेम्स में भारतीय खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन की उत्साहजनक खबर आई।

भारत ने खेलों में चौथा स्थान हासिल किया और 30 पदक-13 स्वर्ण, 17 रजत और 9 कांस्य जीते। खास बात यह रही कि शूटिंग और कुश्ती जैसे हमारे पारंपरिक मजबूत खेल इस बार शामिल नहीं थे, जिनमें भारतीय खिलाड़ी हमेशा शानदार प्रदर्शन करते आए हैं।

भारतीय मुक्केबाजों ने पहली बार ऐतिहासिक 10 पदक अपने नाम किए, जिनमें सात स्वर्ण पदक शामिल हैं। किसी एक देश द्वारा एक ही गेम्स में एक स्पर्धा में इतने स्वर्ण पदक जीतने का यह नया रिकॉर्ड है।

जूडो में भारत ने पहली बार स्वर्ण पदक जीता। वहीं हमारी स्टार वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने लगातार तीसरी बार उथत्रः स्वर्ण अपने नाम किया। ट्रैक एंड फील्ड में गुलवीर सिंह ने भी इतिहास रचा। वह एक ही गेम्स में एक रजत और एक कांस्य पदक जीतने वाले पहले भारतीय ट्रैक एंड फील्ड एथलीट बने।

अपने देश के खिलाड़ियों के लिए टीवी के सामने बैठकर पूरे जोश से चीयर करने से ज्यादा खुशी शायद ही किसी चीज में हो। और अब भारत 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी करेगा, जो अहमदाबाद में आयोजित होंगे। उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में हमारे खिलाड़ी इसी तरह शानदार प्रदर्शन करते रहेंगे और देश का सिर गर्व से ऊंचा करते रहेंगे।

खेल में जीत का रोमांच प्रशंसकों के लिए बेमिसाल होता है। जीत पर तालियां बजाना और जोश में चीयर करना तो आसान है, लेकिन जरा एक पल ठहरकर उन खिलाड़ियों की मेहनत के बारे में भी सोचें-बेनाम रातें, सुबह-सुबह की कड़ी ट्रेनिंग, लगातार अभ्यास, पसीना और अथक मेहनत, और मैदान पर नाकामी मिलने पर बहते आंसू और निराशा। और जब बात एड्रेनालिन के रोमांच की हो, तो उन रोटेरियनों से पूछिए जो पूरे जुनून, लगन और संवेदनशीलता के साथ समुदाय सेवा परियोजनाओं को पूरा करने में जुटे रहते हैं। भारत में ऐसे रोटेरियनों की कोई कमी नहीं है।

जैसा कि वरिष्ठ नेता अक्सर अपने संबोधनों में कहते हैं, रोटेरियन अपनी परियोजनाओं में उच्च स्तर की प्रतिभा और तकनीकी विशेषज्ञता लगाते हैं। चाहे घर बनाना हो, जलस्रोतों को पुनर्जीवित करना हो, अफ्रीका या भारत में जटिल सर्जरी करना हो या स्कूलों में डिजिटल लर्निंग की सुविधाएं तैयार करनी हों-वे हर काम पूरी कुशलता से करते हैं।

और इन लोगों को यह सब करने के लिए नौकरी पर नहीं रखा जा सकता, क्योंकि वे खुद सफल कारोबारी और पेशेवर हैं, जो अपने-अपने फलते-फूलते व्यवसाय और पेशे में व्यस्त हैं। फिर भी, समुदाय की सेवा के लिए वे अपना समय, हुनर और ऊर्जा पूरे दिल से लगाते हैं।

इसीलिए जब सेवा या विशेषज्ञता बिना किसी पारिश्रमिक की अपेक्षा के दी जाती है, तो उसमें उत्कृष्टता का स्तर और भी ऊंचा हो जाता है और वह पूर्णता की ओर बढ़ती है।

और स्वयंसेवा करने वाले रोटेरियनों को इसके बदले क्या मिलता है? संतोष, गर्व और वह रोमांच, जिसकी तुलना किसी खिलाड़ी की जीत के बाद मैदान पर महसूस होने वाले जोश से की जा सकती है।

खेलों में मिली जीत निश्चित ही सराहनीय है और हजारों सपनों को जन्म देती है। लेकिन रोटेरियनों की बेहतरीन परियोजनाएं लोगों की जिंदगी और आजीविका को ऐसे बदलती हैं, जिसकी कल्पना भी मुश्किल है। इनका असर ठोस, तुरंत दिखाई देने वाला, मापने योग्य और टिकाऊ होता है।

उस आदिवासी ग्रामीण से पूछिए, जो कभी झोपड़ी में रहता था और अब उसके पास पक्का घर है। या महाराष्ट्र के उस छात्र से, जो बस ड्राइवर का बेटा है, लेकिन बेहतरीन खढ इनोवेशन लैब में प्रशिक्षण लेकर तुरंत रोजगार हासिल कर सका। या उन महिलाओं से, जिन्हें सिलाई, ब्यूटी केयर और दूसरे हुनर सिखाकर आत्मनिर्भर बनाया गया।

अगर भारत को थोड़ा-थोड़ा बदलना, एक-एक छोटे कोने से उसकी तस्वीर बदलना, एड्रेनालिन का रोमांच पैदा नहीं कर सकता, तो फिर और क्या कर सकता है? ऐसे काम को सलाम-और इसे करने वालों को और ताकत!

रशीदा भगत

ADVT.

SHIKHAR TRAVELS
TRUSTED BY
1000+
ROTARIANS & TRAVELERS
SINCE 1979
ROTARIANS,
TAKE YOUR CONNECTIONS GLOBAL.
Travel. | Fellowship. | Networking. | Experiences.
From club meetings to international journeys, we create memorable travel experiences designed around your Rotary group.
LOCAL ROTARY FELLOWSHIP
Meet & connect with Rotary Clubs worldwide.
EXCLUSIVE CLUB EXPERIENCE
Private Meeting, dinners & get togethers.
CUSTOMISED JOURNEY
Travel Designed around your group's interest.
COMPLETE TRAVEL SUPPORT
Flights • Hotels • Visas • Insurance • Logistics
TRAVEL THE WORLD. LEAVE THE DETAILS TO US.
Contact Us
Call/Email:-
+91 87964 64447
tours@shikhar.com
Singapore
Europe
Thailand
SCAN HERE
Book
FLIGHT TICKET
at
Affordable Price
than Other Platforms
SHIKHAR TRAVELS
SINCE 1979
Your Journey, Our Passion
1,00,000+
Happy Travelers
IATA
MORE SAVINGS

निदेशक का संदेश

बढ़ते रहिए

क्लब को बढ़ाएं। उसे मजबूत बनाएं। उसका भविष्य संवारें।

हम आज एक ऐसी अनिश्चित दुनिया में रह रहे हैं, जहां संघर्ष जारी हैं, अर्थव्यवस्थाएं उतार-चढ़ाव से गुजर रही हैं, समुदाय जलवायु चुनौतियों का सामना कर रहे हैं और युवा पहले से कहीं अधिक जुड़े हुए होने के बावजूद अक्सर अपने जीवन के उद्देश्य से खुद को दूर महसूस करते हैं।

ऐसे समय में दुनिया को और भाषणों की जरूरत नहीं है। उसे और हाथों की जरूरत है-ऐसे हाथों की, जो सेवा करें, परवाह करें और उम्मीद जगाएं।

मैं उस कहावत में विश्वास करता हूं-प्रार्थना करने वाले होंठों से सेवा करने वाले हाथ अधिक पवित्र होते हैं। रोटरी हमें इस विश्वास को जीने का अवसर देती है। हमारी हर परियोजना, हर जिंदगी जिसे हम छूते हैं और हर समुदाय जिसे हम मजबूत बनाते हैं, उसकी शुरुआत उस रोटेरियन से होती है जिसने सेवा का रास्ता चुना। और यहीं एक सरल सत्य है जिसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

एक अच्छी खबर है। ज़ोन 4, 5, 6 और 7 में 225 नए क्लब और 6,400 से अधिक नए सदस्य जुड़े हैं। इन चारों ज़ोन में सदस्यता में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है और ज़ोन 5 सदस्यता वृद्धि में दुनिया में नंबर 1 है। हर नया सदस्य सेवा के लिए एक नई जोड़ी हाथों और एक नए अवसर का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन वृद्धि कहानी का सिर्फ आधा हिस्सा है। दुनिया भर में रोटरी ने नए क्लब तो जोड़े हैं, लेकिन साथ ही सदस्य भी खोए हैं। हम दरवाजा खोलने में सफल हो रहे हैं, लेकिन यह सुनिश्चित नहीं कर पा रहे कि लोग उसके भीतर बने रहें।

इसीलिए इस वर्ष हमारा फोकस बिल्कुल स्पष्ट है: क्लब को बढ़ाएं और उसे बनाए रखें। पहला कदम है ईमानदार आकलन। हर क्लब को RAG Analysis करना चाहिए-Red, Amber और Green।

Green - सदस्यता में 51 से अधिक की वृद्धि। Amber - सदस्यता 26-50 के बीच स्थिर। Red - सदस्यता में 25 से कम की गिरावट। यह किसी को आंकने के लिए नहीं, बल्कि स्थिति को समझने के लिए है। अगर सदस्य क्लब छोड़ रहे हैं, तो हमें पूछना चाहिए-क्यों?

अधिकतर सदस्य इसलिए रोटरी नहीं छोड़ते कि रोटरी के पास कोई उद्देश्य नहीं है। वे इसलिए जाते हैं क्योंकि वे कभी वास्तव में रोटरी से जुड़ ही नहीं पाए। उनका स्वागत कीजिए, उन्हें शामिल कीजिए, उन्हें जिम्मेदारी दीजिए और उन्हें महसूस कराइए कि वे महत्वपूर्ण हैं-सदस्यता बनाए रखना अपने आप आसान हो जाएगा।

दूसरा कदम है आज से आगे का निर्माण करना। हर रोटरी क्लब को 1:2:3 यूथ सर्विस अप्रोच अपनानी चाहिए-एक रोटरी क्लब कम से कम दो रोटरेक्ट क्लब और तीन इंटरेक्ट क्लबों को पोषित करे। आज का इंटरेक्टर कल का रोटरेक्टर और उसके बाद रोटेरियन बन सकता है। इस तरह रोटरी पीढ़ी-दर-पीढ़ी मजबूत होती रहेगी। रोटरी दुनिया की सबसे बड़ी 'लीडरशिप फैक्ट्री' भी है। हर वर्ष 4 लाख से अधिक नेता क्लब, मंडल, ज़ोन और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेदारियां संभालते हैं। रोटरी केवल नेताओं को खोजती नहीं, बल्कि सेवा, जिम्मेदारी और काम के जरिए उन्हें तैयार करती है।

हर नया सदस्य केवल एक स्वयंसेवक नहीं है; वह संभावित अध्यक्ष, मंडल गवर्नर, डायरेक्टर या ट्रस्टी भी है। इसीलिए विजन 2030 महत्वपूर्ण है। रोटरी अपनी 125वीं वर्षगांठ की ओर बढ़ रही है और हमारा वैश्विक लक्ष्य है-1.25 मिलियन रोटेरियन और 125,000 लाख रोटरेक्टर।

यह विजन तभी हकीकत बनेगा जब हर क्लब बढ़े, हर क्लब अपने सदस्यों को बनाए रखे और हर रोटेरियन रोटरी का भविष्य बनाने के लिए 'हां' कहे। हर सदस्यता संख्या के पीछे एक इंसान है। हर इंसान के पीछे एक परिवार, एक समुदाय और स्थायी प्रभाव पैदा करने का एक अवसर है। इसलिए आइए, हम 'संभावनाओं के नेता' (Possibility Leaders) बनें।

क्लब अध्यक्षों, अपने क्लबों की बागडोर सकारात्मक सदस्यता वृद्धि के साथ आगे सौंपें। मंडल गवर्नरों, अपने मंडल को उससे अधिक मजबूत स्थिति में आगे सौंपें, जितना मजबूत आपको मिला था।

दुनिया और हाथों की मांग कर रही है। आइए, हम रोटरी के लिए 'हां' कहकर इसका जवाब दें और मिलकर स्थायी प्रभाव पैदा करें।

एम मुरुगानंदम
रो ई उपाध्यक्ष, 2026-27
रो ई निदेशक, 2025-27

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

पोलियो को इतिहास बनाएं

इस महीने मैं विश्व पोलियो दिवस, 24 अक्टूबर, के लिए थोड़ी तैयारी और कुछ मजेदार योजना बनाना चाहता हूं। क्या आप मेरे साथ हैं?

हर साल विश्व पोलियो दिवस हमें एक पल ठहरकर सोचने और उस संकल्प को फिर दोहराने का अवसर देता है, जो रोटरी ने दुनिया से किया है-कहीं भी, किसी भी बच्चे को फिर कभी पोलियो के विनाशकारी प्रभावों का सामना न करना पड़े। इस वर्ष यह संकल्प और भी महत्वपूर्ण महसूस होता है।

रो ई अध्यक्ष यिंका ने हम सभी को अपने सर्वश्रेष्ठ से बेहतर करने की चुनौती दी है। मैं भी इसी भावना के साथ आप सभी के सामने अपनी एक चुनौती रखना चाहता हूं। ईमानदारी से देखें कि आपके क्लब ने पोलियो उन्मूलन के लिए अब तक क्या किया है। अगर आपके प्रयास मजबूत रहे हैं, तो उन्हें और आगे बढ़ाइए। और अगर आपका क्लब अभी तक हमारी नंबर 1 संगठनात्मक प्राथमिकता से नहीं जुड़ा है, तो अब शुरुआत कीजिए-कम से कम 1,500 डॉलर का योगदान देकर: *endpolio.org/donate*

आपका यह एक योगदान आपकी सोच से कहीं ज्यादा बड़ा असर पैदा करेगा। गेट्स फाउंडेशन के 2:1 मैचिंग के कारण आपका हर एक डॉलर तीन डॉलर में बदल जाता है। मिलकर हम 50 मिलियन डॉलर के वार्षिक लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं और उस काम को पूरा कर सकते हैं, जिसकी शुरुआत रोटरी ने की थी। हर कदम हमें उस दुनिया के और करीब ले जाता है, जहां पोलियो सिर्फ इतिहास की किताबों में दिखाई देगा। लेकिन सिर्फ आंकड़े पूरी कहानी नहीं बताते। सबसे बढ़कर, पोलियो उन्मूलन एक मानवीय प्रयास है-साहस, करुणा और इस विश्वास से बना प्रयास कि सेवा भविष्य को बदल सकती है। इस विश्व पोलियो दिवस पर मैं ऐसी जगह समय बिताऊंगा, जो इस भावना का बिल्कुल सही प्रतीक है। यह ऐसी जगह है, जहां मैं पहले कभी नहीं गया हूं और सोशल मीडिया पर रियल टाइम में इसके बारे में बताने को लेकर उत्साहित हूं।

जब आप विश्व पोलियो दिवस की तैयारी करें, तो मैं चाहता हूं कि आप भावना और कर्म-दोनों में मेरे साथ जुड़ें। एक कार्यक्रम आयोजित करें। रोटरी के नेतृत्व की कहानी लोगों तक पहुंचाएं। अपने समुदाय को इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करें। अपने क्लब की ओर से योगदान दें। और सबसे बढ़कर, ऐसी रफ्तार और ऊर्जा पैदा करें जो आने वाले महीनों तक बनी रहे।

और मेरे उन सभी दोस्तों के लिए जिन्हें पहेलियां पसंद हैं, 24 अक्टूबर को मेरी जगह का एक संकेत: "Polio with the _ E _ _ U _ _ S."

जेनिफर जोन्स
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	वैद्यनाथन के
RID 2982	सेंथिलकुमार सी
RID 3000	आर बी एस मणि
RID 3011	अजीत जालान
RID 3012	अमित गुप्ता
RID 3020	श्रीराम गुड्डिकोंडा
RID 3030	राजेश वी पाटिल
RID 3040	संस्कार कोठारी
RID 3053	बृज मोहन अग्रवाल
RID 3055	नैमिष एन रवानी
RID 3056	अरुण बगड़िया
RID 3060	निलेश आर शाह
RID 3070	अनिल कुमार सिंघल
RID 3080	रीता कालरा
RID 3090	अमित कुमार
RID 3100	पायल गौर
RID 3110	जसबीर सिंह भाटिया
RID 3120	पूनम गुलाटी
RID 3131	नितिन एस धमाले
RID 3132	जयेश आर पटेल
RID 3141	राजन दुआ
RID 3142	निलेश वी जावंत
RID 3150	उदय सुधीर पिलानी
RID 3160	केशव रेड्डी पी
RID 3170	लेनी डा कोस्टा
RID 3181	सतीश बोलार
RID 3182	बी एम भट्ट
RID 3191	अनिल गुप्ता
RID 3192	रविशंकर डाकोजू
RID 3203	के भूपति
RID 3204	एम वी मोहनदास मेनन
RID 3205	जोशी चाको
RID 3206	आर एस मारुति
RID 3211	के जी नायर
RID 3212	गांधी कृष्णन
RID 3231	टी एस रविकुमार
RID 3233	श्रीराम दुव्वुरी
RID 3234	सुरेश डी जैन
RID 3240	असीम कांती ए
RID 3250	अनु नारंग
RID 3261	आलम एस रूपरा
RID 3262	अनिल कुमार सामल
RID 3291	तपस भट्टाचार्य

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंझिल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

के पी नागेश RID 3191
रो ई निदेशक और अध्यक्ष
रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
एम मुरुगानंदम RID 3000
रो ई उपाध्यक्ष और निदेशक
डॉ भरत पांड्या RID 3141
टीआरएफ ट्रस्टी
राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
ए एस वेंकटेश RID 3234
राजु सुब्रमण्यन RID 3141
अनिरुद्धा रॉयचौधरी RID 3291
गुरजीत सिंह सेखों RID 3070
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2026-27)

पायल गौर RID 3100
गवर्नर्स काउंसिल की अध्यक्ष
डॉ लेनी डा कोस्टा RID 3170
गवर्नर्स काउंसिल के उपाध्यक्ष
आर सुब्रमणि RID 3000
गवर्नर्स काउंसिल के सचिव
अजीत जालान RID 3011
गवर्नर्स काउंसिल के कोषाध्यक्ष

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

टीआरएफ ट्रस्टी का संदेश

जरूरत को नेतृत्व करने दें

जब मैं विभिन्न मंडलों की यात्रा करता हूं और हमारे क्षेत्र के रोटरी क्लबों द्वारा किए गए सेवा कार्यों को देखता हूं, तो एक बात मुझे खास तौर पर प्रभावित करती है-रोटेरियन जिस जुनून के साथ अपनी परियोजनाओं के बारे में बताते हैं। उनमें अपनी परियोजनाओं के प्रति जिम्मेदारी और गर्व की भावना साफ दिखाई देती है।

लेकिन अक्सर हम परिणाम से ही संतुष्ट हो जाते हैं और उससे आगे बढ़कर वह बड़ा प्रभाव पैदा करने की कोशिश नहीं करते, जिसकी हमारे पास क्षमता है। इससे हमारी पहुंच सीमित हो जाती है।

आइए, शुरुआत के तरीके पर फिर से विचार करें। क्या शुरुआत क्लब के फंडरेज़र या किसी परियोजना के विचार से होनी चाहिए?

हमारी क्षमता असीमित है, बशर्ते हमारी नजर इस बात पर हो कि समुदाय को किस चीज की जरूरत है, न कि इस पर कि हम क्या कर सकते हैं।

इसलिए हमारी समुदाय सेवा परियोजनाओं की शुरुआत जरूरत के आकलन से होनी चाहिए। ऐसी जरूरत, जिसे पूरा करने से ऐसा प्रभाव पैदा हो जो लंबे समय तक कायम रहे और समुदाय के लिए स्थायी लाभ लेकर आए। द रोटरी फाउंडेशन भी हमेशा ऐसे स्थायी बदलाव लाने पर जोर देता है, जिन्हें हम मिलकर अपने समुदायों में ला सकते हैं।

किसी व्यक्ति की हर छोटी मदद और परोपकार किसी न किसी की जिंदगी में बदलाव जरूर लाता है, लेकिन इससे हमारी सामूहिक और संगठित सेवा शक्ति का पूरा इस्तेमाल नहीं हो पाता।

इसलिए मैं हर रोटेरियन और हर रोटरी क्लब से आग्रह करूंगा कि अपने आसपास देखें और ऐसी तत्काल जरूरत पहचानें, जिसे पूरा करने से लोगों की जिंदगी बदल सकती है। बड़ी और पहली नजर में असंभव लगने वाली समस्याओं का समाधान भी किया जा सकता है, अगर हम मिलकर पूरी ताकत से प्रयास करें।

आइए, हम अपने बजट के हिसाब से परियोजनाएं तलाशना बंद करें और ऐसी प्रभावशाली परियोजनाओं के विचार तलाशें, जो समुदायों को बदल सकें। सामूहिक रूप से हमारी ताकत उस क्षमता से कहीं बड़ी है, जो हममें से हर व्यक्ति अकेले रखता है। हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए।

आइए, संकल्प लें कि हम अपने समुदायों की उन जरूरतों को खोजेंगे और पहचानेंगे, जिन्हें हम मिलकर पूरा कर सकते हैं और स्थायी प्रभाव पैदा कर सकते हैं।

जैसा कि रॉबर्ट ब्राउनिंग ने अपनी प्रसिद्ध कविता *Andrea del Sarto* में लिखा है: मनुष्य की पहुंच उसकी पकड़ से आगे होनी चाहिए-वरना स्वर्ग किसलिए है!

ए एस वेंकटेश
टीआरएफ ट्रस्टी

रो ई निदेशक के पी नागेश

रशीदा भगत

रोटरी को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का सफर

रशीदा भगत

रोटरी निदेशक के पी नागेश का जन्म कर्नाटक के कनकपुरा तालुका के एक किसान परिवार में हुआ और उनका बचपन गाँव में बीता। हाई स्कूल तक उनकी पढ़ाई कन्नड़ माध्यम से हुई, जबकि अंग्रेज़ी और हिंदी उनके विषय थे। वे बताते हैं, मुझे हाई स्कूल पहुँचने के लिए करीब 8 किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था और फिर उतना ही चलकर वापस आना होता था-हर दिन। पीयूसी की पढ़ाई के लिए परिवार कनकपुरा आ गया, क्योंकि गाँव से वहाँ तक 23 किलोमीटर पैदल जाना पड़ता था, जो संभव नहीं था।

इसके बाद उन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की। फिर नौकरी की तलाश का दौर शुरू हुआ, लेकिन उस समय नौकरी मिलना आसान नहीं था।

तभी लगभग संयोग से भारतीय वायु सेना उनकी जिंदगी में आई। वे बताते हैं, मेरे एक सहपाठी ने विज्ञापन देखा, जिसमें युवा इंजीनियरों को भारतीय सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। हमने सोचा कि चयन तो होगा नहीं, फिर भी चलो, एक अच्छा आउटिंग हो जाएगा। यात्रा, रहने और खाने का सारा खर्च भी मुफ्त था।

लेकिन नागेश को जल्द ही सुखद आश्चर्य हुआ। उन्होंने एक के बाद एक सभी चयन चरण पार किए और पायलट ऑफिसर के रूप में भारतीय वायु सेना में शामिल हो गए। आगे चलकर वे फ्लाइट लेफ्टिनेंट बने और छह वर्षों तक वायु सेना में सेवा दी।

वायु सेना के छह साल

फिर उन्होंने वायु सेना क्यों छोड़ी? यह 1990 के दशक की शुरुआत थी। उस समय बड़ी संख्या में युवा भारतीय इंजीनियर अमेरिका जा रहे थे और नागेश के इंजीनियरिंग कॉलेज के अधिकांश सहपाठियों ने भी अमेरिका जाने का फैसला किया था। मेरी पत्नी उमा कंप्यूटर इंजीनियर हैं और मैं मैकेनिकल इंजीनियर। हमने भी सोचा कि अमेरिका चले जाएँ।

एक नज़र में

धर्म: मैं अपने धर्म और सभी धर्मों का सम्मान करता हूँ। लेकिन पूजा-पाठ और दूसरी धार्मिक रस्मों की जिम्मेदारी उमा संभालती हैं। वे मेरी कमी पूरी कर रही हैं और मैं इसके लिए उनका आभारी हूँ।

पसंदीदा खाना: हमारा दक्षिण भारतीय खाना- इसका कोई मुकाबला नहीं। मुझे हर तरह का डोसा बहुत पसंद है... और हाँ, बिरयानी भी!

खाना बनाना: मैं खाना बनाना चाहता हूँ और मुझे इसका थोड़ा शौक भी है, लेकिन उमा मुझे रसोई में घुसने ही नहीं देतीं!

फिटनेस: मैं फिट हूँ और इसका श्रेय भारतीय वायु सेना को जाता है, जहाँ सुबह 4 से 7 बजे तक लगातार तीन घंटे दौड़, खेल और दूसरी शारीरिक गतिविधियाँ होती थीं। आज भी फिटनेस मेरी दिनचर्या का हिस्सा है। सुबह 6 बजे एक घंटे शटल बैडमिंटन खेलता हूँ और फिर एक घंटा जिम में बिताता हूँ। मेरी बेटी निधि मुझे जिम जाने के लिए मजबूर करती है!

आराम: किसी ने मुझसे कहा कि थोड़ा आराम किया करो, तुम बहुत भागदौड़ करते हो। मैंने कहा, जिस पल लेटूँगा, तनाव होने लगेगा! लोगों से बात करना और व्यस्त रहना ही मेरे लिए आराम है।

संगीत: मुझे संगीत बहुत पसंद है। इससे मुझे सुकून मिलता है। हिंदी, कन्नड़... हर तरह का भारतीय संगीत पसंद है।

फिल्में और पसंदीदा अभिनेता: भारतीय फिल्में पसंद हैं। पहले के दिनों में राजकुमार, फिर रजनीकांत और कमल हासन। अब हिंदी फिल्में भी पसंद हैं, लेकिन पुरानी फिल्में, नई वाली नहीं।

लोगों के बीच रहना पसंद: मुझे कई काम एक साथ करना पसंद है। मैं लगभग 18 घंटे रोज़ काम करता हूँ। करीब 20 ऐसे लोग हैं, जो वर्षों में परिवार जैसे बन गए हैं। हम महीने में एक बार मिलते हैं-कभी फिल्म देखने, कभी पिकनिक पर, कभी सुबह-सुबह लालबाग या कब्बन पार्क में टहलने, या फिर कहीं साथ खाना खाने। मुझे लोगों के साथ रहना बहुत पसंद है। अकेला रहता हूँ तो तनाव होने लगता है और बेचैनी महसूस होती है।

निदेशक नागेश अपनी पत्नी उमा, बेटी निधि और बेटे तेजस के साथ।

पसंदीदा छुट्टी का ठिकाना: मुझे ऐसी जगहें पसंद हैं जहाँ प्रकृति और प्राकृतिक सुंदरता भरपूर हो। प्राकृतिक सुंदरता के मामले में न्यूज़ीलैंड का कोई मुकाबला नहीं। कुछ यूरोपीय देश भी बेहद खूबसूरत हैं। हाल ही में हमने आठ अफ्रीकी देशों की यात्रा की और बहुत आनंद आया।

रोटरी संक्षेप में: रोटरी एक ऐसी संस्था है जिसका कोई मुकाबला नहीं। इसमें हर व्यक्ति के लिए कुछ न कुछ है। मुझे यह इसलिए पसंद है क्योंकि किसी भी जरूरत के लिए यह एक तरह का ङ्गसिंगल विंडो सॉल्यूशनफ है... यही रोटरी है।

एक अच्छा नेता: एक अच्छे नेता को हमेशा उदाहरण बनकर नेतृत्व करना चाहिए, क्योंकि रोटरी नेताओं का संगठन है। अगर आप अपने आचरण से नेतृत्व करेंगे, तो लोग आपका अनुसरण भी करेंगे और सम्मान भी। मैंने बेंगलुरु के दिवंगत पीडीजी योगानंद से बहुत कुछ सीखा। वे मेरे रोटरी गुरु हैं।

रोटरी के लिए सपना: आज रोटरी जहाँ है, उससे मैं संतुष्ट नहीं हूँ। रोटरी अच्छा काम कर रही है, लेकिन मैं ऐसी रोटरी देखना चाहता हूँ जो महान हो और गैर-सरकारी संगठनों में सबसे ऊपर हो। उसमें वहाँ तक पहुँचने के सभी गुण और क्षमता मौजूद हैं। समस्या नेतृत्व की अवधारणा में है, नेताओं में नहीं। हमारे पास बेहतरीन नेता हैं।

टीआरएफ को योगदान: हो सकता है कि हम दुनिया में नंबर 2 हों, लेकिन फिर भी मैं संतुष्ट नहीं हूँ। क्षमता इतनी है कि इसे दस गुना तक बढ़ाया जा सकता है। बेंगलुरु में अपने स्वीकृति भाषण में मैंने एक और लक्ष्य रखा था-2030 तक भारत में 100 रोटरी मंडल हों और टीआरएफ को भारत का योगदान 10 करोड़ अमेरिकी डॉलर तक पहुँचे।■

भारतीय वायु सेना ने मुझे नेतृत्व करना, आत्मविश्वास और बिना किसी डर के अपनी बात रखना, अनुशासन, समय प्रबंधन और ड्रेस कोड–बहुत कुछ सिखाया।

लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। एक और विज्ञापन आया और उनकी जिंदगी ने फिर करवट ली।

इस बार एक सिक्योरिटी कंपनी के लिए युवा रक्षा अधिकारियों की तलाश थी। चूँकि मैं अमेरिका जाना चाहता था, इसलिए मैंने इस विज्ञापन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। लेकिन उमा ने मेरी ओर से आवेदन कर दिया और कहा, 'देखते हैं क्या होता है!' तीसरे ही दिन उन्हें इंटरव्यू के लिए बुलाया गया, वे चयनित हो गए और अगले दो साल वहीं काम किया। हालांकि, वायु सेना उन पर पहले ही गहरा प्रभाव छोड़ चुकी थी।

यह पूछने पर कि वायु सेना ने उन्हें क्या सिखाया, खासकर नेतृत्व के बारे में, नागेश कहते हैं, चयन प्रक्रिया ही काफी कठिन और चुनौतीपूर्ण थी। यह करीब पाँच दिन तक चली और इसमें लिखित परीक्षा, पेशेवर ज्ञान, समूह गतिविधियाँ, चर्चाएँ, शारीरिक दक्षता-दौड़ना, रस्सी पर चढ़ना, कूदना आदि सब शामिल था। दौड़ में मैं पहले स्थान पर रहा।

मैंने मज़ाक में कहा कि स्कूल के दिनों में इतनी पैदल यात्रा का शायद फायदा मिला होगा। वे हँसते हुए कहते हैं, बिल्कुल! इतनी पैदल चलने की वजह से मेरी शारीरिक फिटनेस बहुत अच्छी थी।

लेकिन एक जगह उन्हें मुश्किल हुई-ग्रुप डिस्कशन में। वहाँ आईआईटी और दूसरे प्रतिष्ठित कॉलेजों से पढ़े युवा भी थे। नागेश ने कन्नड़ माध्यम से पढ़ाई की थी और चर्चा में अपनी बात रखना उनके लिए आसान नहीं था। सब लोग बोल रहे थे और मुझे अपनी बात कहने का मौका ही नहीं मिल रहा था।

तभी उन्हें एक फिल्म से मिला अपना कमल हासन वाला ट्रिक याद आया। फिल्म में अभिनेता बस में सफर कर रहा होता है और भाषा की समस्या के कारण ड्राइवर को बस रोकने के लिए कह नहीं पाता। काफी कोशिशों के बाद वह जोर से चिल्लाता

रशीदा भगत

भारत में रोटरी

मैंने क्लब अध्यक्ष बनने में इसलिए झिझक दिखाई क्योंकि मेरा सिद्धांत है-अगर कोई जिम्मेदारी लेता हूँ, तो उसे सर्वश्रेष्ठ तरीके से निभाना चाहता हूँ। वरना वह जिम्मेदारी लेता ही नहीं।

भारत में रोटरी की ताकत, सदस्यता में वृद्धि, टीआरएफ को योगदान और सेवा परियोजनाओं को देखते हुए रो ई निदेशक नागेश पूरे आत्मविश्वास से कहते हैं, मुझे नहीं लगता कि कोई हमें पीछे छोड़ सकता है। भारत दुनिया के लिए रोटरी नेता तैयार कर रहा है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि रोटरी एक लीडरशिप मैन्युफैक्चरिंग फैक्ट्री है-नेताओं को तैयार करने की फैक्ट्री।

वे इस बात से भी प्रभावित हैं कि रोटरी किस तरह लोगों को बदल देती है। वे कहते हैं, यह लोगों का व्यक्तित्व बदल देती है। कई महिलाओं ने मुझसे कहा है, 'हमारे पति को अध्यक्ष बनाने के लिए धन्यवाद। अब वे बिल्कुल बदल गए हैं।'

भारत में रोटरी के भीतर होने वाली राजनीति को लेकर नागेश बहुत चिंतित नहीं हैं। कुछ मामले, शायद 5-10 प्रतिशत, हद से आगे चले जाते हैं। लेकिन रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम और मैं उन्हें संभाल रहे हैं।

उनके अनुसार इसका सबसे अच्छा समाधान उदाहरण बनकर नेतृत्व करना है। वे कहते हैं कि भारत से आने वाली शिकायतों की संख्या कम हो रही है और उनका मानना है कि अधिक मंडल बनाकर नेतृत्व के ज्यादा अवसर पैदा करना भी मददगार होगा। इससे आपसी खींचतान और शिकायतें कम होंगी।

परिवार का साथ

नागेश की रोटरी यात्रा परिवार के सहयोग के बिना संभव नहीं होती। शुरुआत में वे और उमा साथ-साथ रोटरी का आनंद लेते थे-परिवार के साथ आउटिंग, बैठकें और अन्य कार्यक्रम। उमा खुद भी पिछले 25 वर्षों से रोटेरियन हैं। लेकिन समय के साथ नागेश की रोटरी में सक्रियता बढ़ती गई। वे कहते हैं, पहले मैं अपना 20 प्रतिशत समय रोटरी को देता था। अब यह लगभग 80 प्रतिशत हो गया है।

वे मानते हैं कि अब परिवार और दोस्तों को उनका बहुत कम समय मिल पाता है, फिर भी वे उनका पूरा साथ देते हैं।

हालाँकि वे दिन भी गिन रहे हैं। वे कहते हैं, 'इसके बाद प्लीज़ और कुछ मत करना और हमारे साथ थोड़ा समय बिताना!'

उनकी बेटी निधि चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं और फिटनेस की शौकीन हैं। उनके बेटे तेजस मैकेनिकल इंजीनियर हैं और अपनी खुद की स्टार्टअप कंपनी चलाते हैं।

है। ड्राइवर ब्रेक लगा देता है, यात्री उतरते हुए उसे "थैंक यू" कहता है।

नागेश ने भी कुछ ऐसा ही करने का फैसला किया। उन्होंने अचानक जोर से कहा, Friends! सब चुप हो गए। अब सबका ध्यान उनकी ओर था। मैंने कहा, हम भारत के बाहर हो रही हर चीज पर चर्चा कर रहे हैं। आइए, वापस भारत पर बात करते हैं। उन्होंने देखा कि चयन पैनल के सदस्य कुछ नोट कर रहे थे और उन्हें समझ आ गया कि उन्होंने एक पॉजिटिव पॉइंट हासिल कर लिया है।

वायु सेना के अपने अनुभव को याद करते हुए वे कहते हैं कि वायु सेना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ थी। इसने मुझे नेतृत्व करना, आत्मविश्वास के साथ और बिना किसी डर के अपनी बात रखना, अनुशासन, समय का प्रबंधन, ड्रेस कोड और बहुत कुछ सिखाया। मेरे व्यक्तित्व और जीवन में वायु सेना की वजह से कई सकारात्मक बदलाव आए।

रोटरी एक ऐसी संस्था है जिसका कोई मुकाबला नहीं। इसमें हर किसी के लिए कुछ न कुछ है; किसी भी जरूरत के लिए यह एक 'सिंगल विंडो सॉल्यूशन' है।

रोटरी से जुड़ाव

और फिर उनकी जिंदगी में रोटरी आई!

वायु सेना के एक मित्र जी सी जयप्रकाश ने उन्हें रोटरी क्लब से जुड़ने की सलाह दी। वे बताते हैं, मुझे रोटरी क्लब के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैंने उनसे कहा कि मैं तो पहले से ही इस क्लब और उस क्लब का सदस्य हूँ। उन्होंने कहा, 'नहीं, नहीं, यह बिल्कुल अलग है। यहाँ नेटवर्किंग, सेवा, नेतृत्व और खूब मौज-मस्ती है। परिवार भी कार्यक्रमों में मिलते हैं, पिकनिक पर जाते हैं।'

रो ई उपाध्यक्ष एवं निदेशक एम मुरुगानंदम के साथ शिकागो, अमेरिका में रोटरी के संस्थापक पॉल हैरिस के निवास पर।

वर्ष 1995 में वे रोटरी क्लब बैंगलोर हाईग्राउंड्स के चार्टर सदस्य बने और उन्हें तुरंत कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंप दी गई। उन्होंने कहा कि आप अनुशासित और रक्षा क्षेत्र की पृष्ठभूमि से आते हैं।

कुछ वर्षों बाद जब उनसे क्लब का अध्यक्ष बनने के लिए कहा गया, तो उन्होंने मना कर दिया। उस समय वर्ष 1998 में वे अपनी सिक्योरिटी सर्विसेज कंपनी स्थापित करने में व्यस्त थे। लेकिन क्लब के सदस्यों ने उन्हें कोई विकल्प ही नहीं दिया। एक बैठक के बाद वरिष्ठ रोटेरियन रमेश जोशी तेज़ बारिश में उनका पीछा करते हुए उनकी कार तक पहुँच गए। मैं कार के अंदर बैठा था और वे बाहर बारिश में पूरी तरह भीगते हुए खड़े थे और मुझसे क्लब का अध्यक्ष बनने के लिए कह रहे थे।

आखिरकार नागेश को हामी भरनी पड़ी। वे कहते हैं, मैं इसलिए हिचकिचा रहा था क्योंकि मेरा सिद्धांत है कि अगर मैं कोई जिम्मेदारी लेता हूँ, तो उसे पूरी ईमानदारी से और सर्वश्रेष्ठ तरीके से निभाना चाहता हूँ। अगर ऐसा नहीं कर सकता, तो मैं वह जिम्मेदारी नहीं लेता।

वे कहते हैं कि यही सिद्धांत आज भी उनके साथ है।

उपलब्धियों से भरा मंडल गवर्नर का कार्यकाल

वर्ष 2015-16 में नागेश रो ई मंडल 3190 के मंडल गवर्नर बने और उन्होंने अपने मंडल को टीआरएफ को सर्वाधिक योगदान देने वाला विश्व का नंबर 1 मंडल बनाने का गौरव हासिल किया। वे संतोष के साथ याद करते हैं कि उन्होंने शुरुआत में अपने मंडल को भारत का सर्वश्रेष्ठ बनाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन नतीजा उम्मीद से कहीं आगे रहा। टीआरएफ को योगदान के साथ-साथ सदस्यता, रोटरेक्ट, इंटरैक्ट और महिला सदस्यों की संख्या में भी उनका मंडल विश्व में नंबर 1 रहा।

मैं उन्हें *रोटरी न्यूज़* में प्रकाशित उस खबर की याद दिलाता हूँ, जिसमें दुबई इंस्टीट्यूट में तत्कालीन रो ई मंडल 3190 के मंडल गवर्नर ने लगभग सभी पुरस्कार अपने नाम कर लिए थे। उस खबर की मेरी दी हुई हेडलाइन थी-*Then there was Nagesh*। वे मुस्कुराते हैं और इस सफलता का बड़ा श्रेय अपनी टीम को देते हैं। लेकिन साथ ही उस सीख को भी याद करते हैं, जो उन्होंने बहुत पहले हासिल की थी। मैंने वायु सेना में जो कुछ सीखा था, उसे यहाँ लागू किया।

रोटरी ने उन्हें क्या दिया और क्या सिखाया, इस पर वे कहते हैं, रोटरी अच्छे दोस्तों का एक ऐसा नेटवर्क है, जिसमें बेहद योग्य और परिपक्व नेता हैं, जिनमें नेतृत्व के शानदार गुण हैं। रोटरी में जो कुछ हम सीख सकते हैं, वह कहीं और नहीं मिलता। आप सफल रोटेरियनों के गुणों को देख सकते हैं और उन्हें अपने जीवन में अपना सकते हैं। रोटरी

आज हर क्षेत्र में महिलाएँ अग्रणी भूमिका में हैं। फिर हम रोटरी में महिलाओं को आगे आने के लिए प्रोत्साहित क्यों नहीं कर रहे? नेतृत्व के पदों पर यह अंतर आज भी मौजूद है।

रशीदा भगत

घड़ी की दिशा में: अपने गुरु पीडीजी योगानंद के साथ; (बाएँ से) पीआरआईपी के आर रविंद्रन, वनाती, उमा, निदेशक नागेश, शर्मिष्ठा और पीआरआईडी मनोज देसाई दुबई के ज़ोन इंस्टीट्यूट में; नागेश और उमा अपने विवाह के अवसर पर; दिल्ली ज़ोन इंस्टीट्यूट में निदेशक नागेश और उमा।

मैंने अपने बैचमेट्स से कहा था... मैंने दुनिया में नंबर 1 बनने का फैसला किया है; अगर पकड़ सकते हो तो पकड़ लो! और उन्होंने मुझे यह खिताब दिला दिया।

आपको निखारती है और खुद को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करना सिखाती है।

रोटरी ने उन्हें दुनिया देखने और सेवा करने के अवसर भी दिए। रोटरी से जुड़ने के एक साल के भीतर ही वे अपने क्लब की पोलियो समिति के अध्यक्ष बन गए। वह वास्तव में मेरे लिए निर्णायक मोड़ था और मैंने तय किया कि अब रोटरी में आगे भी सक्रिय रहूँगा।

वे मानते हैं कि उनके मंडल गवर्नर के कार्यकाल के दौरान उनके व्यवसाय पर असर जरूर पड़ा,

लेकिन वे रोटरी में पूरी तरह जुटे हुए थे। मैंने अपने बैचमेट्स से कहा था... मैंने दुनिया में नंबर 1 बनने का फैसला किया है; अगर पकड़ सकते हो तो पकड़ लो! और वह खिताब उनके मंडल के पास रहा।

उन्होंने एक और चुनौती खुद को दी-52 सप्ताह में 52 नए रोटरी क्लब शुरू करने की। उनका कहना है कि रो ई के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ था और यह लक्ष्य भी हासिल किया गया।

बड़ा होना हमेशा बुरा नहीं!

सदस्यता में गुणवत्ता बनाम संख्या की बहस पर नागेश की राय थोड़ी अलग है। वे कहते हैं, जब आप किसी व्यक्ति को रोटरी से जोड़ते हैं, तो यह कहाँ लिखा है कि उसमें पहले से ही गुणवत्ता है? यहाँ मेरी राय दूसरों से अलग है... पहले लोगों को रोटरी से जोड़िए, उन्हें रोटरी के बारे में समझाइए, उन्हें जानिए और फिर नए सदस्यों को निखारिए। जो रोटरी से जुड़ाव महसूस करेगा, वह बना रहेगा; जो किसी भी कारण से रोटरी से जुड़ाव महसूस नहीं करता, उसे जाने दीजिए।

पीडीजी पराग शेठ (रो ई मंडल 3060), सतीश माधवन (रो ई मंडल 3191) और एच आर अनंत (रो ई मंडल 3192) के साथ।

रोटरेक्ट को लेकर भी उनके लक्ष्य काफी महत्वाकांक्षी हैं। भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है और उनका मानना है कि ऐसा अवसर शायद फिर कभी नहीं मिलेगा। जब रो ई बोर्ड ने 2030 तक 1.25 लाख रोटरेक्टरों का लक्ष्य रखा, तो मैंने कहा कि भारत अकेले यह लक्ष्य हासिल करेगा।

भारत में रोटरेक्टरों की संख्या पिछले वर्ष के 24,000 से बढ़कर इस वर्ष करीब 50,000 हो गई है। अब हमारा लक्ष्य इसे दोगुना कर 1 लाख करना है और मुरुगानंदम और मेरे निदेशक पद से हटने से पहले इसे 1.25 लाख तक पहुँचाना है। यानी भारत 2027 में ही 2030 का वैश्विक लक्ष्य हासिल कर लेगा।

अध्यक्ष यिंका ने भी इस लक्ष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई है। नागेश बताते हैं, उन्होंने कहा है कि जैसे ही रोटरेक्टरों की संख्या 1 लाख तक पहुँचेगी, मैं दुनिया में कहीं भी रहूँ, 48 घंटे के भीतर भारत पहुँचकर इस उपलब्धि का जश्न मनाऊँगा। यह उनकी प्रतिबद्धता है।

रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम की प्रोफ़ाइल अक्टूबर 2026 के अंक में।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

नागेश का मानना है कि रोटरी में महिलाओं की संख्या कहीं अधिक होनी चाहिए। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं, भारत में रोटरी में महिलाओं की मौजूदा सदस्यता से मैं बिल्कुल संतुष्ट नहीं हूँ। ज़रा बड़ा परिदृश्य देखिए-आज लगभग हर क्षेत्र में महिलाएँ अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। फिर हमारी संस्था में उन्हें आगे आने के लिए पर्याप्त अवसर और प्रोत्साहन क्यों नहीं मिल रहा? नेतृत्व के स्तर पर यह अंतर आज भी बना हुआ है।

हालाँकि उन्हें बदलाव की शुरुआत दिखाई दे रही है। अब हम पहले से अधिक महिला क्लब अध्यक्ष और मंडल गवर्नर देख रहे हैं। लेकिन हमें महिलाओं की सदस्यता को मौजूदा 18 प्रतिशत से बढ़ाकर कम-से-कम 33 प्रतिशत तक ले जाना होगा।

वे इनर व्हील को रोटरी परिवार में अधिक महिलाओं को जोड़ने का प्रभावी माध्यम मानते हैं। यह अपेक्षाकृत आसान, कम खर्चीला और कम समय लेने वाला मंच है। पहले अधिक से अधिक महिलाएँ इनर व्हील से जुड़ें, फिर उनमें से 10-20 प्रतिशत रोटरी में आएँ। वे ब्राज़ील का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि वहाँ यह मॉडल सफल रहा है और भारत में भी इसे अपनाया जा सकता है।

अपने अनुभव के आधार पर नागेश कहते हैं, महिलाएँ रोटरी में कई विशेष गुण लेकर आती हैं। वे अधिक केंद्रित, उत्पादक, प्रभावी, ईमानदार, अनुशासित और प्रतिबद्ध होती हैं। जिन क्लबों में महिलाओं की संख्या अधिक है, वे बेहतर काम कर रहे हैं और तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं।

वे बताते हैं कि ऐसे क्लबों की पहचान की जा रही है, जहाँ अभी तक कोई महिला सदस्य नहीं है, और उन्हें कम-से-कम 10 प्रतिशत महिला सदस्य जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। एक और संभावना, उनके अनुसार, यह है कि जीवनसाथियों और परिवार की महिलाओं को पहले इनर व्हील से जोड़ा जाए और आगे चलकर उन्हें इनर व्हील और रोटरी-दोनों की सदस्यता का अवसर दिया जाए।

उनका संदेश सीधा है: रोटरी आधी आबादी को किनारे छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकती। ■

ADVT.

PROUD BNI MEMBER

Pankaj Shah

COL Representative District 3131 2026-28
RI Convention Promotion Chair : Taipei, 2025-26
DRFC RID 3131 RY 2025-26
ARRFC ZONE 7 RY 2023-25
District Membership Chair 2022-25
District Learning Facilitator 2024-25
District Governor 2021-22
Charter Member : Rotary Club of Pune Sarasbaug

+91 98220 57299
rotary.pankajshah@gmail.com

Personal Secretary : 81490 57299 I Email : secretary.pankajshah@gmail.com

GDM RRFM

Head Office
Tel : +91 20 24404900 (30 lines)
Call Center : 7888039303.
admin@ramtilak.com

Shree Ganesh Dal & Besan Mills - Shirwal
Ramtilak Roller Flour Mills (p) Ltd. - Chakan
Mandar Health And Hygiene Pvt. Ltd. - Phaltan
M/s. Arun Narayandas Shah - Lonand
Shree Ganesh Shelters - Pune
M/s Deepchand Venichand Shah, Pune.

www.ramtilak.com | www.ganeshdal.com
· ISO 9000:2015 · ISO 22000:2015

SCAN for the Location

Corporate Office:
Shop No. 243,
Chatrapati Shivaji Market Yard,
Gultekadi, Pune,
Maharashtra-411037

CRESCO HEALTHCARE

Multibrand Pathology
www.crescohealthcare.com

PATHOLOGY HOME COLLECTION
MEDICAL STORE - CHEMIST AND DRUGGIST

To avail the services
89564 66801/2/3/4/5

Download Cresco app

PATHOLOGY PARTNERS

Grant Medical Foundation Ruby Hall Clinic | DMH | Bharati Vidyapeeth's Bharati Hospital and Research Centre Pune | Sahyadri Speciality Labs | Trutest Laboratories Test ka Expert! | Metropolis The Pathology Specialist | Shashwat Hospital

अपने बदलाव की कहानियाँ साझा करें: बाबालोला

रशीदा भगत

रोई अध्यक्ष यिंका बाबालोला ने कहा, मैंने रोटेरियनों को यह कहते सुना है कि नए सदस्यों को जोड़ने का दबाव हमारी सदस्यता की ताकत को कम कर रहा है और हम गुणवत्ता के बजाय संख्या पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। लेकिन रोटरी में सदस्यता आमंत्रण के आधार पर होती है। आप में से कौन ऐसा व्यक्ति है जिसे हम 'कम गुणवत्ता वाला' कह सकते हैं? यहीं हैदराबाद में ऐसे कई योग्य, सक्षम, कुशल और संसाधन-संपन्न लोग हैं, जिनमें रोटेरियन बनने की हर योग्यता है। बस उनके पास अभी प्रवेश का अवसर नहीं है। अगर आप उन्हें रोटरी में नहीं लाते, तो 15 साल बाद यह कमरा खाली होगा और जब कोई रो ई अध्यक्ष अपना कार्यक्रम बनाएगा, तो उसमें हैदराबाद का नाम भी नहीं होगा।

रो ई मंडल 3150 के सदस्यता सेमिनार 'क्रिएटिंग लास्टिंग इम्पैक्ट' में वे बोल रहे थे। इसका आयोजन रोटरी क्लब हैदराबाद ईस्ट ने किया था और रोटरी क्लब हैदराबाद सेंटेनियल तथा रोटरी क्लब आश्रय वारंगल सह-आयोजक थे।

इसके बाद उन्होंने कमरे में मौजूद लोगों से हाथ उठाने को कहा-कितने लोग मानते हैं कि रोटरी की वजह से वे बेहतर इंसान बने हैं, रोटरी ने उन्हें पूरी तरह बदला है और उनके जीवन, व्यवसाय या परिवार पर सकारात्मक असर डाला है। अधिकांश हाथ ऊपर उठ गए। लेकिन कुछ हाथ अब भी नीचे थे। बाबालोला ने कहा, यह भी ठीक है। हो सकता है कि रोटरी ने अभी तक आपको पूरी तरह बदला न हो और हमें इस दिशा में थोड़ा और काम करना बाकी हो।

सदस्यता वृद्धि पर उन्होंने बताया कि रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम और रो ई निदेशक के पी नागेश ने उन्हें बताया था कि भारत ने 10,000 नए सदस्यों की शुद्ध वृद्धि का लक्ष्य रखा है। शुरुआत में वे इससे प्रभावित हुए, क्योंकि यह वैश्विक लक्ष्य का करीब 40 प्रतिशत था। लेकिन भारत के 10 शहरों का दौरा करने के बाद अब मुझे लगता है कि 10,000 का लक्ष्य पर्याप्त नहीं है। हर नया सदस्य रोटरी के लिए एक संपत्ति, एक नया संसाधन और भविष्य का एक नेता है। जो संस्था लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही है, उसे नए सदस्य जोड़ने में मुश्किल क्यों होनी चाहिए?

उनके अनुसार, इसका मतलब है कि कहीं कुछ कमी है, कहीं न कहीं जुड़ाव टूट रहा है। और वह कमी है-हम रोटेरियन अपनी बदलाव की कहानियाँ साझा नहीं करते।

रोटरी का विज़न स्टेटमेंट भी यही कहता है कि हम मिलकर ऐसी दुनिया देखते हैं, जहाँ लोग एकजुट होकर दुनिया, अपने समुदायों और स्वयं में स्थायी बदलाव लाने के लिए कदम उठाते हैं।

पोलियो उन्मूलन रोटरी द्वारा किए गए स्थायी बदलाव का एक बड़ा उदाहरण है। इसी तरह रोटरी पीस सेंटर्स, जिनमें पुणे के सिम्बायोसिस विश्वविद्यालय और

(बाएँ से) रो ई मंडल 3150 के पीडीजी रमेश वंगाला, मंडल गवर्नर उदय एस पिलानी, रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम, रो ई निदेशक के पी नागेश, रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला, उनकी पत्नी प्रेसी, टीआरएफ ट्रस्टी ए एस वेंकटेश और पीडीजी हनमंत रेड्डी।

कंपाला के मेकेरेरे विश्वविद्यालय के केंद्र भी शामिल हैं, शांति के लिए स्थायी प्रभाव पैदा कर रहे हैं।

इन पीस सेंटर्स में हर फेलो प्रतिभागी के लिए समुदाय में एक ऐसा सामाजिक बदलाव का प्रोजेक्ट करना अनिवार्य है, जो शांति को बढ़ावा दे या मजबूत करे। यानी इन केंद्रों से दो वर्षों में 80 सामाजिक बदलाव की पहलें होंगी, जो आपके कारण स्थायी बदलाव लाएँगी।

रोटरी के फोकस क्षेत्रों में रोटेरियन लगातार बदलाव ला रहे हैं। लेकिन जब बाबालोला ने पूछा कि हम स्वयं में स्थायी बदलाव कैसे लाएँ?, तो पूरा कमरा शांत हो गया। क्योंकि जब भी हम रोटरी की बात करते हैं, हम इस पर बात करते हैं कि रोटरी के माध्यम से हम दूसरों के जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं। हम यह नहीं सोचते कि रोटरी हमें कैसे प्रभावित कर रही है। इसलिए इस बारे में भी सोचिए। रो ई अध्यक्ष ने कहा कि हर व्यक्ति अपने जीवन में स्थायी बदलाव चाहता है-चाहे वह 30 वर्ष का वकील हो, 50 वर्ष का इंजीनियर या 70 वर्ष का सेवानिवृत्त कारोबारी।

जब ऐसे लोग रोटरी में आएँ, तो आप रोटरी का वादा पूरा करें। उनका स्वागत करें, उन्हें महसूस कराएँ कि वे यहाँ के हैं और उनकी सोच मायने रखती है।

ऐसे सदस्यों को विविधता और ईमानदारी के साथ-साथ अपनी पेशेवर क्षमता और प्रतिभा का उपयोग करके समुदाय तथा अपने नेतृत्व कौशल को बेहतर बनाने का अवसर मिलेगा। उन्हें दोस्ती, मेल-जोल और आनंद से भरे माहौल का भी अनुभव मिलेगा।

बाबालोला ने रोटेरियनों से अपनी-अपनी खास बदलाव की कहानियाँ साझा करने का आग्रह करते हुए 2004 का अपना एक अनुभव सुनाया। उस समय वे शेल में काम कर रहे थे और कैलिफोर्निया गए थे। अचानक उनके दाँत में तेज़ दर्द होने लगा। उन्होंने अपने एक रोटेरियन मित्र को फोन कर बताया कि उन्हें डेंटिस्ट की जरूरत है।

वह अपनी पत्नी के साथ मेरे होटल आया। उसकी पत्नी ने बताया कि डेंटिस्ट से अपॉइंटमेंट मिलने में भी 5-6 दिन लग सकते हैं। लेकिन पति ने अपने एक रोटेरियन मित्र को फोन किया, जो डेंटिस्ट था। उसने कहा कि एक घंटे में आ जाइए।

डेंटिस्ट ने उनका इलाज शुरू किया तो बाबालोला का दिल तेजी से धड़क रहा था। अमेरिका में मेरे पास कोई इंश्योरेंस नहीं था और मैं सोच रहा था कि पता नहीं कितने हजार डॉलर का खर्च आएगा। लेकिन दर्द बहुत था और मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।

इलाज पूरा हुआ और उन्हें राहत मिली। लेकिन जैसे-जैसे दाँत का दर्द कम हुआ, डॉलर खर्च होने का डर बढ़ता गया।

जब बाबालोला ने डेंटिस्ट से फीस के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि उस अमेरिकी रोटेरियन मित्र ने उसे अपने देश में बाबालोला द्वारा रोटरी के लिए किए जा रहे काम के बारे में बताया था। आपका इलाज मुफ्त है, डेंटिस्ट ने कहा।

बाबालोला कहते हैं कि यही रोटरी का असली मूल्य है।

उन्होंने एक और अनुभव साझा किया। जब वे 27 वर्ष के रोटरेक्टर थे और रोटरी से जुड़ना चाहते थे, तो एक रोटरी क्लब की बैठक में पहुँच गए। क्लब अध्यक्ष ने उनकी ओर देखकर पूछा, इस बार क्या चाहिए?

जब उन्होंने कहा कि वे रोटरी से जुड़ने आए हैं, तो अध्यक्ष ने हैरानी से कहा, इतनी हिम्मत! इस युवक को क्या हो गया है? क्या इसे नहीं पता कि रोटरी की सदस्यता केवल आमंत्रण से होती है? बाबालोला कहते हैं, मैं वहाँ से लौट सकता था और लायंस क्लब या किसी दूसरी संस्था से जुड़ सकता था। लेकिन न जाने कहाँ से मुझे जवाब देने का साहस मिला। मैंने कहा, 'मुझे नहीं पता था कि किसी बच्चे को अपने माता-पिता के घर आने के लिए भी निमंत्रण की जरूरत होती है।'

उसी क्षण एक रोटेरियन खड़े हुए और बोले, यिंका, मैं इस क्लब में तुम्हारा स्पॉन्सर बनूँगा। और इस तरह बाबालोला रोटेरियन बन गए।

रोटरेक्टर से लेकर रो ई अध्यक्ष बनने तक की अपनी यात्रा के बारे में वे कहते हैं, मेरे लिए यह कोई पुरस्कार नहीं है। यह रोटरी को वापस लौटाने का समय है-उन वर्षों में रोटरी ने मुझमें जो निवेश किया, उसे वापस देने का समय।

यहीं हैदराबाद में ऐसे कई योग्य, सक्षम, कुशल और संसाधन-संपन्न लोग हैं, जिनमें रोटेरियन बनने की हर योग्यता है। बस उनके पास अभी प्रवेश का अवसर नहीं है।

यिंका बाबालोला
रो ई अध्यक्ष

फिर उन्होंने रोटेरियनों से सवाल किया, मेरे साथी रोटेरियनों, आप किसका मार्गदर्शन कर रहे हैं? अपने रोटरेक्टरों के लिए आप क्या कर रहे हैं, जो इस संस्था के भविष्य के नेता हैं?

इसके बाद उन्होंने नाइजीरिया के पुलिस महानिरीक्षक की कही बात का उल्लेख किया। उन्होंने एक रोटरी सम्मेलन में कहा था कि हर वह युवा, जिसका किसी रोटेरियन ने मार्गदर्शन किया है, भविष्य में एक ऐसे व्यक्ति के कम होने के बराबर है, जिसे पुलिस को गिरफ्तार करना पड़ेगा।

उन्होंने रो ई मंडल 3150 को भी बधाई दी। मंडल गवर्नर उदय पिलानी के अनुसार, यह विश्व का पहला मंडल बना जिसने 100 प्रतिशत EREY *(Every Rotarian Every Year)* योगदान हासिल किया। मंडल के 4,172 रोटेरियनों ने मिलकर 1,53,705 अमेरिकी डॉलर का योगदान टीआरएफ को दिया।

भारत में रोटरेक्टरों की संख्या 50,000 से बढ़ाकर मई 2027 से पहले 1 लाख करने के दो रो ई निदेशकों के लक्ष्य पर बाबालोला ने कहा, जब यह लक्ष्य हासिल हो जाए, तो मुझे जरूर आमंत्रित करना। भले ही मैं अर्जेंटीना जा रहा होऊँ, मैं भारत में कहीं न कहीं आपसे मिलने जरूर आऊँगा। यह मेरा वादा है!

रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम ने कहा कि टीआरएफ के माध्यम से रोटेरियन जिस तरह की सामुदायिक सेवा कर पा रहे हैं, वह अद्भुत है। इसके तहत रोटरी के सभी प्रमुख फोकस क्षेत्रों में काम हो रहा है-शिक्षा, रोगों की रोकथाम, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करना, माताओं और

बच्चों की सुरक्षा, स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना और शांति को बढ़ावा देना।

उन्होंने बताया कि उन्होंने 15 वर्ष की उम्र से ही टीआरएफ में योगदान देना शुरू कर दिया था। आज तक, सीधे या परोक्ष रूप से, एक व्यक्ति के रूप में और अपनी कंपनी की सीएसआर पहलों के माध्यम से, मैंने रोटरी की विभिन्न परियोजनाओं में कम-से-कम ₹20 करोड़ और अधिकतम ₹40 करोड़ तक का योगदान या खर्च किया है।

उन्होंने बताया कि उनका संगठन एक्सेल ग्रुप ₹120 करोड़ की लागत से एक कैंसर केयर अस्पताल बनाने की प्रक्रिया में है। यहाँ 80:20 के अनुपात में सेवाएँ दी जाएँगी, जिसमें अधिकांश मरीज गरीब और वंचित वर्गों से होंगे। उन्होंने इस अस्पताल के निर्माण का श्रेय टीआरएफ को भी दिया।

मुरुगानंदम ने कहा कि भारत में रोटरी वास्तव में बेहद सक्रिय और जीवंत है। सदस्यता में हम नंबर 1 हैं और टीआरएफ को योगदान में नंबर 2। टीआरएफ को योगदान के मामले में भी रो ई मंडल 3141 विश्व में नंबर 1 बन चुका है, जबकि रो ई मंडल 3203, जिसमें टियर-2 शहर तिरुपुर भी शामिल है, विश्व में नंबर 2 रहा है। पिछले पाँच वर्षों में टीआरएफ को हमारा योगदान 20 मिलियन डॉलर से बढ़कर 28 मिलियन डॉलर, 35 मिलियन डॉलर, 38 मिलियन डॉलर और पिछले वर्ष 45 मिलियन डॉलर हो गया है।

उन्होंने कहा कि जिस गति से भारत के ज़ोन आगे बढ़ रहे हैं, वे अंततः 100 मिलियन डॉलर के योगदान तक पहुँच सकते हैं।

जब भी हम रोटरी की बात करते हैं, हम इस पर चर्चा करते हैं कि हम दूसरों के जीवन में क्या बदलाव ला रहे हैं। लेकिन हम यह नहीं सोचते कि रोटरी हमारे जीवन में क्या बदलाव ला रही है। इसलिए इस बारे में भी सोचिए।

मुरुगानंदम ने बताया कि 16 वर्ष की उम्र में रोटरेक्टर बनने के बाद से ही वे भारत के राष्ट्रीय टीकाकरण दिवसों में भाग लेते रहे हैं, जो देश के बच्चों के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं।

उन्होंने रोटेरियनों से टीआरएफ में योगदान करने का आग्रह करते हुए कहा कि उनका पैसा केवल पोलियो को पूरी तरह खत्म करने में ही नहीं लग रहा, बल्कि दुनिया भर में बहुत से अच्छे काम भी कर रहा है। टीआरएफ में धन के उपयोग को लेकर पूरी जवाबदेही और कड़ा प्रबंधन है, जिससे एक-एक डॉलर का हिसाब रखा जाता है।

उन्होंने कहा कि आज से एक साल, पाँच साल या दस साल बाद रोटेरियन तब गर्व महसूस कर सकेंगे, जब कोई बच्चा बिना किसी बाधा के चल और दौड़ सके, किसी लड़की को शिक्षा मिल सके, किसी गाँव को स्वच्छ पेयजल मिल सके, कोई स्थानीय समुदाय आत्मनिर्भर बन सके और पर्यावरण की बेहतर देखभाल हो सके।

रो ई निदेशक के. पी. नागेश ने कहा कि भारत में रोटेरियन वर्षों से अपने पैसे से सेवा परियोजनाएँ करते आए हैं। वे इसे आईएसआर-व्यक्तिगत सामाजिक जिम्मेदारी कहते हैं। लेकिन अब जब सीएसआर भी इस क्षेत्र में सक्रिय है, तो बड़ी धनराशि उपलब्ध है, जिससे बड़े और अधिक टिकाऊ सेवा प्रोजेक्ट किए जा सकते हैं।

उन्होंने बताया कि फिलहाल हर साल करीब ₹48,000 करोड़ सीएसआर के लिए उपलब्ध हैं। लेकिन अगर सरकार कल इसे 2 प्रतिशत से बढ़ाकर 3 प्रतिशत कर दे, तो जरा सोचिए कितनी बड़ी राशि उपलब्ध होगी। और बड़े सेवा प्रोजेक्ट करने के लिए रोटेरियन पूरी तरह सक्षम हैं। कभी एलआईसी ने नारा दिया था- 'हम रोटेरियन भी अपने समुदाय और उसकी जरूरतों को दूसरों से बेहतर जानते हैं।'

(बाएँ से) टीआरएफ ट्रस्टी वेंकटेश, रो ई निदेशक नागेश, रो ई अध्यक्ष बाबालोला, प्रेसी और रो ई उपाध्यक्ष मुरुगानंदम।

रो ई अध्यक्ष बाबालोला, रोटरी क्लब कोयंबटूर आकृति की सदस्य लीमा रोज़ मार्टिन का अभिवादन करते हुए; (बाएँ से) टीआरएफ ट्रस्टी वेंकटेश, रो ई उपाध्यक्ष मुरुगानंदम, रो ई निदेशक नागेश, रो ई मंडल 3206 के मंडल गवर्नर आर एस मारुति और रो ई मंडल 3150 के मंडल गवर्नर पिलानी।

नागेश ने बताया कि रोटेरियन अब अधिक से अधिक सीएसआर फंड हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। कोविड ने भी लोगों को वंचित और जरूरतमंद वर्गों के लिए अधिक योगदान करने की सीख दी है।

वे इस बात से भी खुश हैं कि भारत में टीआरएफ को दिए जाने वाले योगदान में काफी सुधार हुआ है और आर्च क्लम्प्फ सोसायटी (AKS) के सदस्यों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। इस वर्ष का लक्ष्य 75 AKS सदस्य बनाने का है। वर्ष के अंत में ट्रस्टी चेयर के भारत दौरे के दौरान मुंबई में एक बड़े समारोह में इस उपलब्धि का जश्न मनाया जाएगा।

उन्होंने यह भी घोषणा की कि इस वर्ष टीआरएफ को भारत से 60 मिलियन अमेरिकी डॉलर का योगदान जुटाने का लक्ष्य रखा गया है। टीआरएफ ट्रस्टी ए एस वेंकटेश ने कहा कि उनके सामने बैठे रोटेरियनों को यह बताने की जरूरत नहीं कि हमें फाउंडेशन में योगदान क्यों करना चाहिए। यह तो उन लोगों को समझाने जैसा होगा जो पहले से ही इस बात को जानते हैं। आप सभी जानते हैं कि हमारा फाउंडेशन क्या है और वह क्या कर सकता है।

लेकिन वे एक बात पर विशेष जोर देना चाहते थे-समुदायों में जरूरतमंद लोगों के जीवन को बेहतर बनाने और सेवा के काम को आगे बढ़ाने में रोटेरियन स्वयंसेवकों के अमूल्य समय और श्रम की बड़ी भूमिका है।

यह योगदान बेहद महत्वपूर्ण है। जैसा कि मंडल गवर्नर उदय पिलानी ने कहा, इन सेवाओं को खरीदा नहीं जा सकता, क्योंकि उनकी कीमत चुकाना संभव ही नहीं है।

टीआरएफ की हर परियोजना में रोटेरियनों के अनमोल मानव-घंटे शामिल होते हैं। इनका मूल्य डॉलर में नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि अलग-अलग क्षेत्रों और पेशों से जुड़े रोटेरियन अपनी असाधारण प्रतिभा और तकनीकी विशेषज्ञता इन परियोजनाओं में लगाते हैं।

वेंकटेश ने कहा कि सीएसआर फंड के साथ रोटेरियन पूरे समुदायों को बदल सकते हैं, क्योंकि जुटाई गई राशि का अधिकतम हिस्सा सीधे सेवा परियोजना में जाता है।

उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि उन्होंने रेड क्रॉस की बैलेंस शीट देखी और पाया कि किसी परियोजना के लिए दी गई राशि का करीब 34 प्रतिशत प्रशासनिक काम में खर्च होता है। वहीं रोटरी में यह आंकड़ा एकल अंक में है। यानी लाभार्थियों तक वास्तव में पहुँचने वाली राशि बहुत अधिक है।

एक और बड़ा अंतर यह है कि अधिकांश अन्य गैर-सरकारी संगठन अपने सामाजिक कार्यों के लिए वेतनभोगी कर्मचारियों पर निर्भर रहते हैं। यहाँ रोटेरियन यह काम इसलिए करते हैं क्योंकि वे स्वयं सेवा करने में विश्वास रखते हैं। यही सबसे बड़ा फर्क पैदा करता है।

रो ई मंडल 3150 के मंडल गवर्नर उदय पिलानी ने बताया कि वे तीसरी पीढ़ी के रोटेरियन हैं और उनकी बेटी चौथी पीढ़ी की रोटेरियन हैं। वे रोटरी से इसलिए जुड़े हैं क्योंकि रोटरी ने हमारे जीवन में अपार मूल्य जोड़ा है और हमें जिम्मेदार नागरिक तथा बेहतर इंसान बनने में मदद की है।

वे कहते हैं, मैं हमेशा कहता हूँ कि आपके बैंक खाते में कितने शून्य हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सबसे ज्यादा मायने रखता है कि आप कितने लोगों के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि रो ई मंडल 3150 चार प्रमुख प्रभावशाली परियोजनाओं पर काम कर रहा है। इनमें से एक के तहत तेलंगाना सरकार के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) किया गया है, जिसके माध्यम से 2,000 एकड़ से अधिक खराब हो चुकी शहरी भूमि को पुनर्जीवित किया जाएगा।

दूसरी परियोजना के तहत हैदराबाद के 14 सरकारी अस्पतालों में नवजात शिशु देखभाल सुविधाओं को बेहतर बनाया जा रहा है, ताकि किसी भी अस्पताल में जाने वाली गर्भवती महिला को जरूरी सुविधाओं की कोई कमी न मिले।

एक अन्य परियोजना के तहत तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 8 से 10 तक पढ़ने वाली छात्राओं को 8,000 साइकिलें दी जा रही हैं। इसका उद्देश्य यह है कि वे आत्मविश्वास के साथ स्कूल जा सकें, नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित हों और अपने लिए बेहतर भविष्य बना सकें।

पिलानी ने बताया कि मंडल के रोटेरियन उद्योग जगत और सरकार, दोनों के साथ साझेदारी के अवसर तलाश रहे हैं, ताकि समुदाय तक बेहतर सेवा पहुँचाई जा सके।

रो ई मंडल 3206 के रोटरी क्लब कोयंबटूर आकृति की सदस्य और AKS सदस्य लीमा मार्टिन ने ₹3 करोड़ का योगदान देने की घोषणा की। वहीं रोटरी क्लब जुबली हिल्स के सदस्यों दंडोलु पी. रेड्डी और झांसी प्रेमानंद ने टीआरएफ को 25,000-25,000 अमेरिकी डॉलर का योगदान दिया।

चित्र: रशीदा भगत

अगले अंक में: बाबालोला की टोपी ने जुटाए 31,000 डॉलर!

रो ई मंडल 3240 के रोटरेक्टरों की भूटान यात्रा बनी यादगार

रशीदा भगत

समूह में जुड़ाव और दोस्ती को मजबूत करने की एक अनोखी पहल के तहत, रो ई मंडल 3240 के 20 से अधिक रोटरेक्ट क्लबों के करीब 80 रोटरेक्टरों ने हाल ही में असम से भूटान के गेलेफू क्षेत्र तक एक दिन की यात्रा की। यह यात्रा भारतीय पर्यटकों के लिए लागू विशेष यात्रा नियमों का लाभ उठाते हुए आयोजित की गई थी।

रो ई मंडल 3240 के तत्कालीन पूर्व मंडल रोटरेक्ट प्रतिनिधि (IPDRR) कुमार शिवम दास ने बोंगाईगांव, असम से इस यात्रा का आयोजन किया। वे बताते हैं कि बोंगाईगांव से गेलेफू तक की करीब 45 मिनट की ड्राइव सभी रोटरेक्टरों के लिए एक यादगार अनुभव बन गई।

भारतीय पर्यटकों के लिए भूटान सरकार गेलेफू टाउनशिप के आसपास 10 किलोमीटर के दायरे में थोड़े समय के लिए यात्रा की अनुमति देती है। पहाड़ों, झरनों, हरियाली और गर्म पानी के झरनों से घिरा यह इलाका बेहद खूबसूरत है। असम की सीमा से लगे इस क्षेत्र में भारतीय यात्री करीब 8-10 किलोमीटर के दायरे में 24 घंटे तक बिना परमिट रह सकते हैं। इसके लिए इमिग्रेशन पॉइंट पर केवल पहचान-पत्र के साथ पंजीकरण कराना होता है।

दास इसे रो ई मंडल 3240 के रोटरेक्टरों की पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा बताते हैं। यह यात्रा रो ई मंडल 3240 की रोटरेक्ट टीम (2025-26) ने आयोजित की थी, जिसमें असम के रोटरेक्ट क्लब बोंगाईगांव ने जमीनी स्तर पर महत्वपूर्ण तैयारियाँ कीं।

यह यात्रा भूटान में आयोजित रो ई मंडल 3240 के रोटरेक्टरों के एक पुरस्कार समारोह के अवसर पर संभव हुई। उस समारोह में करीब 130 लोगों ने भाग लिया था। मंडल में लगभग 850 रोटरेक्टर हैं।

दास कहते हैं, यह एक ऐसी अविस्मरणीय यात्रा बन गई, जिसमें पहाड़, संस्कृति, आध्यात्मिकता और साथियों की दोस्ती-सब कुछ था। गेलेफू का प्राकृतिक वातावरण इतना शांत और खूबसूरत है कि हम चाहते हैं कि दूसरे रोटरेक्टर भी ऐसी यात्रा पर जाकर इस जगह का अनुभव करें।

इस यात्रा की लागत भी लगभग न के बराबर थी-सिर्फ ₹749 का पंजीकरण शुल्क। लेकिन अनुभव बेहद खास रहा।

दास बताते हैं, यज्ञेश्वर शिव मंदिर की दिव्य शांति, जहाँ शांत पहाड़ियों के बीच प्रार्थनाओं की गूंज सुनाई देती थी, से लेकर शेरजोंग गेओग की मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता तक, गेलेफू की हर जगह अपनी एक कहानी कहती है। खूबसूरत पासांग ज़ाम को पार करना ऐसा लगा जैसे यादों के पुल से गुजर रहे हों-जहाँ हँसी, बातचीत और साथ बिताए पलों ने दिलों को जोड़ दिया।

गेलेफू स्थित यज्ञेश्वर महादेव शिवालय मंदिर में रोटरेक्टर।

शेरजोंग गेवोग ब्रिज पर रोटरेक्टर।

बाएँ से दाएँ: सेमंती सिंघा, आईपीडीआरआर कुमार शिवम दास, दिधिति सिंघा, अनिकपाती रॉय, देबार्शी पॉल और तुलतुल चक्रवर्ती, गेलेफू के ताली मठ के अंदर।

इस यात्रा के सबसे यादगार पलों के बारे में दास, जो असम सरकार के खाद्य सुरक्षा विभाग में कार्यरत हैं, कहते हैं कि यह सिर्फ एक यात्रा नहीं थी, बल्कि ऐसे पलों का संग्रह थी, जो हमेशा हमारे दिल के करीब रहेंगे।

80 प्रतिभागियों में से 60 से अधिक के लिए यह पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा थी। वे कहते हैं, पूरा अनुभव मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। गेलेफू मार्केट की रंगीन गलियों ने हमें भूटानी संस्कृति की गर्मजोशी, स्थानीय लोगों की मुस्कान और रंग-बिरंगी परंपराओं से रूबरू कराया। यह यात्रा सिर्फ घूमने-फिरने तक सीमित नहीं रही, बल्कि दोस्ती, एकता और उस फेलोशिप की भावना का उत्सव बन गई, जिसके लिए रोटरेक्ट जाना जाता है।

इस समूह में साउथ एशियन एमडीआईओ *(Multidistrict Information Organisation)* के एक प्रेसिडेंट नॉमिनी और जनरल सेक्रेटरी भी शामिल थे। एमडीआईओ दो या अधिक रो ई मंडलों से मिलकर बने क्षेत्रीय समूह को कहा जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य क्लबों के बीच समाचार साझा करना और संवाद को मजबूत करना है।

यात्रा का खर्च भी बेहद मामूली था-करीब ₹750, जिसमें केवल परिवहन और भोजन शामिल था। यात्रा की शुरुआत में नदी किनारे किया गया नाश्ता प्रतिभागियों के लिए हमेशा याद रहने वाला अनुभव बन गया। दोपहर का भोजन भी वहीं करने की योजना थी, लेकिन बारिश ने योजना बदल दी और समूह ने एक रेस्तरां में रुककर भोजन किया।

विदा हो चुके DRR, जो अब रोटेरियन भी बन चुके हैं और रोटरी क्लब नॉर्थईस्ट कैटेलिस्ट से जुड़े हैं, इस यात्रा से बेहद उत्साहित हैं। उनका कहना है कि 20 से अधिक रोटरेक्ट क्लबों के अलग-अलग सदस्यों को एक-दूसरे से जुड़ने, दोस्ती मजबूत करने, सार्थक बातचीत करने और खूबसूरत यादें बनाने का यह शानदार अवसर मिला।

जब हमारे देश के इतने करीब इतनी खूबसूरत जगह है, तो हमें वहाँ जरूर जाना चाहिए। मैं इस यात्रा को लेकर इसलिए भी बहुत उत्साहित था क्योंकि हमारे मंडल के इतने करीब होने के बावजूद इस क्षेत्र को हमारे रोटरेक्टरों ने वर्षों से एक्सप्लोर नहीं किया था। आखिर भूटान इतना खूबसूरत देश है।

इस यात्रा के पक्ष में केवल इसकी नजदीकी ही नहीं, बल्कि कम खर्च और परमिट या वीज़ा की जरूरत न होना भी बड़े कारण थे। अक्सर विदेश यात्रा में परमिट और वीज़ा की प्रक्रिया परेशानी का कारण बनती है।

जब वे बार-बार इस यात्रा को रोटरेक्टरों के लिए सार्थक बातचीत और नए संबंध बनाने का सुनहरा अवसर बताते हैं, तो मैंने पूछा कि क्या युवा वास्तव में इतनी गंभीर बातचीत में रुचि रखते हैं?

बिल्कुल। उदाहरण के लिए, आमतौर पर लोग मानते हैं कि आज की युवा पीढ़ी मंदिर जाना पसंद नहीं करती। लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पूरे समूह ने यज्ञेश्वर शिव मंदिर में काफी समय बिताया। आखिर उम्र चाहे कितनी भी हो, दिन के अंत में हम सभी को शांति की जरूरत होती है।

अपने DRR के कार्यकाल से मिली सीख के बारे में 28 वर्षीय दास दार्शनिक अंदाज़ में कहते हैं, मेरा मुख्य उद्देश्य था कि DRR के रूप में 365 दिनों की इस यात्रा में मैं सिर्फ दौड़ता हुआ फिनिशिंग लाइन तक न पहुँच जाऊँ। मैं चाहता था कि अपने सभी रोटरेक्टरों, अपने बैचमेट्स, वरिष्ठों और जूनियर्स-सबके साथ चलूँ। मुझे लगा कि हमें साथ चलना चाहिए, लोगों से मिलना चाहिए और अंत में सबको एक साथ फिनिशिंग लाइन पर पहुँचना चाहिए। क्योंकि कोई भी व्यक्ति अकेले बहुत कुछ हासिल नहीं कर सकता। उसे सभी को साथ लेकर चलना पड़ता है।

यह पूछने पर कि उनके मंडल के कितने रोटरेक्टर आगे चलकर रोटरी से जुड़ेंगे, दास बताते हैं कि भूटान यात्रा में शामिल 80 लोगों में से 25 पहले ही रोटरी से जुड़ चुके हैं।

वे बताते हैं कि उनके मंडल में 56 रोटरेक्ट क्लबहैं। इनमें अधिकांश कम्युनिटी क्लब हैं और केवल 5-6 विश्वविद्यालय आधारित क्लब हैं। अपने DRR कार्यकाल के दौरान उन्होंने गर्व के साथ बताया कि 17 नए रोटरेक्ट क्लब जोड़े गए।

यह पूछने पर कि रोटरेक्टर किस तरह की बातचीत करते हैं और क्या वे अपने भविष्य को लेकर गंभीरता से चर्चा करते हैं, दास कहते हैं, बिल्कुल, वे इन मुद्दों को लेकर बहुत गंभीर हैं।

मंडल नेतृत्व पहले से ही कंपनियों के साथ इन युवाओं के लिए इंटर्नशिप और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने को लेकर बातचीत कर रहा है। नेतृत्व अच्छी तरह समझता है कि सदस्यों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराए बिना सदस्यता को बनाए रखना या बढ़ाना मुश्किल होगा। इस दिशा में एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) भी तैयार की जा रही है।

क्या भूटान जैसी यात्राएँ आगे भी आयोजित की जाएँगी? इस सवाल पर दास मुस्कुराते हुए हामी भरते हैं।

इस यात्रा में साउथ एशिया MDIO के प्रतिनिधि भी शामिल थे। हाल ही में बेंगलुरु में आयोजित एक रोटरेक्ट पुरस्कार समारोह में दक्षिण एशिया के 45 रोटरेक्ट मंडलों ने हिस्सा लिया। वहाँ MDIO के प्रेसिडेंट-इलेक्ट ने गेलेफू यात्रा का अनुभव पूरे समूह के साथ साझा किया और बताया कि ऐसी खूबसूरत यात्राएँ रोटरेक्टरों के बीच जुड़ाव और दोस्ती मजबूत करने का बेहतरीन अवसर देती हैं।

भूटान यात्रा मई में हुई थी। इसके बाद हाल ही में एक अन्य समूह ने अरुणाचल प्रदेश की यात्रा की। दास बताते हैं, यह हमारे मंडल के पाँच ज़ोन में से ज़ोन 4 में आता है। हमारे मंडल के लोग बहुत विविध पृष्ठभूमि से आते हैं और ज़ोन 4 में केवल दो क्लब हैं। इसलिए मैं उन सदस्यों के साथ अरुणाचल के नामसाई गया और एक और यादगार यात्रा का हिस्सा बना। ■

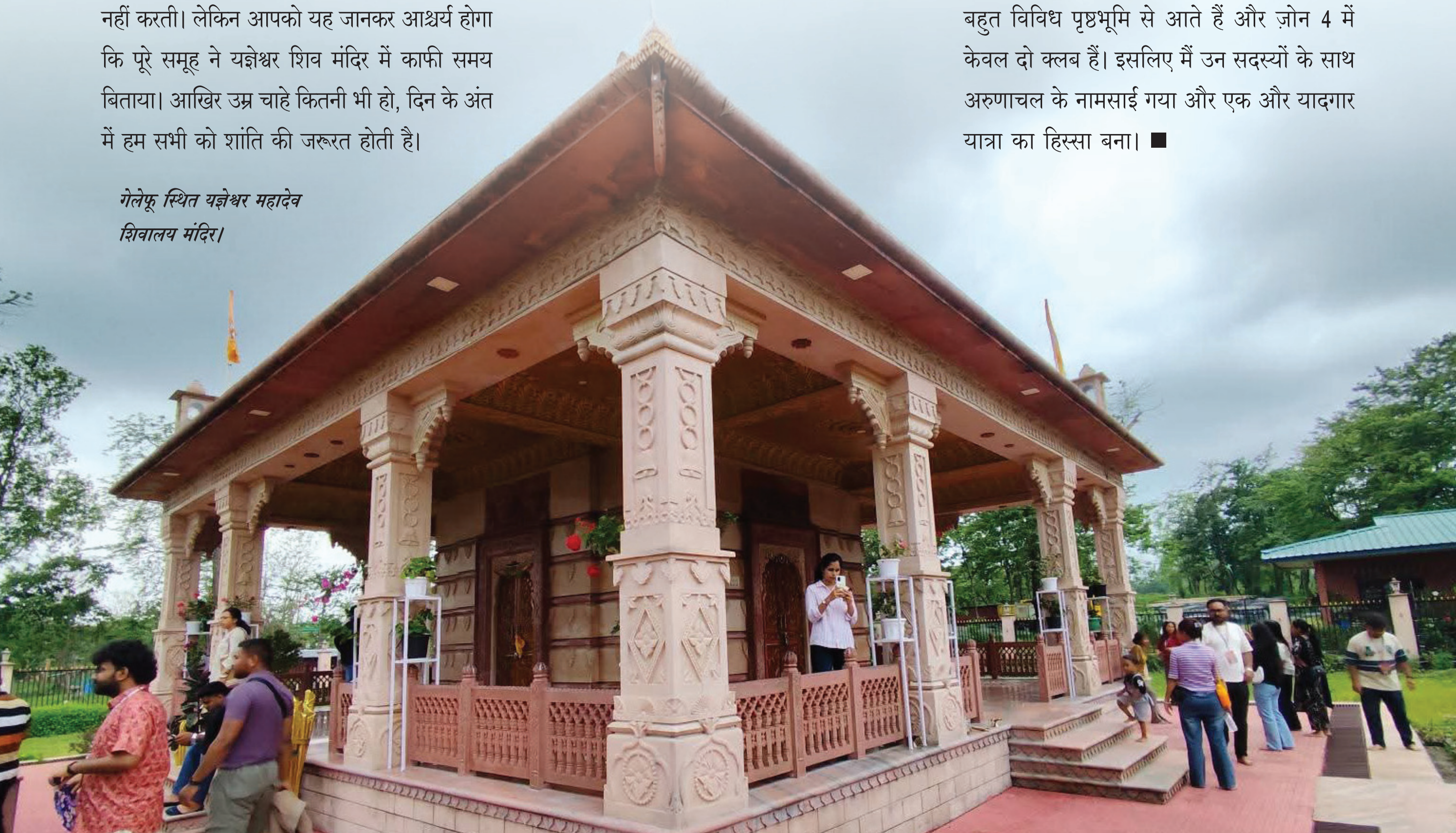

गेलेफू स्थित यज्ञेश्वर महादेव शिवालय मंदिर।

PRIP साबू के नाम पर चंडीगढ़ के स्कूल का नामकरण

टीम रोटरी न्यूज़

11 अगस्त को PRIP राजेंद्र साबू के 92वें जन्मदिन के अवसर पर न्यू चंडीगढ़ स्थित भवन विद्यालय का नाम बदलकर भवनस आर के साबू विद्यालय कर दिया गया। साबू 1996 से भारतीया विद्या भवन स्कूलों की चंडीगढ़ केंद्र शाखा के चेयरमैन हैं। वे 1977 से इस शैक्षणिक संस्था से जुड़े हुए हैं।

1,350 विद्यार्थियों वाला यह नया स्कूल चंडीगढ़ में भवन समूह के स्कूलों में तीसरा है। पाँच एकड़ में फैला यह खूबसूरत, हरे-भरे परिसर आधुनिक सुविधाओं और उपकरणों से सुसज्जित है, जो भारत और विदेशों के बेहतरीन स्कूलों के स्तर के हैं।

चंडीगढ़ के भवन स्कूलों को कई दशकों से देश के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में गिना जाता रहा है। इसके सचिव पीडीजी मधुकर मल्होत्रा बताते हैं कि शहर में पहला भवन स्कूल 1983 में शुरू हुआ था। वे साबू के साथ 48 वर्षों से और भवन चंडीगढ़ के साथ सचिव के रूप में 14 वर्षों से जुड़े हुए हैं।

PRIP राजेंद्र साबू अपने 91वें जन्मदिन पर भवन विद्यालय के छात्रों से बातचीत करते हुए।

साबू के जन्मदिन पर स्कूल की ओर से जारी एक वीडियो में बच्चे सामूहिक रूप से प्यार और उत्साह के साथ उन्हें जन्मदिन की शुभकामनाएँ देते नजर आते हैं। वीडियो का समापन एक भावुक संदेश के साथ होता है: साबू सर, आपने हमें जो दृष्टि दी और जिन मूल्यों से हमें जोड़ा, उनके लिए हम आपके आभारी हैं। हमें सिर्फ एक स्कूल नहीं, बल्कि एक विरासत देने के लिए धन्यवाद। ■

PRID भरत पांड्या को 2028-29 के

रो ई अध्यक्ष के लिए नामित किया गया

रोई मंडल 3141 के रोटरी क्लब बोरीवली के सदस्य भरत पांड्या को 2028-29 के रो ई अध्यक्ष के लिए नामांकन समिति ने चुना है। यदि 15 सितंबर तक उनके नाम को कोई चुनौती नहीं मिलती है, तो वे आधिकारिक रूप से रो ई अध्यक्ष-नामित बन जाएंगे।

पांड्या 2019-21 में रो ई निदेशक, 2020-21 में RI कोषाध्यक्ष और 2022-26 के दौरान द रोटरी फाउंडेशन (TRF) के ट्रस्टी रह चुके हैं। वर्तमान में वे रो ई प्रोग्राम्स कमेटी के चेयर और TRF प्रोग्राम्स कमेटी के वाइस-चेयर हैं। उन्होंने 2011-15 के दौरान इंडिया पोलियोप्लस कमेटी में भी काम किया। इसी अवधि में भारत को पोलियो-मुक्त देश प्रमाणित किया गया।

2006-07 में मंडल गवर्नर के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान पांड्या के रो ई मंडल 3140 ने TRF के लिए 2 मिलियन से अधिक का योगदान दिया। TRF के इतिहास में पहली बार कोई भारतीय मंडल 3140-TRF योगदान के मामले में दुनिया में नंबर 1 बना।

पांड्या और उनकी पत्नी माधवी, जो इनर व्हील डिस्ट्रिक्ट 314 की पूर्व मंडल चेयर हैं, मेजर डोनर्स और बेनिफैक्टर्स हैं। पांड्या जनरल और लैप्रोस्कोपिक सर्जन हैं, जबकि माधवी स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं। ■

मन की सेहत, रोटरी का साथ

रशीदा भगत

ताइवान कन्वेंशन में सबसे दिल छू लेने वाले स्टॉल में से एक था रोटरी फेलोशिप ऑफ हिप्नोसिस एंड हीलिंग (RFHH) का। यह फेलोशिप रो ई मंडल 3080 के रोटेरियनों ने शुरू की है। हिमाचल प्रदेश के पांवटा साहिब के एलर्जिस्ट डॉ हरसिमरन सिंह चौधरी इस फेलोशिप की शुरुआत करने वालों में हैं। वे बताते हैं, ताइपे कन्वेंशन के हाउस ऑफ

हार्लीन कौर ताइपे कन्वेंशन में 'रोटरी फेलोशिप ऑफ़ हिप्नोसिस एंड हीलिंग' के बूथ पर एक विज़िटर के लिए टैरो कार्ड रीडिंग करते हुए।

फ्रेंडशिप में जब हमने हीलिंग और हिप्नोसिस का स्टॉल लगाया, तो पहले दिन सुबह हॉल में प्रवेश करते समय मैं सोच रहा था-क्या कोई हमारे स्टॉल पर रुकेगा भी?

किस्मत से ऐसा नहीं हुआ। डॉ. सिंह मुस्कुराते हुए बताते हैं, अगले कुछ दिनों में दुनिया के हर कोने से रोटेरियन हमारे स्टॉल पर आए। वे सिर्फ फेलोशिप के बारे में जानने नहीं आए, बल्कि तनाव, भावनात्मक स्वास्थ्य, उपचार और अपने-अपने समुदायों में लोगों के सामने आ रही चुनौतियों पर भी बात की। उनके लिए सबसे खुशी की बात यह रही कि कन्वेंशन के अंत तक करीब 25 नए सदस्य RFHH से जुड़ गए। वे कहते हैं, एक नई फेलोशिप के लिए, जिसने अभी अपनी पहली शुरुआत की है, यह हमारे लिए बहुत उत्साह बढ़ाने वाला अनुभव था। यह हमारे लिए शब्दों से कहीं अधिक मायने रखता है।

इस फेलोशिप की शुरुआत और विकास के बारे में बताते हुए इसके संस्थापक और कार्यकारी सचिव डॉ सिंह कहते हैं कि वे पिछले 12 वर्षों से अपने गृहनगर में निजी चिकित्सा प्रैक्टिस कर रहे हैं। वे बाल रोग विशेषज्ञ, एलर्जी और अस्थमा विशेषज्ञ हैं। उनकी पत्नी हरलीन कौर एक अल्टरनेटिव थेरेपिस्ट हैं और उनके पास दो पीएचडी हैं। वे पिछले 23 वर्षों से अपना सेंटर चला रही हैं। हरलीन ने महज 18 वर्ष की उम्र में अल्टरनेटिव थेरेपी का अभ्यास शुरू किया था। वे रेकी ग्रैंडमास्टर और जानी-मानी टैरो कार्ड रीडर हैं। उन्हें अक्सर टीवी चैनलों पर अपने ज्ञान और अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। अब तक वे भारत और विदेशों के युवाओं सहित करीब 5,000 लोगों को प्रशिक्षण दे चुकी हैं।

वे दोनों रो ई मंडल 3080 के रोटरी क्लब चंडीगढ़ रॉयल के सदस्य हैं। डॉ सिंह टीआरएफ कैडर सदस्य, ग्लोबल हेल्थ (2026-31) भी हैं। डॉ सिंह कहते हैं, जब हम रोटरी से जुड़े, तो सोचा कि अपनी विशेषज्ञता साथी रोटेरियनों के साथ भी क्यों न साझा करें और उनकी मदद करें।

बाल रोग और एलर्जी विशेषज्ञ होने के साथ-साथ डॉ सिंह पिछले 2-3 वर्षों से हिप्नोथेरेपी भी कर रहे हैं। वे बताते हैं, हिप्नोथेरेपी में हम अवचेतन मन के साथ काम करते हैं। मैं हरलीन के साथ अपने क्षेत्र के नशामुक्ति केंद्रों में जाता हूं और वहां लोगों के नशे की लत से बाहर आने में मदद के लिए हिप्नोथेरेपी सत्र करता हूं।

जब दोनों ने अपना ज्ञान रोटेरियनों के साथ साझा करने का फैसला किया, तो उन्होंने फेलोशिप के लिए आवेदन किया। लेकिन इसे मंजूरी दिलाना आसान नहीं था। यह हमारे लिए बहुत कठिन था। मैंने काफी मेहनत की और रो ई फेलोशिप्स के प्रमुख को समझाने में लगभग छह महीने लग गए। दुनिया भर में करीब 100 रोटरी फेलोशिप हैं और काफी प्रयासों के बाद हमें मंजूरी मिली, वे बताते हैं।

दुनिया भर से रोटेरियन तनाव, भावनात्मक सेहत, ठीक होने की प्रक्रिया और लोगों को अपने समुदायों में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उन पर बात करने के लिए आए।

वे गर्व से कहते हैं कि RFHH, रो ई मंडल 3080 की पहली फेलोशिप है और इसे फरवरी 2026 में मंजूरी मिली। अब इसके 70 सदस्य हैं, जिनमें ताइवान कन्वेंशन में जुड़े 25 नए सदस्य भी शामिल हैं।

दुनिया भर के हीलर्स और थेरेपिस्ट से जुड़े इस फेलोशिप के सदस्य हर महीने ऑनलाइन मिलते हैं। इन बैठकों में हरलीन उन्हें अवचेतन मन के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण देती हैं।इस दंपति का लक्ष्य साथी रोटेरियनों को अल्टरनेटिव थेरेपी, हीलिंग पद्धतियों और आध्यात्मिक विज्ञान का प्रशिक्षण देना है।

डॉ सिंह और हरलीन नाहन सेंट्रल जेल के कैदियों में अवसाद और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने के लिए एक पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने की तैयारी कर रहे हैं। इसके लिए हमें अनुमति की जरूरत है। हमने हिमाचल प्रदेश के जेल महानिदेशक अभिषेक त्रिवेदी से संपर्क किया है। जल्द ही हम यह पायलट प्रोजेक्ट शुरू करेंगे, जिसमें कैदियों से बातचीत और काउंसलिंग की जाएगी, डॉ सिंह बताते हैं।

जेल को इस पहल के लिए चुनने के बारे में वे कहते हैं कि नशामुक्ति केंद्रों के साथ काम करते हुए उन्होंने महसूस किया कि जेल में सजा काट रहे लोगों के मानसिक स्वास्थ्य और उपचार पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। इन कैदियों से बात करने वाला कोई नहीं होता। अपनी परिस्थितियों के कारण वे भारी मानसिक दबाव से गुजरते हैं, कई तरह की मानसिक परेशानियों से जूझते हैं और जेल में होने के कारण पहले ही अवसाद में रहते हैं। कई लोगों का अपने परिवार से भी लगभग संपर्क टूट चुका होता है।

डॉ सिंह बताते हैं कि नशामुक्ति केंद्रों की तरह जेल में भी पायलट प्रोजेक्ट शुरू होने पर हिप्नोथेरेपी, रेकी, अन्य अल्टरनेटिव थेरेपी, मेडिटेशन और ऑरा व चक्र क्लीनिंग जैसी पद्धतियों के जरिए उपचार किया जाएगा।

जेल में नशे की समस्या आम है। हम अवचेतन मन के साथ काम करके कैदियों को नशे से दूर होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।इस पहल का उद्देश्य कैदियों से मिलना, उनसे सकारात्मक बातें करना और कुछ ऐसी पद्धतियां सिखाना है, जिससे वे बेहतर महसूस कर सकें।ताइपे कन्वेंशन में फेलोशिप के स्टॉल को याद करते हुए डॉ सिंह कहते हैं, कुछ पल लंबे समय तक मेरे साथ रहेंगे।

ऐसा ही एक पल था जब रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो और उनकी पत्नी अन्ना मारिया उनके स्टॉल पर आए और कुछ समय उनके साथ बिताया। एक नई फेलोशिप के लिए उनका यह अपनापन हमारे लिए शब्दों से परे था।एक और यादगार मुलाकात सिल्विया व्हिटलॉक से हुई। वे रोटरी से जुड़ने के लिए कानूनी लड़ाई लड़ने वाली महिला थीं और रोटरी क्लब की पहली महिला अध्यक्ष भी बनीं।

वे व्हीलचेयर पर उनके स्टॉल पर आईं। हरलीन ने उन्हें टैरो रीडिंग की पेशकश की। बातचीत के दौरान सिल्विया मुस्कुराईं और बताया कि उन्हें भी टैरो कार्ड पढ़ना पसंद है। हमें इसकी उम्मीद नहीं थी, लेकिन यह मुलाकात बहुत आत्मीय और यादगार बन गई। यह दिखाती है कि रोटरी अलग-अलग संस्कृतियों और पीढ़ियों के बीच कैसी दोस्ती बनाती है।

एक अन्य रोटेरियन भी उनके लिए प्रेरणादायक रहे, जिन्हें कुछ ही सप्ताह पहले रीढ़ की हड्डी में चोट लगी थी। वे इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर पर कन्वेंशन में पहुंचे और उनके स्टॉल पर भी आए।

फ़ेलोशिप शुरू करने वाले हरसिमरन सिंह चौधरी और हरलीन, बूथ पर अंतरराष्ट्रीय मेहमानों के साथ।

पीआरआईपी फ्रांसेस्को अरेज़ो के साथ हरलीन।

डॉ सिंह कहते हैं, वे चल भी नहीं पा रहे थे, फिर भी कन्वेंशन तक पहुंचे और हमारे स्टॉल पर आए। सबसे खास बात यह थी कि वे बेहद खुशमिजाज थे। उनसे मिलकर मुझे याद आया कि रोटरी सेवा के साथ-साथ हौसले और जुझारूपन की भी मिसाल है।

इस फेलोशिप से कन्वेंशन में जुड़े 25 नए सदस्यों में से 10 अमेरिका से और बाकी ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, नाइजीरिया, श्रीलंका और नेपाल से हैं। समय कम होने के कारण वहां थेरेपी सत्र तो नहीं हो सके, लेकिन स्टॉल पर आने वाले सभी लोगों के लिए निःशुल्क टैरो रीडिंग की गई।

डॉ सिंह कहते हैं, रोटरी से जुड़ने वाले ज्यादातर लोग आर्थिक रूप से संपन्न होते हैं, लेकिन आज बहुत से लोग मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी परेशानियों से जूझ रहे हैं। मेरा मानना है कि आने वाले समय में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं और बढ़ेंगी। वे बताते हैं कि आज 9-10 साल के छोटे बच्चे भी कहते हैं कि वे डिप्रेशन में हैं। सोचिए, इतनी कम उम्र में बच्चे तनाव, डिप्रेशन और एंग्जायटी जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं।

रोटेरियन भी इससे अछूते नहीं हैं। जीवन में अच्छी तरह स्थापित होने के बावजूद वे कई तरह की मानसिक चुनौतियों का सामना करते हैं। इस फेलोशिप का उद्देश्य ऐसे रोटेरियनों को सहयोग और मदद देना है।

डॉ सिंह कहते हैं, पहले मानसिक बीमारी से जुड़ी किसी भी बात को लेकर एक तरह का कलंक था। लेकिन अब लोग मानसिक स्वास्थ्य को लेकर अधिक जागरूक और स्वीकारशील हो रहे हैं और कई लोग अलग-अलग तरह के काउंसलरों की मदद भी ले रहे हैं।

दंपति का मानना है कि बढ़ती जागरूकता और स्वीकार्यता के साथ वे अधिक से अधिक रोटेरियनों को इस पहल से जोड़कर उनकी मदद कर पाएंगे। डॉ सिंह उत्साह से कहते हैं, बार्सिलोना में होने वाले अगले कन्वेंशन तक हमारा लक्ष्य फेलोशिप में 100 से अधिक नए सदस्यों को जोड़ना है। ■

बाएं: डॉ सिंह और हरलीन, रोटरी क्लब की पहली महिला प्रेसिडेंट सिल्विया व्हिटलॉक के साथ।

कीमत जो उन्हें चुकानी पड़ती है

वी के माधव मोहन

रोटरी में चार दशकों ने मुझे इसके नेतृत्वकर्ताओं के बारे में क्या सिखाया

मैं चार दशकों से रोटरी से जुड़ा हूं। इस दौरान मैंने रो ई अध्यक्षों की एक लंबी कतार को आते, अपनी जिम्मेदारी निभाते और फिर पद से विदा होते देखा है। कुछ को मैंने खचाखच भरे सभागार में दूर से देखा, तो कुछ से डिनर टेबल पर बैठकर करीब से जानने का मौका मिला। आगे जो कुछ है, वह बस वही है जो मैंने अपनी आंखों से देखा और महसूस किया।

वे बिना हिसाब लगाए देते हैं

सबसे पहली चीज़ जो किसी की भी नजर में आती है, वह है उनका समर्पण। वे अपना समय, ऊर्जा और पैसा बिना किसी संकोच के रोटरी को देते हैं। रोटरी से जुड़ी हर चीज़ में अपना योगदान देने से उन्होंने कभी परहेज नहीं किया। लेकिन कम ही लोग यह समझ पाते हैं कि इन यात्राओं की शुरुआत उनके कार्यकाल से बहुत पहले हो चुकी होती है। अक्सर कई साल पहले से और कई बार अपने खर्च पर अध्यक्ष पद की शुरुआत पदक या कॉलर संभालने से नहीं होती।

वे अवसर पहचानते हैं और जानते हैं किसे फोन करना है

वे सिर्फ सपने देखने वाले नहीं हैं। वे काम करने वाले और उसे व्यवस्थित तरीके से पूरा करने वाले लोग हैं।

इनके लिए अपने पेशेवर और रोटरी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना मुश्किल रहा है। आखिरकार, अक्सर रोटरी ही जीतती है।

उनकी नजर कुछ अलग होती है। वे किसी समुदाय में जाते हैं और तुरंत समझ जाते हैं कि कहां और किस तरह योगदान दिया जा सकता है। यही दूसरा हुनर सबसे खास है। योजना बनाना कोई भी जानता है। लेकिन फोन उठाकर पूरे भरोसे के साथ यह जानना कि वे तीन कौन-से लोग हैं, जो उस योजना को हकीकत में बदल देंगे-यह हुनर बहुत कम लोगों में होता है।

वे सुनते हैं और फर्क समझते हैं

वे बहुत ध्यान से सुनते हैं। सुनना एक मामूली-सी खूबी लग सकती है, लेकिन ऐसा है नहीं। हर जगह विचारों की भरमार होती है। कुछ अच्छे होते हैं, तो कई सिर्फ इसलिए सुनाई देते हैं क्योंकि उन्हें जोर से पेश किया जाता है। दोनों को धैर्य से सुनना और फिर बिना शोर किए यह समझ लेना कि इनमें से कौन-सा विचार सच में उपयोगी है और कौन-सा सिर्फ शोर-यही इन नेताओं को अलग पहचान देता है। वे जोश और उपयोगिता को एक नहीं समझते।

प्रतिष्ठा धीरे-धीरे बनती है

उन्होंने दशकों में अपनी प्रतिष्ठा बनाई है-हर बार मौजूद रहकर, अपने वादे निभाकर और अपने असली व्यक्तित्व के साथ ईमानदार रहकर। इस बात में कोई छुपा हुआ शॉर्टकट नहीं है। 30 साल तक इन तीन चीज़ों पर कायम रहिए और लोग आप पर किसी भी जिम्मेदारी के लिए भरोसा करेंगे। इनमें से किसी एक में भी चूक हो जाए, तो कोई भी पद उस नुकसान की भरपाई नहीं कर सकता।

अब उस हिस्से की बात, जिसका जिक्र हम कम करते हैं

रोटरी से जुड़े रहने के लिए उन्हें इसकी एक कीमत भी चुकानी पड़ी है। मैं इस बारे में ईमानदारी से बात करना चाहता हूं, क्योंकि ईमानदारी के बिना की गई प्रशंसा सिर्फ चापलूसी बनकर रह जाती है।

करियर की चमक फीकी पड़ती है

कई लोगों के लिए अपने पेशेवर जीवन और रोटरी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना आसान नहीं रहा। अक्सर रोटरी जीत जाता है। धीरे-धीरे कारोबार, प्रैक्टिस या करियर दूसरे पायदान पर चला जाता है। यह सब अचानक नहीं होता। करियर खत्म नहीं होता, बस उसकी चमक धीरे-धीरे फीकी पड़ जाती है।

दोस्तियां कम होती जाती हैं

कुछ लोगों ने दोस्तियां भी खोई हैं। किसी झगड़े की वजह से नहीं, बल्कि उम्मीदों की वजह से। जिन्हें वे अपना दोस्त मानते थे, उन्हें कुछ चाहिए था-कोई पद, कोई एहसान या कोई सम्मान-और जब उन्हें वह नहीं मिला, तो दोस्ती उस निराशा को सह नहीं पाई। जीवन के आखिरी पड़ाव में यह एहसास होना कि हर दोस्ती उतनी सच्ची नहीं थी, जितनी आपने समझी थी, बेहद अकेला कर देने वाला होता है।

शरीर भी इसकी कीमत चुकाता है

फिर आती है लगातार यात्रा की अपनी कीमत। एक रो ई अध्यक्ष इतने ज्यादा जेट लैग से परेशान थे कि बाथरूम जाने के बजाय अलमारी में जा घुसे। मैं यह किस्सा इसलिए सुनाता हूं, क्योंकि पहले यह सुनकर हंसी आती है और फिर, एक पल बाद, सोचने पर मजबूर कर देता है। उस हंसी के पीछे एक ऐसा इंसान है, जिसका शरीर ही भूल गया था कि इस वक्त दिन का कौन-सा पहर है।

बेमिसाल योगदान

एक और हिसाब बाकी है, और यह अब तक का सबसे बड़ा हिसाब है। मैंने जिन भी अध्यक्षों की

PRIP नितीश लाहरी

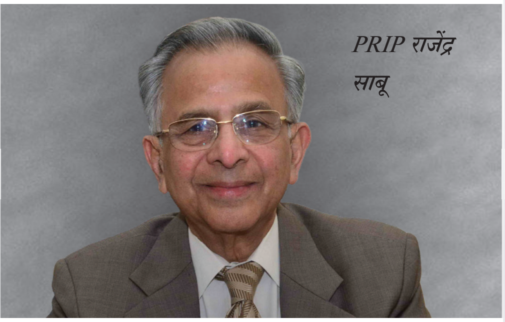
PRIP राजेंद्र साबू

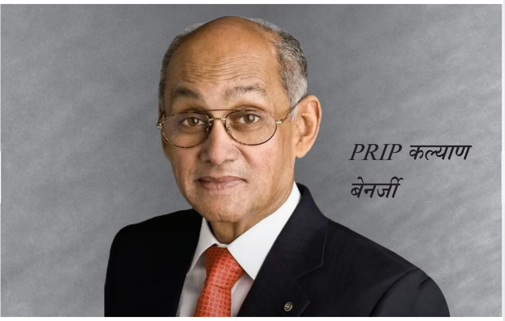
PRIP कल्याण बेनर्जी

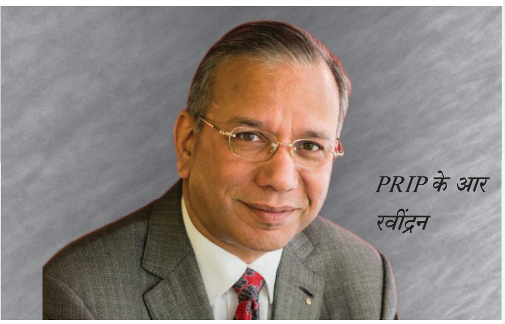
PRIP के आर रवींद्रन

PRID सुशील गुप्ता

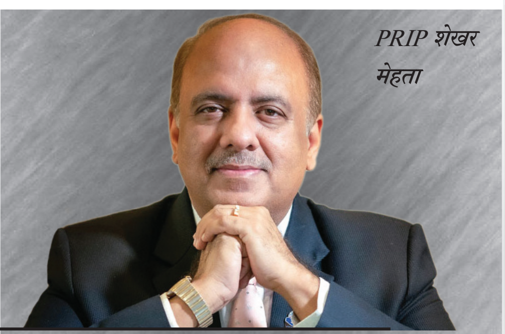
PRIP शेखर मेहता

बात की है, उनके पीछे एक जीवनसाथी खड़ा है। उनका योगदान बेमिसाल है। मैं यह शब्द बहुत सोच-समझकर इस्तेमाल कर रहा हूं और बिल्कुल उसी अर्थ में कह रहा हूं।

उन्होंने अपनी जिंदगी को भी दांव पर लगाया है। अपना समय, अपना शरीर, अपने सपने। करियर को उसके सबसे ऊंचे मुकाम पर पहुंचने के दौर में पीछे छोड़ दिया। अपनी महत्वाकांक्षाओं को चुपचाप समेट लिया-और फिर शायद कभी उनका जिक्र भी नहीं किया।

बाकी परिवार का योगदान भी कम नहीं रहा। वे बच्चे, जो ऐसे माता-पिता के साथ बड़े हुए जो अक्सर घर से दूर रहते थे। ऐसे घर, जिन्हें महीनों तक एक ही व्यक्ति ने संभाला। परिवार के वे खास मौके, जो उस व्यक्ति के बिना मनाए गए जिसकी मौजूदगी वहां सबसे ज्यादा चाही जा रही थी। इन परिवारों में रिश्तों पर भी दबाव पड़ा है और कई बार उनमें दरारें भी आई हैं। मैंने ऐसा होते देखा है। लेकिन जिन परिवारों को मैंने करीब से जाना, उनमें ये रिश्ते कभी टूटे नहीं। हमें इस पूरे हिसाब को ईमानदारी से समझना चाहिए। पद की चेन एक व्यक्ति पहनता है। लेकिन उसकी कीमत पूरा परिवार चुकाता है।

वे उस दायरे से बड़े हो जाते हैं

रास्ते में एक और बदलाव आता है। वे इतना कुछ देख और सीख चुके होते हैं कि अपने ही क्लब और मंडल के दायरे से आगे निकल जाते हैं। अक्सर इसे अहंकार समझ लिया जाता है। मुझे नहीं लगता कि ऐसा है। जो व्यक्ति 50 देशों में बैठकर एक ही समस्या के 50 अलग-अलग समाधान सुन चुका हो, उसकी सोच का दायरा स्वाभाविक रूप से बड़ा हो जाता है।

वह किसी को छोटा नहीं समझ रहे होतें। वह बस चीज़ों को एक बड़ी दूरी से देख रहे होतें है। लेकिन इसे आसानी से गलत समझ लिया जाता है। और कई बार, यह अनुभव बेहद अकेला भी हो सकता है।

जो उन्हें आगे बढ़ाता है

उन्हें टिकाए रखता है उनका स्वभाव और मानसिक मजबूती। वे जुझारू होते हैं, हार नहीं मानते और हर परिस्थिति में रास्ता निकालना जानते हैं। मुश्किलें उन्हें लंबे समय तक रोक नहीं पातीं। वे धीरे-धीरे

वह किसी को छोटा नहीं समझ रहे होतें। वह बस चीज़ों को एक बड़ी दूरी से देख रहे होतें है।

सत्ता और प्रभाव की ताकत को भी समझने लगते हैं-यह कैसे काम करती है, कहां से आती है और इसका इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है।

वह सबक जो वे अंततः सीखते हैं

मैंने जो आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण बात देखी है, वह शायद इन सबमें सबसे अहम है।

वे अलग-अलग संस्कृतियों को लेकर तुरंत राय बनाना छोड़ देते हैं और अलग-अलग विचारों को खुले मन से अपनाना सीखते हैं। वे यह मानना बंद कर देते हैं कि उनका अपना तरीका ही सही या आदर्श तरीका है। इसके बजाय, वे अंतर को गलती नहीं, बल्कि एक नई जानकारी के रूप में देखना शुरू करते हैं।

और आखिरकार वे एक ऐसे वाक्य तक पहुंचते हैं, जो उनके नेतृत्व करने का तरीका बदल देता है: यह मेरा विचार नहीं है, न तुम्हारा विचार-यह सबसे अच्छा विचार है। उनकी यात्राएं, उनका समर्पण और वह कीमत जो उन्होंने और उनके परिवारों ने चुपचाप चुकाई-इन सबका मकसद एक ही है: सबसे अच्छा विचार जहां से भी आए, उसे पहचानना और फिर इतनी विनम्रता रखना कि उसके रास्ते में खुद न खड़े हों। ये विचार मेरे अपने हैं, जो रोटरी में चार दशकों के अनुभव और अवलोकन से उपजे हैं। जानबूझकर किसी व्यक्ति या परिवार का नाम नहीं लिया गया है और न ही किसी किस्से को किसी विशेष व्यक्ति से जोड़ा गया है।

लेखक रो ई स्ट्रैटेजिक प्लानिंग कमेटी (2011-2015) के पूर्व सदस्य और सीईओ को मार्गदर्शन देने वाले मेंटर हैं। वह रोटरी क्लब कोचीन के पूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं।

एक-एक नन्हे दिल को जोड़ते हुए

रशीदा भगत

धैर्य, प्यार और लगातार प्रयास के साथ रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे एयरपोर्ट, रो ई मंडल 3141 का *गिफ्ट ऑफ लाइफ प्रोजेक्ट* अब तक जन्मजात हृदय रोगों के साथ पैदा हुए 625 से अधिक बच्चों की महत्वपूर्ण बाल हृदय और जीवनरक्षक सर्जरी करा चुका है। इस पर अब तक ₹10 करोड़ से अधिक खर्च हो चुके हैं। इस रोटरी वर्ष के अंत तक यह प्रोजेक्ट कुल 825 बच्चों की मदद कर चुका होगा। छह ग्लोबल ग्रांट के जरिए चल रहे इस प्रोजेक्ट की कुल फंडिंग तब बढ़कर ₹14 करोड़ के शानदार आंकड़े तक पहुंच जाएगी।

पिछले छह वर्षों से यह प्रोजेक्ट मुख्य रूप से दो रोटेरियंस की रुचि और समर्पण की बदौलत लगातार चलता आ रहा है-मुंबई के नितिन मेहता, जो इस प्रोजेक्ट के निदेशक और रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट के पूर्व अध्यक्ष हैं, और अमेरिका के इंडियाना राज्य के फोर्ट वेन के कैंसर विशेषज्ञ डॉ. प्रवीण कोल्लिपारा, जो रोटरी क्लब फोर्ट वेन, रो ई मंडल 6540 के सदस्य हैं।

प्रोजेक्ट की शुरुआत को याद करते हुए आर्क क्लम्फ सोसाइटी के सदस्य मेहता बताते हैं कि इसकी शुरुआत कोविड महामारी के दौरान हुई। तब नवी मुंबई के श्री सत्य साईं संजीवनी अस्पताल ने जन्मजात हृदय रोगों से जूझ रहे बच्चों की हार्ट सर्जरी के लिए मदद मांगी। अस्पताल ने उनसे कुछ फंड जुटाने में मदद करने को कहा था। इसी दौरान उनकी मुलाकात डॉ. कोल्लिपारा से हुई।

वह वंचित बच्चों की बाल हृदय सर्जरी में मदद करना चाहते थे। उन्होंने हमारे मंडल के कुछ प्रमुख रोटरी क्लबों से संपर्क किया था, लेकिन उन्हें बताया

गया कि ऐसा प्रोजेक्ट करना संभव नहीं है। किसी ने उन्हें मुझसे बात करने को कहा। उन्होंने मुझसे संपर्क किया और पूछा-ङ्क्या आप यह प्रोजेक्ट कर पाएंगे?फ मेहता ने जवाब देने के लिए 24 घंटे का समय मांगा। उन्होंने पूरी जानकारी जुटाई, गहराई से अध्ययन किया और फिर जवाब दिया-यह किया जा सकता है!

यह 2020-21 की बात है, जब वह अपने क्लब के अध्यक्ष थे। जब मैंने हामी भरी, तो उन्होंने कहा, 'नितिनभाई, जब मैं कोई प्रतिबद्धता कर लेता हूं, तो बाद में आप यह मत कहना कि आप इसे नहीं कर पाएंगे।' मैंने उन्हें भरोसा दिलाया। हमने काम शुरू किया और पहले साल के नतीजों से वह बहुत खुश हुए। उन्होंने साफ कहा, 'जब तक आप इसे बंद नहीं करते, मैं भी इस प्रोजेक्ट को बंद नहीं करूंगा। और तब तक मैं किसी दूसरे रोटरी क्लब को भी इसका समर्थन नहीं दूंगा।'

इसके बाद दोनों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। छह साल बीत चुके हैं, छह ग्लोबल ग्रांट हो चुके हैं और 600 से अधिक बच्चों की हार्ट सर्जरी पर ₹10 करोड़ खर्च किए जा चुके हैं।

दिलचस्प बात यह है कि इन दोनों रोटेरियंस की आज तक व्यक्तिगत मुलाकात नहीं हुई है। फिर भी सभी ग्लोबल ग्रांट सिर्फ इसी एक अंतरराष्ट्रीय पार्टनर के माध्यम से पूरे किए गए हैं और डॉ. कोल्लिपारा लगातार इस प्रोजेक्ट से सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं।

मेहता को खुशी है कि उनके क्लब का *गिफ्ट ऑफ लाइफ* प्रोजेक्ट उन बच्चों को जिंदगी का एक नया मौका दे रहा है, जिनका भविष्य कभी अनिश्चित था। वह कहते हैं, हर बच्चे का दिल स्वस्थ होना चाहिए और उसे अपने सपने पूरे करने का मौका मिलना चाहिए। जब मैं सर्जरी के बाद किसी बच्चे को मुस्कुराते हुए देखता हूं, तो मुझे पता चलता है कि हमने सिर्फ इलाज नहीं दिया-हमने उम्मीद दी है। यह सिर्फ दान नहीं है; यह इंसानियत है। मेहता बताते हैं कि पिछले साल क्लब के सदस्य उस समय बेहद खुश हुए जब क्रिकेट के दिग्गज सुनील गावस्कर अस्पताल पहुंचे और बच्चों तथा उनके परिवारों के साथ समय बिताया।

गावस्कर ने कहा था, इन बहादुर नन्हे बच्चों से मिलना सचमुच भावुक कर देने वाला है। उनका साहस और डॉक्टरों तथा रोटरी सदस्यों का समर्पण प्रेरणादायक है। असली हीरो यही हैं। यह देखकर अद्भुत लगता है कि समय पर उठाया गया कदम और मदद करने वाला दिल क्या कर सकता है।

संजिवनी अस्पताल में की जाने वाली बाल हृदय सर्जरी उन बच्चों के लिए जीवन की उम्मीद हैं, जो दिल में छेद, वाल्व की खराबी या असामान्य रक्त वाहिकाओं जैसी जन्मजात हृदय संबंधी समस्याओं के साथ पैदा होते हैं।

इस अस्पताल में बाल हृदय सर्जरी विभाग की वरिष्ठ सलाहकार और प्रमुख डॉ प्रभाथा रश्मि बताती हैं कि समय पर इलाज न मिलने पर इन समस्याओं के कारण बच्चों को सांस लेने में तकलीफ, बार-बार संक्रमण, शारीरिक विकास में कमी और गंभीर स्थिति में कम उम्र में मृत्यु तक का सामना करना पड़ सकता है।

दिल में जन्मजात दोष वाले बच्चे अक्सर कमजोर दिखाई देते हैं, उनके शरीर का रंग नीला पड़ सकता है और उन्हें सांस लेने या दूध पीने में तकलीफ होती है। इन संकेतों को हल्के में नहीं लेना चाहिए। समय रहते जांच और सही निदान बेहद जरूरी है। अगर सही समय पर इलाज मिल जाए, तो ये बच्चे भी दूसरे बच्चों की तरह पूरी और सक्रिय जिंदगी जी सकते हैं। लेकिन इलाज में देरी के गंभीर और जानलेवा परिणाम हो सकते हैं, वह कहती हैं।

इस पहल की सफलता में ग्लोबल ग्रांट्स (GG) से मिली मदद की अहम भूमिका रही है। वह कहती हैं, ये ग्रांट रोटरी की वैश्विक सहभागिता की भावना को सही मायने में दर्शाते हैं। ग्लोबल ग्रांट की खासियत यह है कि अंतरराष्ट्रीय साझेदारी और रणनीतिक फंडिंग के जरिए स्थानीय प्रयासों का असर कई गुना बढ़ जाता है। द रोटरी फाउंडेशन (TRF), क्लब के योगदान और मंडल के डिस्ट्रिक्ट डिज़िग्नेटेड फंड्स (DDF) को मिलाकर बड़े और टिकाऊ प्रोजेक्ट संभव होते हैं।

इस अनोखी साझेदारी ने व्यक्तिगत स्तर पर की जाने वाली कुछ मदद को एक ऐसी प्रभावशाली मानवीय पहल में बदल दिया है, जिसके नतीजे स्पष्ट और लंबे समय तक दिखाई देते हैं। यह बेहद सराहनीय है कि इस प्रोजेक्ट के जरिए आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों तक अत्याधुनिक हृदय उपचार पहुंचाया जा सका।

पिछले छह वर्षों में क्लब का नेतृत्व बदलने के बावजूद इस प्रोजेक्ट की सफलता और निरंतरता के बारे में मेहता कहते हैं, पहले ग्लोबल ग्रांट से ही मैंने अपने सभी सहयोगियों और हितधारकों को कभी नजरअंदाज नहीं किया। मैंने हमेशा उन्हें प्रोजेक्ट की हर जानकारी से अवगत रखा। चाहे किसी ने 5,000 डॉलर दिए हों या 50,000 डॉलर, सभी को एक जैसी जानकारी और प्रगति रिपोर्ट दी गई। इससे दान की गई हर रकम के इस्तेमाल में पारदर्शिता बनी रही। मैं हर हफ्ते उन्हें रिपोर्ट भेजता था कि फाउंडेशन से कितनी राशि मिली, उसमें से कितनी खर्च की गई और कितनी राशि अभी बाकी है।

इस रोटरी वर्ष के अंत तक लगभग 1.5 मिलियन डॉलर खर्च हो चुके होंगे। मेहता के शब्दों में, यह राशि लगभग 825 बच्चों को उनका बचपन वापस देने पर खर्च होगी।

ये सभी बच्चे गरीबी रेखा से नीचे परिवारों से आते हैं। अस्पताल पहले इन बच्चों की पहचान करता है और उनकी पूरी जांच करता है। इसके बाद बच्चों को प्रोजेक्ट टीम के पास भेजा जाता है। टीम माता-पिता के दस्तावेजों की सावधानीपूर्वक जांच करती है, यह तय करती है कि परिवार को आर्थिक मदद की जरूरत है या नहीं, और फिर अस्पताल को सर्जरी के लिए हरी झंडी देती है।

इस प्रोजेक्ट का सबसे छोटा मरीज सिर्फ 36 घंटे का रहा है, जबकि सबसे बड़ा मरीज 16 साल का था।

मेहता बताते हैं कि इसी तरह की सर्जरी किसी निजी अस्पताल में ₹3 से ₹5 लाख तक की पड़ सकती है, जबकि संजीवनी अस्पताल में इसकी लागत करीब ₹1.5 से ₹2.5 लाख है।

अपने बच्चों के साथ माता-पिता, जिनकी हृदय सर्जरी में रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट ने सहयोग दिया।

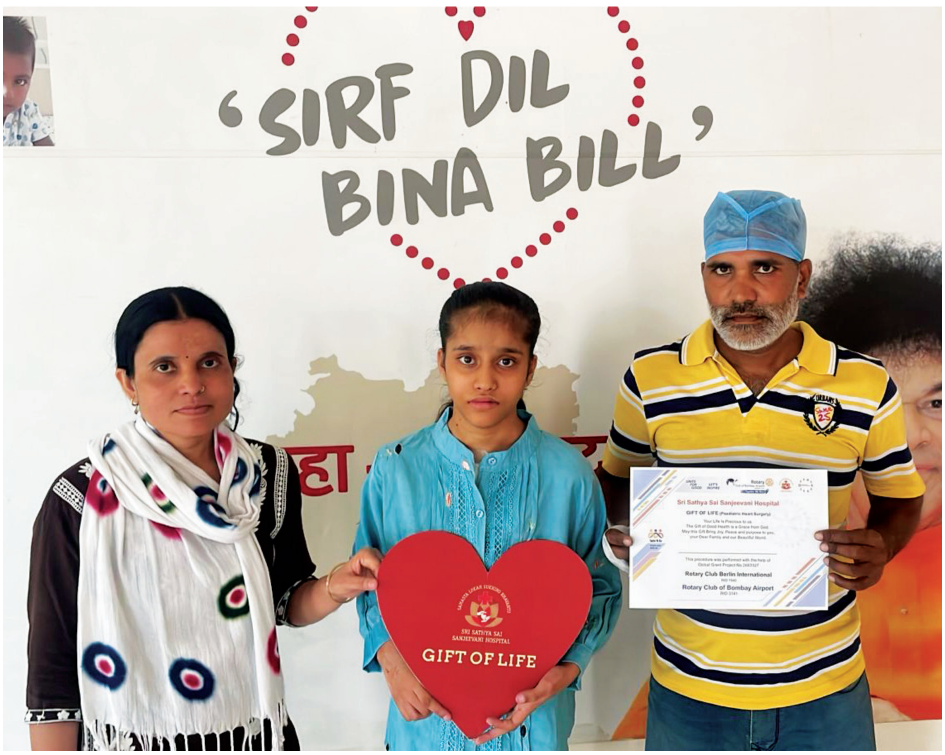

इस रोटरी वर्ष के अंत तक लगभग 1.5 मिलियन डॉलर खर्च करके करीब 825 बच्चों को उनका बचपन वापस दिया जा चुका होगा।

मेहता इस प्रोजेक्ट को छह वर्षों तक बिना किसी रुकावट के जारी रखने का श्रेय उनके बाद आए सभी क्लब अध्यक्षों को देते हैं।

हां, आप सही कह रही हैं। जब क्लब का नेतृत्व बदलता है, तो पुराने प्रोजेक्ट अक्सर भुला दिए जाते हैं या उनकी अनदेखी होने लगती है। लेकिन मैं अपने क्लब अध्यक्षों, अपने दानदाताओं और उन सभी क्लब सदस्यों को इसका श्रेय देना चाहता हूं, जो नियमित रूप से योगदान करते रहे हैं।

रोटरी वर्ष शुरू होने से पहले या शुरुआत में ही वे मेरे पास आकर पूछते हैं-ङ्खनितिन, पैसे कब जमा करने हैं?फ वे इस प्रोजेक्ट में योगदान देने के लिए इतने उत्साहित रहते हैं।

वह बताते हैं कि उनके अपने क्लब के अलावा उन्होंने दूसरे रोटरी क्लबों से भी संपर्क किया, जिन्होंने इस पहल में मदद की। इनमें रोटरी क्लब बर्लिन इंटरनेशनल, रोटरी क्लब सर्बिया, रोटरी क्लब मोंटेनेग्रो, रोटरी क्लब सिंगापुर, रोटरी क्लब दिल्ली साउथ और उनके अपने रो ई मंडल 3141 के करीब आधा दर्जन क्लब शामिल हैं। ये क्लब अब नियमित रूप से योगदान दे रहे हैं।

कुछ CSR फंडिंग भी मिल रही है। हम कुछ बच्चों और उनके माता-पिता को उन कंपनियों में भी लेकर जाते हैं, जो इस प्रोजेक्ट में योगदान देती हैं। वहां हम उन्हें कंपनी के पूरे स्टाफ से मिलवाते हैं। कर्मचारी उनसे सीधे सवाल पूछ सकते हैं और यह समझ सकते हैं कि उनकी कंपनी द्वारा दी गई रकम का वास्तव में क्या असर हो रहा है।

जब उनसे पूछा गया कि आगे की योजना क्या है और 825 लाभार्थी बच्चों की संख्या 1,000 तक कब पहुंचेगी, तो वह कहते हैं: मैडम, 1,000 का आंकड़ा बस हाथ बढ़ाने भर की दूरी पर है। फिलहाल हम एक 10 लाख डॉलर के सिंगल ग्लोबल ग्रांट पर काम कर रहे हैं, जिससे अकेले ही 550 से अधिक बच्चों की सर्जरी में मदद मिल सकती है। ■

कमज़ोर नवजातों के लिए माँ का दूध

जयश्री

समय से पहले जन्मे या कम वजन वाले शिशु के लिए, जो नवजात गहन चिकित्सा इकाई (NICU) में भर्ती है, माँ का दूध किसी भी चिकित्सा उपचार जितना ही महत्वपूर्ण हो सकता है। लेकिन जब माँ पर्याप्त दूध नहीं दे पातीं, तब जाँच के बाद सुरक्षित किए गए और पाश्चुरीकृत दाता के मानव दूध की उपलब्धता बेहद मददगार साबित हो सकती है।

मैसूरु के चेलुवम्बा हॉस्पिटल फॉर वुमेन एंड चिल्ड्रन में अमृथा वार्षिणी रोटरी मिल्क बैंक ऐसे नवजातों को यह जरूरी सहायता दे रहा है, जिन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

रोटरी क्लब ऑफ मैसूर मेट्रो, रो ई मंडल 3181 और रोटरी क्लब ऑफ बैंगलोर साउथ परेड, रो ई मंडल 3191 ने मिलकर इस मिल्क बैंक की स्थापना की। इसका उद्घाटन 1 दिसंबर 2025 को तत्कालीन मंडल गवर्नर पी के रामकृष्ण और बी आर श्रीधर ने किया। एक महीने तक परीक्षण और अस्पताल के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के साथ जरूरी प्रक्रियाएँ तय करने के बाद, इसने 2 जनवरी 2026 से काम शुरू किया।

इस सुविधा की प्रभारी डॉ हंसा बताती हैं, हमने शुरुआत बहुत कम मात्रा से की, क्योंकि प्रक्रिया को व्यवस्थित करते समय हम दूध बर्बाद नहीं करना चाहते थे। लगातार समझाइश और जागरूकता बढ़ने के साथ माताओं की प्रतिक्रिया भी उत्साहजनक रही। शुरुआत में जहाँ हर महीने करीब 1-1.5 लीटर दूध इकट्ठा होता था, वहीं जून में बैंक ने 12 लीटर दाता मानव दूध एकत्र किया। इसके अलावा, हर महीने 250 से अधिक माताएँ अपने बच्चों के लिए अपना दूध निकालने के लिए इस सुविधा में आती हैं।

यह सुविधा खासतौर पर उन माताओं के लिए महत्वपूर्ण है, जिनके बच्चे NICU में भर्ती हैं। समय से पहले जन्मे या कम वजन वाले शिशु को शुरुआत में केवल कुछ मिलीलीटर दूध की जरूरत हो सकती है। अगर माँ नियमित रूप से दूध नहीं निकालतीं, तो धीरे-धीरे उनके शरीर में दूध बनना कम हो सकता है। मिल्क बैंक ऐसी माताओं को कुछ समय तक दूध निकालकर दान करते रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। जब उनके बच्चे खुद दूध पीने के लिए तैयार हो जाते हैं, तो माँ फिर से उन्हें अपना दूध पिला सकती हैं।

फिलहाल यह मिल्क बैंक चेलुवम्बा हॉस्पिटल में भर्ती बच्चों के लिए ही उपलब्ध है। अस्पताल में चार NICU हैं और हर महीने करीब 300-400 नवजात भर्ती होते हैं, डॉ प्रदीप, विभागाध्यक्ष, बताते हैं। इनमें से कई बच्चे मैसूरु और आसपास के जिलों-कोडागु, मांड्या और चामराजनगर-से आते हैं।

दाता का दूध एक बेहद सावधानी से नियंत्रित प्रक्रिया से गुजरता है। सबसे पहले दाता माँ की मेडिकल हिस्ट्री दर्ज की जाती है और उन संक्रमणों की जाँच की जाती है, जो माँ के दूध के जरिए बच्चे तक पहुँच सकते हैं। उनकी सहमति लेने के बाद उन्हें स्वच्छता से जुड़ी जरूरी जानकारी दी जाती है और वे एक निर्धारित स्थान पर दूध निकालती हैं। इसके बाद दूध को डीप फ्रीजर में रखा जाता है, जब तक कि उसे प्रोसेस करने का समय न आ जाए।

लैमिनार फ्लो सिस्टम के तहत दूध को छोटी-छोटी खेपों में मिलाया जाता है और पाश्चुरीकरण से पहले और बाद में जाँच के लिए माइक्रोबायोलॉजी विभाग में सैंपल भेजे जाते हैं। पाश्चुरीकरण की प्रक्रिया में करीब 1-1.5 घंटे लगते हैं। दूध को तभी इस्तेमाल के लिए जारी किया जाता है, जब पाश्चुरीकरण के बाद की कल्चर रिपोर्ट उसकी सुरक्षा की पुष्टि कर देती है। अगर दूध में संभावित रूप से हानिकारक बैक्टीरिया पाए जाते हैं, तो उसे नष्ट कर दिया जाता है।

फिलहाल बैंक सप्ताह में एक बार दूध को पाश्चुरीकृत करता है। जैसे-जैसे दान बढ़ेगा, टीम पाश्चुरीकरण के चक्र बढ़ाने और कभी-कभार होने वाली

यह सुविधा उन माताओं के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, जिनके बच्चे NICU में भर्ती हैं और जिन्हें शुरुआत में केवल कुछ मिलीलीटर दूध की जरूरत होती है। लेकिन अगर माँ नियमित रूप से दूध नहीं निकालतीं, तो धीरे-धीरे उनके शरीर में दूध बनना कम हो सकता है।

(बाएँ से) रोटरी क्लब ऑफ मैसूर मेट्रो के अध्यक्ष (2025-26) एम पी गोपालकृष्णन, डी श्रीनिवासन, रो ई मंडल 3170 के सचिव (प्रशासन) पद्मजा मुरलीधर और क्लब सचिव मोहन गुरुमूर्ति (दाएँ से चौथे) मैसूरु के चेलुवम्बा हॉस्पिटल स्थित मानव मिल्क बैंक में। (दाएँ से दूसरे) सुविधा की प्रभारी डॉ हंसा और बाल रोग विभाग के प्रमुख डॉ एन प्रदीप भी तस्वीर में शामिल हैं।

अस्पताल के NICU में उपचार लेता एक नवजात शिशु।

कमी को कम करने की उम्मीद कर रही है। एक समय में अधिकतम एक या दो दाताओं का दूध मिलाने से भी दूध की बर्बादी कम करने में मदद मिली है।

डॉ हंसा के अनुसार, जून में 54 बच्चों को दाता के दूध का लाभ मिला, जबकि पिछले महीने यह संख्या 46 थी। NICU के डॉक्टर हर बच्चे की जरूरत के अनुसार दूध लिखते हैं और यह दूध बिल्कुल मुफ्त दिया जाता है।

50 सदस्यों वाले एक साल पुराने रोटरी क्लब ऑफ मैसूर मेट्रो के लिए यह मिल्क बैंक पहला बड़ा प्रोजेक्ट है। क्लब अध्यक्ष एम पी गोपालकृष्णन कहते हैं, मिल्क बैंक ने हमारे युवा क्लब को नवजात शिशुओं की देखभाल में सार्थक योगदान देने का अवसर दिया है। मैसूरु में यह अपनी तरह की पहली सुविधा है।

फ्रीजर में इस्तेमाल के लिए रखा गया पाश्चुरीकृत माँ का दूध।

अस्पताल ने एक और जरूरी जरूरत की पहचान की है। NICU में बेड की संख्या हाल ही में 36 से बढ़ाकर 66 की गई है। इसके चलते आसपास के जिलों से गंभीर रूप से बीमार ऐसे नवजात भी यहाँ लाए जाते हैं, जिन्हें वेंटिलेटर की जरूरत होती है।

डॉ हंसा कहती हैं, हमें दो वेंटिलेटर की जरूरत पड़ सकती है। एक सामान्य वेंटिलेटर की कीमत करीब 12 लाख रुपये होती है, जबकि ज्यादा उन्नत मॉडल इससे काफी महंगे हो सकते हैं। ऐसे में अस्पताल को वेंटिलेटर उपलब्ध कराने में मदद करना भी वह क्षेत्र हो सकता है, जिस पर क्लब अस्पताल के साथ अपनी साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए विचार कर सकता है। ■

अध्यक्ष बाबालोला भारत में

रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला, रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम (बाएं से दूसरे) और रो ई निदेशक के पी नागेश (दाएं से दूसरे) दिल्ली में पूरे भारत से आए डिस्ट्रिक्ट लीडर्स के साथ।

दाएंः बाएं से: रूपल पिलानी, निदेशक नागेश, प्रेसी और अध्यक्ष बाबालोला, रो ई के वी पी, निदेशक मुरुगानंदम, रो ई मंडल 3150 के डीजी उदय एस पिलानी, पीडीजी रवि वड़लामणि और हैदराबाद में मंडल सार्वजनिक छवि अध्यक्ष शेष साई कुमार।

कोलकाता में व्हीलचेयर बांटने के एक कार्यक्रम में अध्यक्ष बाबालोला और उनकी पत्नी प्रेसी, रो ई के उपाध्यक्ष मुरुगानंदन और रो ई मंडल 3291 के डिजी तापस भट्टाचार्य (दाहिनी ओर से तीसरे)।

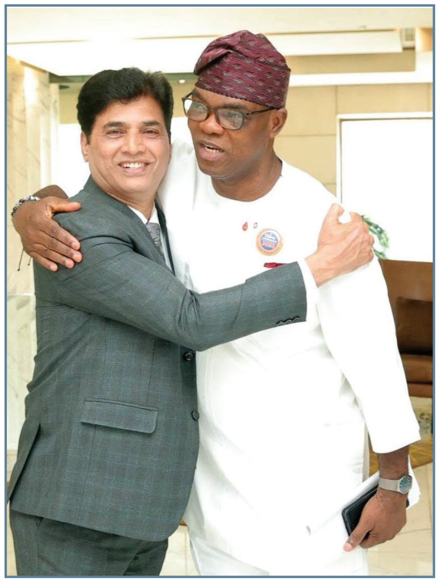

अध्यक्ष बाबालोला और निदेशक नागेश।

अध्यक्ष बाबालोला और प्रेसी एक महिला को व्हीलचेयर देते हुए, अरिंदम रॉयचौधरी (बाएं) और डीजी भट्टाचार्य (दाएं) भी चित्र में शामिल हैं।

जयश्री

गोवा में अध्यक्ष बाबालोला, प्रेसी, निदेशक नागेश, रो ई मंडल 3170 की सेक्रेटरी फ्लोरी फर्नांडीस और डी जी लेनी डा कोस्टा।

रो ई के वि पी मुरुगानंदन, अध्यक्ष बाबलोला और उनकी पत्नी प्रेसी दिल्ली में।

दिल्ली में रो ई साउथ एशिया ऑफ़िस में रो ई के वि पी मुरुगानंदन और निदेशक नागेश, अध्यक्ष बाबालोला, RISAO हेड राजेश आनंद (दाएं) और स्टाफ़ के साथ।

जयश्री

रो ई मंडल 3132 के डी जी जयेश पटेल, अध्यक्ष बाबालोला को हाथ से बुना हुआ उनका पोर्ट्रेट भेंट करते हुए। चित्र में निदेशक नागेश, प्रेसी और TRF ट्रस्टी ए एस वेंकटेश भी मौजूद हैं।

डीजी पिलानी के साथ अध्यक्ष बाबालोला।

वाराणसी में रो ई मंडल 3120 के डि जी पूनम (दाहिनी ओर से तीसरी) और महिला रोटेरियन्स के साथ प्रेसी और सुमति।

बाईं ओर: रो ई मंडल 3120 की DG पूनम गुलाटी (दाहिनी ओर से दूसरी) अध्यक्ष बाबालोला और प्रेसी को स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए। बाईं ओर से: RIDE बसु देव गोल्यान, PDG सतपाल गुलाटी, रो ई के वि पी मुरुगानंदम और उनकी पत्नी सुमति भी चित्र में शामिल हैं।

अध्यक्ष बाबालोला और वी पी मुरुगानंदम वाराणसी में एक बैठक में अफ्रीकी ड्रम बजाते हुए। सुमति मुरुगानंदम (बाएं) और प्रेसी बाबालोला (दाएं) भी चित्र में शामिल हैं।

हैदराबाद में रूपल पिलानी और प्रेसी बाबालोला।

जयश्री

बाईं ओर: गोवा में रोटरेक्ट लीडर्स के साथ RID नागेश, प्रेसी, अध्यक्ष बाबालोला, रो ई मंडल 3170 के DG ड कोस्टा और उनकी पत्नी नीता। प्रेसी बाबालोला के पीछे PDG दीपक पुरोहित भी चित्र में शामिल हैं।

रुपरेखा: एन कृष्णमूर्ति

तमिलनाडु की 'वुमन ऑन व्हील्स' का जलवायु अभियान

वी मुत्तुकुमारन

स्प्रेडिंग विंग्स' रोटरी क्लब चेन्नई मेराकी की साहसी महिला टीम का एक अनोखा कार अभियान है। पिछले 10 वर्षों में यह टीम देशभर में घूमते हुए सभी 42 रो ई मंडलों तक पहुँच चुकी है।

हमारा मुख्य उद्देश्य लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। हमारा प्रमुख आयोजन, सोलो कार रैली, वृक्षारोपण और जैव विविधता को बचाने जैसे प्रयासों के जरिए धरती की रक्षा का संदेश देती है, कहती हैं शिवबाला राजेंद्रन, चार्टर अध्यक्ष और मंडल गो ग्रीन की स्थायी चेयर।

उनकी हालिया पांच दिवसीय रैली (25-29 मई) नौवां संस्करण थी। शिवबाला के नेतृत्व में चार सदस्यीय टीम ने तमिलनाडु के सभी नौ रो ई मंडलों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने 'क्लाइमेट एक्शन' के मुद्दे पर रोटेरियनों, जिला कलेक्टरों, वन अधिकारियों (DFO) और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा की। यह उनके व्यापक पर्यावरण अभियान का हिस्सा था।

पूरे भारत का दौरा करने के बाद, फरवरी-मार्च 2025 में हमने अपनी आठवीं रैली के लिए नेपाल की 20 दिन की यात्रा की। वहां नेपाली रोटेरियनों और आम लोगों के बीच पर्यावरण संरक्षण का संदेश पहुंचाया, वह कहती हैं। हमने श्रीलंका जाने की योजना बनाई थी, लेकिन संयुक्त राष्ट्र और विश्व मौसम विज्ञान से जुड़ी हालिया रिपोर्टों में पढ़ा कि अप्रैल-मई के दौरान भारत दुनिया का सबसे गर्म स्थान रहा। इसलिए हमने अपनी योजना बदल दी। इसके बाद उनका ध्यान तमिलनाडु पर केंद्रित हो गया। यह हमारा अपना राज्य है और हम चाहते थे कि तमिलनाडु जलवायु कार्रवाई को सक्रिय रूप से अपनाने में दूसरे राज्यों के लिए एक मॉडल बने।

उनकी हालिया पांच दिवसीय रैली (25-29 मई) नौवां संस्करण थी। शिवबाला के नेतृत्व में चार सदस्यीय टीम ने तमिलनाडु के सभी नौ रोटरी मंडलों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने 'क्लाइमेट एक्शन' के मुद्दे पर रोटेरियनों, जिला कलेक्टरों, वन अधिकारियों (DFO) और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा की। यह उनके व्यापक पर्यावरण अभियान का हिस्सा था। पूरे भारत का दौरा करने के बाद, फरवरी-मार्च 2025 में हमने अपनी आठवीं रैली के लिए नेपाल की 20 दिन की यात्रा की। वहां नेपाली रोटेरियनों और आम लोगों के बीच पर्यावरण संरक्षण का संदेश पहुंचाया, वह कहती हैं। हमने श्रीलंका जाने की योजना बनाई थी, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के एक हालिया अध्ययन और विश्व मौसम विज्ञान से जुड़ी रिपोर्टों में पढ़ा कि अप्रैल-मई के दौरान भारत दुनिया का सबसे गर्म स्थान रहा। इसलिए हमने अपनी योजना बदल दी। इसके बाद उनका ध्यान तमिलनाडु पर केंद्रित हो गया। यह हमारा अपना राज्य है और हम चाहते थे कि तमिलनाडु जलवायु कार्रवाई को सक्रिय रूप से अपनाने में दूसरे राज्यों के लिए एक मॉडल बने।

हर रोटरी मंडल के मुख्य केंद्र पर रैली टीम ने मंडल गवर्नरों को अपने 'कमिटमेंट लेटर' के बारे में

रोटरी क्लब चेन्नई मेराकी की चार्टर अध्यक्ष और प्रोजेक्ट चेयर शिवाबाला राजेंद्रन (बाएं से तीसरी), कोथांगी सुचित्रा, तत्काल पूर्व अध्यक्ष अब्बिरहमी सेंथिल, AKS सदस्य के श्रीनिवासन, सरवना सेल्वी और कम्युनिट्री के संस्थापक-CEO हाफिज खान।

चेन्नई मेराकी टीम का अगला पड़ाव श्रीलंका होगा। दिसंबर 2026 में जाफना से शुरू होने वाली यह एक सप्ताह की यात्रा होगी। टीम नागपट्टिनम पोर्ट से फेरी लेकर श्रीलंका जाएगी और रो ई मंडल 3220 के सहयोग से वहां के रोटरी क्लबों का दौरा करेगी।

जानकारी दी। ये पत्र मंडल गवर्नरों, पूर्व मंडल गवर्नरों (PDG) और भावी नेताओं के साथ जिला कलेक्टरों को सौंपे गए। जहां संभव हुआ, हमने DFO और प्रशासनिक अधिकारियों से भी मुलाकात कर ये 'कमिटमेंट लेटर' दिए। इन पत्रों में संक्षेप में राज्य प्रशासन से अपील की गई कि पर्यावरण और हरित क्षेत्र बढ़ाने के अपने अभियान में रोटेरियनों और रोटरी क्लबों की मदद लें। शिवबाला बताती हैं कि राज्य सरकार और भारत सरकार की ओर से हरित क्षेत्र बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। दुनियाभर में प्रतिष्ठित NGO के रूप में रोटरी हमारी धरती की रक्षा के इन अभियानों का हिस्सा बन सकती है। इस यात्रा के दौरान रैली टीम ने सात जिला कलेक्टरों, पांच ऊऋजी और नौ मंडल गवर्नरों से मुलाकात की।

जिला कलेक्टर कार्यालयों में हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया। कई प्रशासनिक अधिकारियों ने अपने क्षेत्र में रोटरी क्लबों द्वारा चलाए जा रहे वृक्षारोपण अभियानों से जुड़ने में रुचि दिखाई। रैली टीम ने पूरे राज्य के 70 रोटरी क्लबों के करीब 350-400 रोटेरियनों से भी मुलाकात की। रास्ते में पड़ने वाले स्थानों पर छोटे-छोटे ठहराव के दौरान हमने रोटेरियनों को क्लाइमेट एक्शन अभियानों से जुड़कर स्वयंसेवक बनने के लिए प्रेरित किया।

जहां शिवबाला इस महिला टीम का मार्गदर्शन करती हैं, वहीं ड्राइविंग सीट पर कोथांगी सुचित्रा की शानदार ड्राइविंग ने पिछले एक दशक में उनकी कार रैलियों को बिना किसी बड़ी परेशानी के पूरा करने में अहम भूमिका निभाई है। टीम में रोटरी क्लब की अध्यक्ष श्री अब्बिरामी (2025-26) और ईश्वरा प्रिया भी शामिल थीं। हमारी सभी कार रैलियों में ईश्वर हम पर मेहरबान रहे हैं। अब तक सफर बहुत सुगम रहा है, बस एक बार टायर पंचर हुआ था। अच्छी ताकत और स्टैमिना ने मुझे मुश्किल रास्तों और खराब मौसम में भी गाड़ी चलाने में मदद की, सुचित्रा मुस्कुराते हुए कहती हैं।

रो ई मंडल 3206 के IPDG चेल्ला राघवेंद्रन ने कोयंबटूर के जिला कलेक्टर पवनकुमार को 'कमिटमेंट लेटर' सौंपा। साथ में DG आर एस मारुति (मध्य) और कार रैली टीम की सदस्य ईश्वरी, सुचित्रा और शिवाबाला।

रोटरी का सघन वन

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) पर रैली टीम ने मद्रास यूनिवर्सिटी के तारामणि कैंपस के एक बंजर परिसर में 3,233 पौधे लगाए। इस अवसर पर IPDG डी देवेंद्रन, रैली के प्रायोजक और कपड़ा उद्योगपति नल्ली कुप्पुस्वामी चेट्टी, कम्युनिट्री के संस्थापक हाफिज खान, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी वी इरैयन्बु और यूनिवर्सिटी की रजिस्ट्रार रीटा जॉन मौजूद रहे। टीम का लक्ष्य इस रोटरी वर्ष के अंत तक कैंपस में एक लाख पौधे लगाकर 'रोटरी सघन वन' तैयार करना है।अब चेन्नई मेराकी टीम का अगला पड़ाव श्रीलंका होगा। दिसंबर 2026 में जाफना से हमारी एक सप्ताह की यात्रा शुरू होगी। हम नागपट्टिनम पोर्ट से फेरी लेकर श्रीलंका जाएंगे। रो ई मंडल 3220 के सहयोग से हम वहां के रोटरी क्लबों का दौरा करेंगे, रोटेरियनों और आम लोगों से जुड़ेंगे और पर्यावरण संरक्षण तथा क्लाइमेट एक्शन की जरूरत का संदेश फैलाएंगे, शिवबाला बताती हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सीमाएँ, सुरक्षा और अपनी बात कहने की सीख

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब उल्हासनगर, रो ई मंडल 3142 ने कक्षा 1 से 5 तक के 495 छात्रों के लिए *स्पर्श एक एहसास* नाम से व्यक्तिगत सुरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। उम्र के अनुसार तैयार किए गए चित्रों, डेमोंस्ट्रेशन और इंटरैक्टिव गतिविधियों के जरिए बच्चों के साथ एक ऐसे विषय पर बातचीत की गई, जिस पर बात करना अक्सर मुश्किल होता है।

इन सत्रों का संचालन इनर व्हील क्लब ऑफ उल्हासनगर की तीन प्रमाणित प्रशिक्षकों-रचना दलाल, लता रांका और डिंपल शाह-ने किया। पारंपरिक लेक्चर देने के बजाय, प्रशिक्षकों ने चित्रों के जरिए बच्चों को असहज या असुरक्षित स्थितियों को पहचानने और यह तय करने में मदद की कि वे ऐसी स्थिति में क्या कर सकते हैं।

कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए, डेमोंस्ट्रेशन में ऐसी स्थितियाँ दिखाई गईं, जैसे किसी ऐसे खेल को खेलने के लिए कहना जिसे बच्चा नहीं खेलना चाहता या किसी असुरक्षित बात को गुप्त रखने के लिए कहना। बच्चों को समझाया गया कि वे मना कर सकते हैं, वहाँ से हट सकते हैं और मदद माँग सकते हैं, क्लब अध्यक्ष रुटा कोलवेकर बताती हैं। शिक्षण सामग्री में इस बात पर भी जोर दिया गया कि शरीर के निजी अंग निजी ही होते हैं और अगर कोई बात उन्हें असहज करे, तो बच्चों को किसी भरोसेमंद बड़े व्यक्ति से बात करनी चाहिए।

कक्षा 3 से 5 के बच्चों के लिए बातचीत को एक कदम आगे ले जाते हुए शरीर की सीमाओं, निजी अंगों, व्यक्तिगत सुरक्षा और अपनी बात खुलकर

प्रशिक्षकों ने चित्रों के जरिए बच्चों को असहज या असुरक्षित स्थितियों को पहचानने और यह समझने में मदद की कि ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए।

ऊपर: अंकुश कमलाकांत (बाएँ) और क्लब अध्यक्ष रुटा कोलवेकर (दाएँ से दूसरी) छात्रों के साथ।

बाएँ: रुटा (बाएँ) और प्रशिक्षक लता रांका छात्रों के साथ बातचीत करते हुए।

कहने जैसे विषयों पर चर्चा की गई। एक सत्र में पूरी सीख को आठ आसान नियमों में समेटा गया-क्या निजी है, यह समझना; सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों को पहचानना; 'नहीं' कहना; वहाँ से दूर हटना; किसी भरोसेमंद बड़े व्यक्ति को बताना और मदद मिलने तक बताते रहना-और यह याद रखना कि इसमें बच्चे की कोई गलती नहीं है, रुटा कहती हैं।

रुटा इस बात से खुश हैं कि कार्यक्रम का स्कूल पर अच्छा असर पड़ा है। स्कूल प्रशासन ने अब यह जागरूकता सत्र साल में दो बार आयोजित करने का अनुरोध किया है। हम इस साल के अंत में एक फॉलो-अप सत्र आयोजित करने की योजना बना रहे हैं।

पीडीजी चंद्रशेखर कोलवेकर, जो क्लब अध्यक्ष के जीवनसाथी और इस पहल से जुड़े क्लब सदस्य हैं, ने कक्षा से बाहर भी इस बातचीत को जारी रखने की जरूरत पर जोर दिया। वे कहते हैं, पिछले कुछ वर्षों में बच्चों के साथ दुर्व्यवहार के मामले बढ़े हैं। बच्चों की मासूमियत का फायदा उठाकर घर और बाहर लोगों पर भरोसा करने से जुड़े खतरों के बारे में उन्हें जागरूक करना जरूरी है। हमें उन्हें यह बताना होगा कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं, ताकि वे कम से कम खतरों को पहचान सकें और अपनी सुरक्षा के लिए कदम उठा सकें।

रुटा के अनुसार, रोटरी और इनर व्हील के बीच यह सहयोग *स्पर्श एक एहसास* को एक ऐसे मॉडल में बदल सकता है, जिसे लंबे समय तक जारी रखा जा सके। प्रशिक्षित स्वयंसेवक उम्र के अनुसार तैयार सामग्री के साथ स्कूलों तक पहुँच सकते हैं और बच्चों को न केवल असुरक्षित स्थितियों को पहचानने के लिए सही शब्द दे सकते हैं, बल्कि मदद माँगने का आत्मविश्वास भी दे सकते हैं।

इस प्रोजेक्ट का संचालन रुटा, क्लब सचिव मुस्कान शाहदादपुरी और प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर अंकुश कमलाकांत ने किया। ■

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

अस्पतालों में NICU और डायलिसिस यूनिट

इस रोटरी वर्ष (2026-27) रो ई मंडल 3170 को दो नए मंडलों-रो ई मंडल 3171 और 3172-में बाँटा जाएगा। डॉ लेनी दा कोस्टा कहते हैं, नए मंडलों के लिए मजबूत नींव तैयार करना मेरा लक्ष्य है। इसके लिए अलग-अलग स्वरूपों में 30-40 नए रोटरी क्लब बनाए जाएंगे, ताकि सदस्यता में विविधता लाई जा सके। उन्होंने बताया कि रोटरेक्ट क्लबों की संख्या भी दोगुनी करके 200 की जाएगी।

1 जुलाई तक 146 रोटरी क्लबों में 6,750 सदस्य हैं। डॉ दा कोस्टा का लक्ष्य है कि रोटरी के प्रमुख सेवा क्षेत्रों में ₹100 करोड़ की परियोजनाओं के जरिए हम 10 लाख लोगों के जीवन को छुएँगे।

नाइजीरिया के एक अस्पताल में नवजात शिशुओं के लिए NICU स्थापित करने के अलावा (ग्लोबल ग्रांट : 90,000 डॉलर), रो ई मंडल 3170 के अलग-अलग अस्पतालों में ऐसे 4-5 और NICU बनाए जाएंगे। प्रत्येक के लिए ग्लोबल ग्रांट की राशि 40,000-50,000 डॉलर होगी। वे कहते हैं, हम करीब 30 ग्लोबल ग्रांट परियोजनाएँ करेंगे, जिनमें से प्रत्येक की लागत लगभग 50,000 डॉलर होगी।

सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में करीब 2,000 स्मार्ट क्लासरूम स्थापित किए जाएंगे। इसके लिए प्रति कक्षा ₹1 लाख के CSR ग्रांट का इस्तेमाल किया जाएगा। छात्रों के लिए 20 STEM लैब भी बनाई जाएंगी, जिनके लिए दो ग्लोबल ग्रांट के जरिए 80,000 डॉलर जुटाए जाएंगे। वे कहते हैं, हम CSR ग्रांट के जरिए पाँच हैप्पी स्कूल भी बनाएंगे। द रोटरी फाउंडेशन (TRF) के लिए उनका लक्ष्य 3 मिलियन डॉलर जुटाना है। वे 2008 में रोटरी से जुड़े थे।

लेनी दा कोस्टा
जेरियाट्रिक फिज़िशियन
रोटरी क्लब मारगाँव मिडटाउन
रो ई मंडल 3170

आर एस मारुति
पाठ्यपुस्तक प्रकाशक
रोटरी क्लब कोयंबटूर टेक्ससिटी
रो ई मंडल 3206

कचरा प्रबंधन पर फोकस

उनका मुख्य फोकस रोटेरियनों की संख्या बढ़ाने पर है, क्योंकि कई छोटे क्लबों में सिर्फ 20-25 सदस्य हैं। अपने कार्यकाल में मेरा लक्ष्य करीब 1,000 नए रोटेरियनों को रोटरी से जोड़ना है, मारुति कहते हैं। जुलाई तक मंडल में 77 क्लब और 3,500 रोटेरियन हैं।

कोयंबटूर के पास थोंडामुथुर ग्राम पंचायत में एक ठोस कचरा प्रबंधन संयंत्र स्थापित किया जाएगा, जिसके लिए ₹1 करोड़ का GG लिया जाएगा। वे कहते हैं, इस परियोजना से मिले फीडबैक के आधार पर, इसी गाँव के पास एक बायोचार संयंत्र भी लगाया जाएगा।

मंडल के सभी रोटरी क्लब मिलकर पूरे तमिलनाडु में सड़क सुरक्षा को लेकर एक बड़ा जागरूकता अभियान चलाएंगे। ₹1.5 करोड़ की इस सड़क सुरक्षा मुहिम के लिए निजी प्रायोजकों और दानदाताओं से धन जुटाया जाएगा।

CSR ग्रांट के जरिए 100 गोद लिए गए गाँवों में पर्यावरण से जुड़े प्रोजेक्ट और जन-जागरूकता कार्यक्रम किए जाएंगे। प्रत्येक गाँव के लिए ₹30 लाख का प्रावधान होगा। मारुति को TRF के लिए 1.4 मिलियन डॉलर जुटाने का भरोसा है। वे 2004 में रोटरी से जुड़े थे। वे कहते हैं, लाभार्थियों के चेहरे पर मुस्कान देखकर मुझे आगे काम करने की प्रेरणा मिलती है।

उनका दीर्घकालिक लक्ष्य है, एक ग्रासरूट रोटेरियन बनकर जीवनभर जरूरतमंदों की सेवा करते रहना।

100 सरकारी स्कूलों को गोद लेने की पहल

हम स्कूलों से जुड़े कई प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहे हैं, जो फिलहाल तैयार किए जा रहे हैं। कम से कम 100 सरकारी स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम बनाए जाएंगे। इसके लिए CSR ग्रांट और क्लब के सहयोग से हर स्कूल पर ₹3-5 लाख खर्च किए जाएंगे। इसके अलावा, स्कूलों को डेस्क-बेंच भी दिए जाएंगे, जिससे कम से कम 5,000 बच्चों को फायदा होगा। ₹25 लाख की इस पहल के लिए CSR ग्रांट और सदस्यों के योगदान से धन जुटाया जाएगा, पूनम गुलाटी बताती हैं।

1 जुलाई तक रो ई मंडल 3120 में 100 क्लब और 4,265 रोटेरियन थे। पूनम अपने कार्यकाल में 10-12 नए क्लब बनाने और कम से कम 1,000 नए सदस्यों को रोटरी से जोड़ने का लक्ष्य लेकर चल रही हैं।

गोरखपुर के एक सरकारी अस्पताल में ₹45 लाख के GG से रोटरी ब्लड बैंक का उद्घाटन किया जाएगा। वहीं, उनके होम क्लब द्वारा शुरू की गई ₹65 लाख की GG वाली मैमोग्राफी वैन ग्रामीण क्षेत्रों की 20,000 महिलाओं की स्तन और सर्वाइकल कैंसर की जाँच करेगी।

प्रयागराज में 110 सब्जी विक्रेताओं को ₹9,000 की कीमत वाली पुश कार्ट दी गईं। पूनम के अनुसार, इससे उनके खुदरा कारोबार को बढ़ाने में मदद मिलेगी। अगस्त में वाराणसी में हुए मंडल सदस्यता सेमिनार के दौरान, हमने दूरदराज के गाँवों के लड़के-लड़कियों को 1,000 से अधिक साइकिलें दीं, ताकि वे स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर न हों।

लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी, बलिया, मिर्जापुर और जौनपुर समेत बड़े शहरों और छोटे कस्बों में 10,000 से अधिक पौधे लगाए जाएंगे।

TRF के लिए पूनम 600,000 डॉलर जुटाने का लक्ष्य रखती हैं। वे 2013 में रोटरी से जुड़ी थीं। वे मुस्कुराते हुए कहती हैं, रोटरी निस्वार्थ सेवा की भावना को प्रेरित करता है और अच्छे इरादों को संगठित एवं व्यावहारिक कार्य में बदलने का रास्ता दिखाता है।

पूनम गुलाटी
शिक्षाविद्
रोटरी क्लब इलाहाबाद रॉयल्स
रो ई मंडल 3120

स्मार्ट क्लासरूम के लिए CSR ग्रांट और क्लब के सहयोग से हर स्कूल पर ₹3-5 लाख खर्च किए जाएंगे। स्कूलों को डेस्क-बेंच भी दिए जाएंगे, कम से कम 5,000 बच्चों को फायदा होगा। ₹25 लाख की इस पहल के लिए CSR ग्रांट और सदस्यों के योगदान से धन जुटाया जाएगा।

पूनम गुलाटी
रो ई मंडल 3120

अमित सिंगला
चार्टर्ड अकाउंटेंट
रोटरी क्लब समाना
रो ई मंडल 3090

समाना में रोटरी अस्पताल

1996 में रोटरी से जुड़ने के बाद से अमित सिंगला के लिए दोस्तों और समान सोच वाले पेशेवरों के साथ नेटवर्किंग करना और संगठन की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने के प्रयास करना एक बेहद सुखद अनुभव रहा है, वे कहते हैं।

उनका लक्ष्य 25 नए रोटरी क्लब शुरू करना और कुल सदस्य संख्या में 600 की बढ़ोतरी करना है। इससे अगले साल जून तक मंडल में रोटेरियनों की संख्या बढ़कर 3,600 हो जाएगी। 1 जुलाई तक मंडल में 160 क्लब थे।

समाना में तीन साल के भीतर एक मल्टीस्पेशियलिटी अस्पताल बनाया जाएगा। इसके लिए ₹2-3 करोड़ के GG के साथ दानदाताओं, ग्लोबल पार्टनर्स और CSR ग्रांट से ₹6 करोड़ जुटाए जाएंगे। सिंगला कहते हैं, इस बड़े प्रोजेक्ट की रूपरेखा पर अभी काम चल रहा है। मेरे कार्यकाल के दौरान इसमें ₹4 करोड़ का निवेश किया जाएगा।

इसके बाद की योजना सुनाम में पैथोलॉजी लैब के साथ एक डेंटल अस्पताल बनाने की है, जिसके लिए ₹1 करोड़ का GG लिया जाएगा। धूरी के सरकारी सिविल अस्पताल में ₹1 करोड़ के GG से 4-5 मशीनों वाला डायलिसिस सेंटर स्थापित किया जाएगा। वहीं, राजस्थान के श्रीगंगानगर में दृष्टिबाधित और मूक-बधिर बच्चों के स्कूल में ₹50 लाख की लागत से सोलर प्लांट लगाया जाएगा।

पंजाब, राजस्थान और हरियाणा में 100 से अधिक मेडिकल कैंप लगाए जाएंगे, जिनसे 10,000 ग्रामीण लाभार्थियों तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचेंगी।

TRF के लिए उनका लक्ष्य क्लबों के जरिए 1.2 मिलियन डॉलर जुटाना है। रोटरी में तीन दशक के अपने सफर के बारे में वे कहते हैं, मुझे खुशी है कि अपने राज्य के अलग-अलग राजस्व जिलों और उससे बाहर भी मुझे नए दोस्त बनाने का मौका मिला।■

बार्सिलोना में खोने का मज़ा

डायना शोबर्ग

2027 के रोटरी इंटरनेशनल अधिवेशन के मेज़बान शहर को जानने के लिए सबसे पहले उसमें खो जाइए।

कुछ ही कदमों में हम बार्सिलोना के 2,000 साल पुराने इतिहास से होकर गुजर चुके हैं-रोमन मंदिर के खंडहर, एक मध्ययुगीन चर्च जिसमें शहर की शहीद संरक्षक संत के अवशेष सुरक्षित हैं, और रंग-बिरंगे मोज़ेक से सजा आधुनिकतावादी कॉन्सर्ट हॉल। हम जिस भी मोड़ पर मुड़ते हैं, वहां कुछ और खूबसूरत पुरानी इमारतें, हरियाली से भरे शांत आंगन, फव्वारे और कलाकृतियां हमारा स्वागत करती हैं। मुझे पता है कि मैं जेट लैग से परेशान हूं, लेकिन मेरे दिमाग का घूमना सिर्फ इसकी वजह से नहीं है। मेरे साथ दोपहर बिताने आए पत्रकार और पार्ट-टाइम टूर गाइड अल्बर्ट टोरास मुझे भरोसा दिलाते हैं, बार्सिलोना में करने वाली सबसे अच्छी चीज़ है-यहां शहर के बीचोंबीच घूमते-घूमते खो जाइए।

2027 के रो ई अधिवेशन की मेज़बानी करने वाले इस शहर की खूबसूरती को करीब से महसूस करने के लिए मैं कुछ घंटे पहले ही बार्सिलोना पहुंची हूं। यह अधिवेशन 26 से 30 जून, 2027 तक होगा। उड़ान से उतरने और थोड़ा संभलने के बाद, टोरास, जो रोटरी क्लब बार्सिलोना अल्बा के सदस्य हैं, और रोटरी क्लब सेंट कुगात डेल वालेस की मोंत्से मोराल, ग्रान होटल हवाना में मुझसे मिलने आए। 1882 में बना यह ऐतिहासिक लग्ज़री होटल रोटरी क्लब ऑफ बार्सिलोना का ठिकाना है और अगले कुछ दिनों तक मेरा भी घर।

शहर के गोथिक क्वार्टर की ओर बढ़ते हुए टोरास मुझे बार्सिलोना और इसके क्षेत्र कैटालोनिया का इतिहास सुनाते चलते हैं। पहली सदी ईसा पूर्व के आखिर में रोमनों ने इस शहर की नींव रखी और इसका नाम बार्सिनो रखा। 12वीं सदी के मध्य में कैटालोनिया क्राउन ऑफ एरागॉन का हिस्सा बन गया। इसके बाद एरागॉन ने पश्चिमी भूमध्यसागर के कई हिस्सों पर कब्ज़ा किया, जिनमें वालेंसिया, सिसिली, सार्डिनिया, नेपल्स और एथेंस शामिल थे। टोरास बताते हैं, 12वीं से 14वीं सदी के बीच भूमध्यसागर में यह सबसे महत्वपूर्ण देशों में से एक था।

इतिहास में अभी बहुत कुछ बाकी है, लेकिन फिलहाल हम उस जगह पहुंच चुके हैं जहां इस वक्त खड़े हैं-गोथिक क्वार्टर के प्रवेश द्वार पर। यह इलाका उस दौर में विकसित हुआ था, जब बार्सिलोना भूमध्यसागर की एक बड़ी ताकत बन चुका था। यहां घूमते हुए हम भव्य बार्सिलोना कैथेड्रल के पास से गुजरते हैं, जो संत यूलालिया को समर्पित है। चौथी सदी में रोमन साम्राज्य में ईसाइयों पर हुए अत्याचार के दौरान महज 13 साल की उम्र में संत यूलालिया शहीद हो गई थीं।

और जब बात रोमनों की हो ही रही है, तो यह जानना भी दिलचस्प है कि कैथेड्रल उसी मूल रोमन शहर की सीमा के भीतर बना है। टोरास पास की इमारतों की नींव में लगे बड़े-बड़े पत्थरों की ओर इशारा करते हैं। ये मूल रोमन दीवारों के हिस्से हैं। इनके ऊपर दिखाई देने वाली छोटी ईंटें बाद के समय में लगाई गई थीं। हम चर्च के बगल वाली एक संकरी गली से आगे बढ़ते हैं और माहौल थोड़ा शांत हो जाता है। सामने पुराना शाही महल है, जिसकी एक मीनार का आकार मुकुट जैसा है। इसके बाद हम क्राउन ऑफ एरागॉन के अभिलेखागार के पास से गुजरते हैं, जहां यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त कई महत्वपूर्ण दस्तावेज़ सुरक्षित हैं।

इन दस्तावेज़ों को समझने के लिए इतिहास का एक और छोटा-सा पाठ जरूरी है। 1469 में एरागॉन के फर्डिनेंड द्वितीय ने पास के कैस्टिल की इसाबेला से विवाह किया। इस विवाह ने स्पेन के एकीकरण की नींव रखी। 1492 में इसी शाही जोड़े ने क्रिस्टोफर कोलंबस की नई दुनिया की यात्राओं को आर्थिक समर्थन दिया। इससे स्पेन के एक वैश्विक शक्ति बनने की शुरुआत हुई। कोलंबस की यात्राओं से जुड़े ऐतिहासिक दस्तावेज़ आज एरागॉन के अभिलेखागार में सुरक्षित हैं। अमेरिका में व्यापार करके अपनी किस्मत बनाने वाले कैटालोनिया के व्यापारी उस वास्तुकला के लिए जिम्मेदार हैं, जिसके लिए बार्सिलोना शायद सबसे ज्यादा जाना जाता है-मॉडर्निज़्म आंदोलन की अनोखी वास्तुकला।

गोथिक क्वार्टर से बाहर निकलते ही मुझे कैटालोनिया की मॉडर्निज़्म वास्तुकला की पहली झलक मिलती है-पालाउ दे ला म्यूज़िका कैटालाना में। शायद उड़ान के बाद धुंधले दिमाग में सबसे ज्यादा यही इमारत अपनी छाप छोड़ती है। यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल इस इमारत को फूलों की आकृतियों वाले मोज़ेक से सजे स्तंभों और प्रसिद्ध संगीतकारों की प्रतिमाओं से सजाया गया है। अगर अंदर घूमने का समय न हो, तो कोने से घूमकर पहली मंज़िल के कैफ़े में कॉफी पी सकते हैं। वहां सिरेमिक के फूल और रंगीन कांच की खिड़कियां इस कला आंदोलन की खास प्राकृतिक थीम की खूबसूरती दिखाती हैं।

मेरे रोटरी मित्र वादा करते हैं कि अगले दिन मुझे मॉडर्निज़्म की ऐसी और भी बहुत-सी मिसालें देखने को मिलेंगी। लेकिन फिलहाल बारिश शुरू हो जाती है और हमें कॉफी के लिए अंदर जाना पड़ता है। बारिश धीमी पड़ती है तो पूरा शहर जैसे चमक उठता है। मैं टोरास को अलविदा कहती हूं और मोराल के साथ ला रांबला की ओर निकल पड़ती हूं-बार्सिलोना की मशहूर पैदल सड़क।

ला रांबला अपनी चहल-पहल के लिए जानी जाती है, लेकिन आज शाम मौसम की वजह से यहां काफी शांति है और भीड़ भी नदारद है। हम प्लासा रियाल में पहुंचते हैं और मोराल दोनों हाथ फैलाकर कहती हैं, इसका आनंद लीजिए। मैं समझ सकती हूं क्यों। इस चौक पर गाड़ियों की आवाजाही नहीं है और चारों तरफ खजूर के पेड़ हैं, जिससे शहर के बीचोंबीच यह किसी हरे-भरे नखलिस्तान जैसा लगता है। इसके चारों ओर शास्त्रीय शैली की इमारतें हैं, जिनमें रेस्तरां और नाइटक्लब चलते हैं।

मोराल बीचोंबीच बने फव्वारे के पास सेल्फी लेने का सुझाव देती हैं। लेकिन इससे पहले कि हम तस्वीर ले पाएं, कुछ युवा उन्हें रोक लेते हैं और अपनी तस्वीर खींचने के लिए कहते हैं। वे बार्सिलोना में एक अंतरराष्ट्रीय कंपनी के लिए काम करते हैं और पुर्तगाल, ब्राज़ील, जर्मनी और दूसरे देशों से आए हैं। मोराल खुशी-खुशी उनकी तस्वीर खींच देती हैं। वह कहती हैं, बार्सिलोना बहुत पुराना शहर है, इसका इतिहास

बहुत समृद्ध है, लेकिन यह बहुत आधुनिक भी है। यहां बहुत सारे युवा हैं। यहां लगातार कुछ नया हो रहा है।

बार्सिलोना का नाम आते ही अंतोनी गाउदी का नाम भी अपने-आप याद आता है। मेरे पास उनके अद्भुत कामों की बस कुछ झलकियां देखने के लिए कुछ ही घंटे थे, लेकिन शहर में अपना सारा खाली समय उनकी कृतियों को देखने में आसानी से बिताया जा सकता है। और शायद ऐसा करना जरूरी भी है। गाउदी की शानदार रचनाओं को चाहे जितनी देर देख लें, उन्हें शब्दों में बयां करना आसान नहीं। उनकी बनाई इमारतें और पार्क किसी जादुई परीकथा की दुनिया जैसे लगते हैं।

रोटरेक्ट क्लब डेल वालेस के सदस्य अलेइक्स मार्तोरेय कहते हैं, आप वहां एक घंटे तक चीज़ों को देखते रह सकते हैं और फिर भी आपको एहसास होगा कि ऐसी चीज़ें हैं, जिन्हें आपने अभी तक देखा ही नहीं। हम उस वक्त गाउदी की सबसे मशहूर कृतियों में से एक, सागरादा फमीलिया बेसिलिका, को देख रहे हैं। यह दुनिया का सबसे ऊंचा चर्च है।

गाउदी ने 1883 में इस बेसिलिका पर काम शुरू किया था और तब से इसका निर्माण लगातार चलता आ रहा है। इस साल 10 जून को, गाउदी की मृत्यु की 100वीं वर्षगांठ पर, पोप लियो XIV ने चर्च के हाल ही में पूरे किए गए शिखर को आशीर्वाद दिया। यह उन 14 शिखरों में सबसे ऊंचा है, जो चर्च को सजाते हैं। अंदर जाकर बेसिलिका के विशाल, पेड़ जैसे स्तंभ और जंगल की छतरी जैसा दिखने वाला गुंबद देखना चाहते हैं? तो टिकट पहले से बुक करना बेहतर होगा। अगली जून में अधिवेशन के लिए लौटने पर मैं भी ऐसा ही करने वाली हूं।

इस विशाल इमारत के आसपास घूमते हुए मेरी मुलाकात रोटरेक्ट क्लब ऑफ बार्सिलोना-डायगोनाल के तोमास मासुची से होती है। उनके माता-पिता की मुलाकात भी रोटरेक्ट के जरिए हुई थी। 20 वर्षीय तोमास पिछले दो साल से रोटरेक्टर हैं और बेसिलिका से करीब 15 मिनट की पैदल दूरी पर रहते हैं। वह सलाह देते हैं, शहर को जानना बहुत जरूरी है। इसकी गलियों में पैदल घूमिए और देखिए कि यहां के लोग कैसे रहते हैं। हमारे यहां ऐसी इमारतें हैं, जो दुनिया के दूसरे हिस्सों में नहीं मिलेंगी-जैसे सागरादा फमीलिया और मॉडर्निज़्म की दूसरी इमारतें। यह ऐसी चीज़ है, जो हमें सिर्फ कैटालोनिया में देखने को मिलती है। 19वीं सदी में बार्सिलोना में उद्योग तेजी से बढ़ रहा था और शहर में समृद्धि आ रही थी, जबकि स्पेन के बाकी हिस्से मुश्किल दौर से गुजर रहे थे। इसी दौर ने कैटालोनियाई लोगों में अपने क्षेत्र को लेकर गर्व की भावना को मजबूत किया, जो आज भी दिखाई देती है। मॉडर्निज़्म इसी क्षेत्रीय गर्व की एक अभिव्यक्ति था।

अमीर संरक्षकों ने कैटालोनिया के वास्तुकारों को पहले से भी ज्यादा भव्य और शानदार इमारतें बनाने का काम सौंपा। 1900 के शुरुआती वर्षों में यह कला आंदोलन धीरे-धीरे खत्म होने लगा, लेकिन आज भी बार्सिलोना में सैकड़ों ऐसी इमारतें मिलती हैं, जिनमें मॉडर्निज़्म की झलक दिखाई देती है। इनमें से नौ इमारतें यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं।हम खूबसूरत पासेइग दे ग्रासिया पहुंचते हैं, जो 20वीं सदी

दाईं ओर: बार्सिलोना के दक्षिण-पश्चिम में स्थित समुद्र तटीय शहर सित्जेस में पेला की एक कड़ाही।

***नीचे:** पार्क गुएल का एक दृश्य।*

बार्सिलोना बीच।

बार्सिलोना बहुत पुराना शहर है, इसका इतिहास बहुत समृद्ध है, लेकिन यह बहुत आधुनिक भी है।

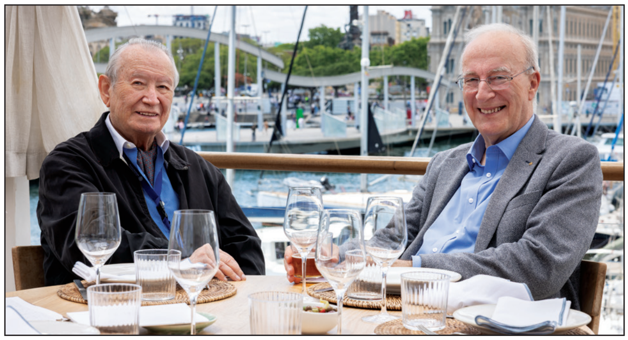

PRID जूलियो सोरखूस (बाएं) और अधिवेशन की मेज़बान समिति के अध्यक्ष सर्जियो अरागोन, रियाल क्लब मारितिम दे बार्सिलोना में।

तपस से सजी मेज़।

की शुरुआत में मॉडर्निज़्म का केंद्र हुआ करता था। यहां कुछ ही ब्लॉक की दूरी पर गाउदी की बनाई दो और शानदार इमारतें हैं-लहरदार आकार वाली कासा मिला और जादुई कासा बत्लो, जिसकी छत ड्रैगन की पीठ जैसी दिखाई देती है।

सड़क पर टहलते हुए यहां के खूबसूरत लैम्पपोस्ट और मोज़ेक टाइलों से सजी बेंचों पर भी नजर डालें। फुटपाथ पर लगी सजावटी टाइलों को 'पनोट' कहा जाता है। और जब वास्तुकला देखने से मन भर जाए, तो पासेइग दे ग्रासिया पर लग्ज़री शॉपिंग का भी भरपूर इंतजाम है-कार्टियर, प्रादा और चैनल जैसे ब्रांड यहां मौजूद हैं। सुबह भर घूमने के बाद मुझे जोरदार भूख लग चुकी है। अच्छी बात यह है कि रोटरी के दो नए दोस्त अब मुझे भूमध्यसागरीय जीवनशैली का असली स्वाद चखाने वाले हैं।

सर्जियो अरागोन और जूलियो सोरखूस बार्सिलोना के रियाल क्लब मारितिम की छत पर बैठे हैं। हाथ में बीयर है और मेज पर कई रंगों के जैतून की एक छोटी-सी प्लेट रखी है। सौ साल पुराने इस यॉट क्लब की मरीना में खड़ी नौकाओं पर लगे झंडे हल्की हवा में लहरा रहे हैं। समुद्र के ऊपर केबल कारें गुजर रही हैं और दूर लोग रांबला दे मार पर धीरे-धीरे टहल रहे हैं। यह लहरदार लकड़ी का पुल बार्सिलोना की मशहूर पैदल सड़क को पानी के ऊपर से ऐतिहासिक पोर्ट वेल तक ले जाता है।

मैं भी छत पर उनके साथ बैठ जाती हूं। अरागोन बताते हैं कि बार्सिलोना समुद्र के किनारे बसा शहर होने के बावजूद अपने इतिहास के ज्यादातर हिस्से में समुद्र से मुंह फेरकर रहा। शहर पहले उसी गोथिक क्वार्टर के आसपास विकसित हुआ था जिसे मैंने पहले देखा था। बाद में 19वीं सदी में जब पुरानी शहर की दीवारें गिराई गईं, तो शहर का विस्तार हुआ। शहर के इस नए हिस्से को 'लर्फ्ईशाम्प्ले' कहा जाता है, जिसका कैटालान भाषा में अर्थ है-'विस्तार'। लेकिन समुद्र के किनारे का इलाका भारी उद्योगों के लिए इस्तेमाल होता था और स्थानीय लोग वहां बहुत कम जाते थे।

यह सब 1992 के बार्सिलोना ओलंपिक खेलों के बाद बदल गया। शहर में बड़ा बदलाव आया और जिन चीज़ों में बदलाव हुआ, उनमें समुद्र का किनारा भी शामिल था, कहते हैं अरागोन, जो अधिवेशन की मेज़बान संगठन समिति (HOC) के अध्यक्ष हैं। इस पूरे इलाके को नए सिरे से तैयार किया गया, ताकि यह ज्यादा आकर्षक बन सके।

आज पोर्ट ओलंपिक में होटल, दुकानें, रेस्तरां, नाइटलाइफ़ और समुद्र तट हैं। अरागोन कहते हैं, वहां बस घूमते हुए पूरा दिन बिताना बहुत मजेदार है। हमारी बातचीत के बीच वेटर तपस लेकर आते हैं-स्पेन की मशहूर छोटी-छोटी प्लेटें, जिन्हें सब मिल-बांटकर खाते हैं। तले हुए आर्टिचोक, कैलामारी, मसल्स, धुएं जैसी खुशबू वाला बैंगन का डिप और नींबू के स्वाद वाली कच्ची मछली-मेज पर एक के बाद एक स्वादिष्ट चीज़ें आती जाती हैं।

धीरे-धीरे हमारी बातचीत शहर से निकलकर जंगली सूअरों से लेकर कॉफी की संस्कृति तक पहुंच

जाती है। अरागोन हंसते हुए कहते हैं, मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहना चाहता, लेकिन दुनिया में सबसे अच्छी कॉफी आपको दो जगह मिलती है-इटली और स्पेन में। सोरखूस, जो रोटरी इंटरनेशनल के पूर्व निदेशक और 2002 में HOC के अध्यक्ष रह चुके हैं-यानी पिछली बार जब रोटरी अधिवेशन बार्सिलोना में हुआ था-मुझसे सैंटियागो कैलात्रावा के बारे में सवाल करते हैं। यह वही स्पेनिश वास्तुकार हैं जिन्होंने मेरे गृहनगर मिलवॉकी के कला संग्रहालय में एक बेहद खूबसूरत पवेलियन बनाया है।बातचीत के बीच मैं समय-समय पर खाने का एक कौर लेती हूं और संतुष्टि से आह भरती हूं।

अरागोन कहते हैं कि जून में अधिवेशन में आने वाले रोटेरियंस के साथ बार्सिलोना के रोटरी सदस्य यही सब साझा करना चाहते हैं-खाना, संस्कृति और लोगों की गर्मजोशी। बार्सिलोना बहुत आकर्षक शहर है, वे कहते हैं। यह एक कॉस्मोपॉलिटन शहर है। यहां के लोग मिलनसार हैं, माहौल बेफिक्र है। भूमध्यसागरीय वातावरण और आसपास का खूबसूरत नज़ारा इसे घूमने के लिए बेहद खास जगह बनाते हैं। अरागोन ने अपना पहला रोटरी अधिवेशन 1990 में पोर्टलैंड, ओरेगन में अटेंड किया था। उन्हें रोटरी की विशालता को करीब से देखने और इतनी आसानी से नए लोगों से जुड़ पाने का मौका बेहद पसंद आया।

वह कहते हैं, आप ऐसी दोस्तियां शुरू करते हैं, जो फिर कई-कई साल तक कायम रहती हैं। खाना इतना भरपेट था कि अब पेट भरा हुआ है और नींद भी आने लगी है। स्पेन की एक और परंपरा-दोपहर की सिएस्ता, यानी थोड़ी देर की नींद-का आनंद लेने के बाद मैं शाम की सैर के लिए फिर समुद्र किनारे पहुंचती हूं। इस बार मैं बार्सिलोनेटा बीच के किनारे बने खूबसूरत प्रोमेनेड पर टहलती हूं। रास्ते के दोनों ओर खजूर के पेड़ हैं। कुछ लोग समुद्र तट पर चादर बिछाकर नज़ारे का आनंद ले रहे हैं, तो कुछ वॉलीबॉल खेल रहे हैं या दोस्तों के साथ फुटबॉल का मैच जमा चुके हैं।

सैकड़ों धावक तेजी से मेरे पास से गुजरते हैं। कोई झंडे लहरा रहा है, तो कोई पीठ पर लटकाए बूमबॉक्स से तेज संगीत बजा रहा है। मैं वहीं खड़ी होकर यह सब देखती रहती हूं। मन करता है कि मैं भी इनके साथ दौड़ पड़ूं। शहर की ऊर्जा मुझे अपने साथ बहा ले जाती है।

स्पेन में बुलफाइटिंग देश की सांस्कृतिक विरासत का कानूनी रूप से संरक्षित हिस्सा है, हालांकि इसका विरोध लगातार बढ़ रहा है। बार्सिलोना में आखिरी बुलफाइट 2011 में हुई थी, लेकिन आप शहर के इस इतिहास की एक झलक लास एरेनास दे बार्सिलोना जाकर पा सकते हैं। यह अधिवेशन स्थल से बार्सिलोना मेट्रो की कुछ ही स्टॉप की दूरी पर है।

यह बुलरिंग 1900 में खुला था और 1977 में यहां आखिरी बुलफाइट हुई। इसके बाद यह कई वर्षों तक खाली पड़ा रहा, फिर इसका जीर्णोद्धार कर इसे शॉपिंग सेंटर में बदल दिया गया। आज यहां दर्जनों दुकानें, एक सिनेमा और खाने-पीने की कई जगहें हैं।

हो सकता है कि आज हमें बुलरिंग, बुल्स और यह सब पसंद न हो, कहती हैं लाइया मारिन, जो रोटरी क्लब ऑफ बार्सिलोना की सदस्य और एक वास्तुकार हैं। उन्होंने इस इमारत के जीर्णोद्धार प्रोजेक्ट पर भी काम किया है। लेकिन यह हमारी संस्कृति और हमारा इतिहास था। हालांकि बुलफाइटिंग अब बार्सिलोना के अतीत का हिस्सा है, मारिन बताती हैं कि जून में होने वाले रोटरी अधिवेशन में वे कैटालोनिया की दूसरी परंपराओं को सामने लाने की तैयारी कर रहे हैं।

वह कहती हैं, हम एक ऐसा अधिवेशन आयोजित करने की योजना बना रहे हैं, जिसमें संस्कृति पर खास जोर होगा। यहां आने वाले रोटेरियंस के लिए कैटालान संस्कृति को करीब से जानना और उसका अनुभव करना आसान होगा। मारिन 2013 में रोटरी क्लब ऑफ बार्सिलोना से जुड़ी थीं। इससे पहले वह रोटरेक्टर रह चुकी थीं। उनका पहला रोटरी अधिवेशन 2019 में जर्मनी के हैम्बर्ग में हुआ था। वहां उन्हें

20वीं सदी की शुरुआत में पासेइग दे ग्रासिया मॉडर्निज़्म का केंद्र था।

सागरादा फमीलिया बेसिलिका

आर्क दे त्रिओम्फ के पास मोंक पैराकीट पक्षी।

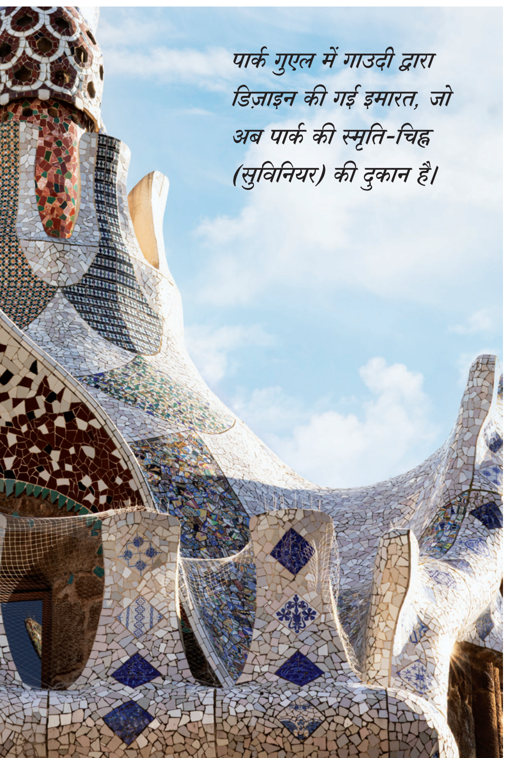

पार्क गुएल में गाउदी द्वारा डिज़ाइन की गई इमारत, जो अब पार्क की स्मृति-चिह्न (सुविनियर) की दुकान है।

अपने क्लब से आगे रोटरी में हो रहे तमाम कामों को जानने का मौका मिला। वह कहती हैं, जब आप किसी अंतरराष्ट्रीय अधिवेशन में होते हैं, तो आपको पता चलता है कि कहां-क्या अच्छा काम हो रहा है।

मारिन मुझे बुलरिंग की छत पर ले जाती हैं। यहां से पूरे शहर का 360 डिग्री का शानदार नज़ारा दिखाई देता है। छत पर ऐसे रेस्तरां भी हैं जहां आराम से बैठकर खाने के साथ इस खूबसूरत नज़ारे का आनंद लिया जा सकता है। मारिन बताती हैं कि बाहर से आने वाले रोटेरियंस को डिनर के लिए लाने की यह उनकी पसंदीदा जगहों में से एक है।यहां से आप सूर्यास्त देख सकते हैं, मोंटजुइक देख सकते हैं और भी बहुत कुछ, वह कहती हैं।

और अब हमारा अगला पड़ाव भी यही है-मोंटजुइक, जिसका अर्थ है 'यहूदियों का पहाड़'। मध्ययुग में यहां एक यहूदी कब्रिस्तान हुआ करता था, इसी वजह से इसे यह नाम मिला। यहां एक विशाल, हरे-भरे जंगल जैसा शहरी पार्क भी है। इसे 1929 की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए विकसित किया गया था और बाद में 1992 के ओलंपिक खेलों के लिए इसका नवीनीकरण किया गया। आज इसकी घुमावदार पगडंडियों पर चलते हुए आपको खेल परिसर, संग्रहालय, बगीचे और मोंटजुइक किला देखने को मिलेंगे।

लास एरेनास से हम प्लासा एस्पान्या के गोल चक्कर से आगे बढ़ते हैं। फव्वारों से सजी सड़क पर चलते हुए हम फोंट माजिका दे मोंटजुइक पहुंचते हैं। यह एक विशाल 'मैजिक फाउंटेन' है, जहां कुछ खास शामों में संगीत और रोशनी के साथ शानदार शो होते हैं। (मौजूदा कार्यक्रम और समय के लिए ऑनलाइन जानकारी जरूर देखें।) हालांकि दिन में भी यहां पेड़ों की छांव और फव्वारे से उठती ठंडी फुहारें गर्मियों की धूप से थोड़ी राहत देती हैं।

हम एस्केलेटर से ऊपर की ओर बढ़ते हैं। रास्ते में झरनों की एक श्रृंखला से गुजरते हुए हम म्यूज़ेउ नासियोनाल दफआर्ट दे कैटालोनिया की छत पर पहुंचते हैं। कला संग्रहालय के सामने सीढ़ियों पर बैठी भीड़ में आप भी शामिल हो सकते हैं और वहां से पूरे शहर का शानदार नज़ारा देख सकते हैं। यह इमारत मूल रूप से 1929 की प्रदर्शनी के लिए बनाया गया नेशनल पैलेस थी। यहीं पहुंचकर मुझे पहली बार एहसास होता है कि गाउदी की सागरादा फमीलिया वास्तव में कितनी विशाल है। नीचे फैली इमारतों के बीच से ऊपर उठता चर्च किसी दूसरी ही दुनिया का हिस्सा लगता है। इसे जानबूझकर मोंटजुइक से थोड़ा छोटा बनाया गया था और बार्सिलोना की कोई दूसरी इमारत इस चर्च से ऊंची नहीं है।

हम पार्क में यूं ही घूमते-घूमते आगे बढ़ते हैं और उन डाइविंग पूल्स तक पहुंचते हैं, जहां 1992 के बार्सिलोना ओलंपिक के दौरान स्प्रिंगबोर्ड डाइविंग प्रतियोगिताएं हुई थीं। उस समय यहां से छलांग लगाते ओलंपिक खिलाड़ियों की ऐसी कई तस्वीरें खींची गई थीं, जिनके पीछे बार्सिलोना का खूबसूरत स्काईलाइन नजर आता था। आज इस जगह को खुले आसमान के नीचे बने रेस्तरां साल्ट्स मोंटजुइक में बदल दिया गया है। हमारी मेज से भी

इस शानदार शहर के एक से बढ़कर एक खूबसूरत नज़ारे दिखाई देते हैं।

मेरे गोथिक क्वार्टर के गाइड अल्बर्ट टोरास भी हमारे साथ आ जाते हैं। आज वह बेहद सजे-धजे हैं, क्योंकि उन्हें उस फोटोग्राफी प्रदर्शनी के उद्घाटन में जाना है, जिसे आयोजित करने में उन्होंने मदद की है। अब हम एक और स्पेनिश परंपरा का हिस्सा बनने वाले हैं-ला होरा देल वेरमुत, यानी खाने से पहले का 'वर्मुत आवर'। मेरे लिए वर्मुत-एक तरह की फोर्टिफाइड वाइन-अब तक सिर्फ कॉकटेल में मिलाए जाने वाली चीज़ रही है। लेकिन स्पेन में इसे अपने आप भी पिया जाता है-बर्फ के साथ, सफेद या लाल-और साथ में हल्का-फुल्का खाने को कुछ दिया जाता है। टोरास मजाक में कहते हैं, आमतौर पर यह लंच से पहले, डिनर से पहले या जब आप सुबह उठें तब लिया जाता है। फिर मुस्कुराकर जोड़ते हैं-जब आपका मन करे!

मैं होटल में थोड़ी देर रुककर सांस लेती हूं और फिर अपने रोटरेक्ट के दोस्त अलेइक्स मार्तो रेय से दोबारा मिलती हूं, जिनसे पिछली शाम मेरी मुलाकात हुई थी। इस बार हमारा रुख पार्क गुएल की ओर है-गाउदी द्वारा डिजाइन की गई यह खूबसूरत सार्वजनिक जगह शहर के और भी शानदार विहंगम दृश्य दिखाती है। गाउदी के लंबे समय से संरक्षक रहे यूसेबी गुएल ने कभी अमीर परिवारों के लिए एक शानदार आवासीय कॉलोनी बनाने का सपना देखा था और इसके लिए गाउदी को डिजाइन तैयार करने की जिम्मेदारी दी। लेकिन यह योजना आर्थिक रूप से सफल नहीं हो सकी और प्रस्तावित 60 घरों में से सिर्फ दो ही बन पाए। गाउदी अपने पिता और भतीजी के साथ इनमें से एक मॉडल हाउस में रहते थे। गुएल की मृत्यु के बाद शहर ने इस पार्क को खरीद लिया।

फोंट माजिका दे मोंटजुइक, जो रात में रोशनी से जगमगा उठता है।

हमारे लिए तो यह अच्छी बात ही रही, क्योंकि आज जो कुछ यहां बचा है, वह किसी डिज्नी फिल्म की जादुई दुनिया जैसा लगता है। पार्क की सबसे ज्यादा तस्वीरें खींची जाने वाली जगह है-एल ड्राक, यानी कैटालान भाषा में 'ड्रैगन' कहलाने वाली मोज़ेक से बनी एक बड़ी छिपकली। यह मुख्य प्रवेश द्वार पर बनी दोहरी सीढ़ियों के बीच में स्थित है। लेकिन मुझे सबसे ज्यादा पसंद आती है इसके ऊपर की छत। यहां समुद्री सांप के आकार की एक लंबी, रंग-बिरंगे मोज़ेक टाइलों से सजी बेंच है, जो पूरे चौक के किनारे-किनारे घूमती हुई नजर आती है।गाउदी ने टूटे हुए सिरेमिक या कांच के टुकड़ों से बने इस खास मोज़ेक स्टाइल को लोकप्रिय बनाया था। इसे ङ्त्रेंकादिसफ कहा जाता है-और यही शैली 2027 रोटरी अधिवेशन के लोगो की प्रेरणा भी बनी है।

हर मोड़ पर कुछ नया और हैरान कर देने वाला दिखता है-परीकथा जैसे पत्थर के पुल! कैंडी लैंड से निकले लगने वाले छोटे-छोटे घर! मैं हर चीज़ देखकर 'वाह' और 'कमाल' करती आगे बढ़ती हूं।मैं मार्तोरेय से पूछती हूं कि आखिर बार्सिलोना के लोग गाउदी को लेकर क्या महसूस करते हैं। क्या उन्हें यह सब पसंद है या वे इस बात से थक चुके हैं कि शहर की पहचान हमेशा गाउदी के नाम से ही जोड़ी जाती है? वह मुझे भरोसा दिलाते हैं कि गाउदी की कला शहर की पहचान का एक ऐसा हिस्सा है, जिसे लोग खुशी से अपनाते हैं।

वह कहते हैं, लोगों को इस पर बहुत गर्व है। शाम ढलने लगती है और हम टोपी के रूफटॉप बार की ओर निकल पड़ते हैं। बहाना है शहर के खूबसूरत नज़ारे और पास की टॉरे ग्लोरियेस की सूर्यास्त के समय तस्वीरें लेना। यह अचार जैसी आकृति वाली गगनचुंबी इमारत रात में रोशनी से जगमगा उठती है। संगीत की धुनें गूंज रही हैं और लड़ियों में लगी रोशनियां मेजों को जगमगा रही हैं। अब बारी है जाम उठाने की-बार्सिलोना में एक और दिन के नाम, और उस शहर के नाम जो जितना शानदार है, उतना ही जादुई भी।

चित्र: मोनिका लोर्ज़िंस्का

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

‘वूमन ऑन व्हील्स’ से महिलाओं को रोजगार

बेंगलुरु ग्रामीण जिले के वंचित परिवारों की चार महिलाओं को ‘वूमन ऑन व्हील्स’ (WoW) पहल के तहत ई-ऑटो दिए गए। रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड, रो ई मंडल 3191 और ITC फिल्ट्रोना की इस CSR पहल की लागत ₹16 लाख है। इसका उद्देश्य महिलाओं को टिकाऊ रोजगार देकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना और पुरुष-प्रधान परिवहन क्षेत्र में बनी रूढ़ियों को तोड़ना है।

ई-ऑटो मिलने के बाद रोटेरियनों के साथ लाभार्थी महिलाएँ।

मोबाइल डेंटल क्लिनिक

रोटरी क्लब अगरतला सिटी, रो ई मंडल 3240 ने अपना पहला ग्लोबल ग्रांट प्रोजेक्ट शुरू करते हुए रामकृष्ण मिशन, अगरतला को एक मोबाइल डेंटल क्लिनिक सौंपा। नेपाल के रोटरी क्लब विराटनगर डाउनटाउन, रो ई मंडल 3292 ने इंटरनेशनल पार्टनर के रूप में सहयोग किया। क्लिनिक ने महाराजा बीर बिक्रम यूनिवर्सिटी में पहली आउटरीच के दौरान 65 लोगों की निःशुल्क दंत जाँच की।

क्लब सदस्य अस्पताल प्रबंधन को मोबाइल डेंटल क्लिनिक सौंपते हुए।

स्कूल का कायाकल्प

रोटरी क्लब कलकत्ता कांकुड़गाछी, रो ई मंडल 3291 ने अपने रोटरी क्लब कलकत्ता कांकुड़गाछी वेलफेयर ट्रस्ट के जरिए बाँकुड़ा के विवेकानंद रोटरी शिशु शिक्षानिकेतन में *ज्ञानालोक आगामी* (ज्ञान का प्रकाश) प्रोजेक्ट का पहला चरण पूरा किया। इसके तहत कक्षाओं का नवीनीकरण, नए खेल उपकरण और स्कूल परिसर का सौंदर्यीकरण किया गया।

स्कूल में लगाए गए नए झूले के सामने क्लब सदस्य।

दृष्टिबाधितों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण

रोटरी क्लब पुणे हेरिटेज, रो ई मंडल 3131 ने समृद्धि डेवलपमेंट ट्रस्ट के सहयोग से 35 दृष्टिबाधित लोगों को 15 दिवसीय कोर्स में प्रोफेशनल थेरेप्यूटिक मसाज का प्रशिक्षण दिया। प्रत्येक प्रतिभागी को स्टार्टर किट भी दी गई। इस पहल की कुल लागत ₹1.5 लाख रही।

प्रशिक्षण सत्र जारी।

Bricks that stay: RID 3141
97 years of Rotary in Mumbai. Zero dedicated Rotary hospitals.

The year in numbers

Through TRF
$10.5 million from district projects totalling $35 million

CSR India grants
$16 million plus $6 million in cash contributions

The 4 hospitals
Nearly $4 million — ₹36 to ₹37 crore

New corporate partners
Nearly 30, none had worked with Rotary before

The ask to every club
One CSR India grant of $21,000, up from 14 or 15 participating clubs

One club, one family
$1.61 million RC Bombay, driven by Vijay Jatia and lhis sons

One appeal, one donor
$200,000 by Taizoon Khorakiwala, RC Bombay Worli

Arch Klumph Society members
Over 18 from the district this year (2025–26)

Executed by one Rotarian
35 CSR India grants, 2 global grants — Suhit Jhaveri, RC Bombay Pier

Where the district finished
No 1 in the world top 30 TRF-giving districts, RY 2025–26

रो ई मंडल 3141 और 3000 ने भारत को दिलाई शीर्ष पहचान

नम्रता श्रीवास्तव

मोटवानी के नेतृत्व में रो ई मंडल 3141 ने रचा इतिहास

आईपीडीजी मनीष मोटवानी के नेतृत्व में रो ई मंडल 3141 ने TRF के लिए 45 मिलियन का योगदान देकर भारत को दुनिया में दूसरे स्थान पर पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई। 2025-26 का यह रोटरी वर्ष भारत के लिए गर्व से याद किया जाएगा। उनके मंडल ने चार समर्पित रोटरी अस्पताल बनाए, TRF के जरिए 10.5 मिलियन की राशि जुटाई और दुनिया के शीर्ष 30 TRF योगदान देने वाले मंडलों में पहला स्थान हासिल किया।

यह उपलब्धि रोटरी क्लब बॉम्बे पियर के अध्यक्ष नूपुर देसाई, कुशल देसाई और सुन्लि मेहरा के सहयोग से संभव हुई, जिन्होंने दो अस्पतालों और कार्डियक पैथ लैब्स के लिए समर्थन दिया। मोटवानी बताते हैं कि सुहित झवेरी ने एक वन-मैन मशीन की तरह काम किया और 35 CSR India ग्रांट तथा दो GG को जमीन पर उतारा। अध्यक्ष बिमल मेहता के नेतृत्व में रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे से पीडीजी संदीप अग्रवाला और विजय जटिया भी इस मुहिम से जुड़े। जटिया और उनके बेटों ने AKS सदस्यों के रूप में 1.61 मिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया।

इससे पहले केवल 14-15 क्लब ही CSR India ग्रांट हासिल कर पाए थे। पिंक ऑटो, वोकेशनल सेंटर, स्कूलों के नवीनीकरण और गौशालाओं जैसे तैयार प्रोजेक्ट मॉडल क्लबों के सामने रखे गए और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इस पूरे सफर में उन्हें सबसे ज्यादा मजबूती अपनी साथी डॉ माहेक मोटवानी से मिलीं, जिन्हें वे अपना लगातार विचार-विमर्श करने वाला साथी बताते हैं।

CSR India ग्रांट से 16 मिलियन डॉलर जुटाए गए, जबकि 6 मिलियन डॉलर नकद योगदान भी

आया। एक ही अपील के जरिए रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली के तैज़ून खोराकीवाला ने 200,000 डॉलर का योगदान दिया। चार प्रमुख परियोजनाओं-दो हार्ट हॉस्पिटल, एक कैंसर अस्पताल और एक आई हॉस्पिटल-के लिए करीब 4 मिलियन डॉलर जुटाए गए।

मोटवानी मानते हैं कि उनके मार्गदर्शक सितारे रो ई निदेशक के पी नागेश थे, जिनकी सोच स्पष्ट थी। उनके बाद TRF ट्रस्टी भारत पांड्या ने शुरुआती दौर में इस मॉडल पर भरोसा किया और समर्थन दिया। उनकी कोर टीम में के के चौधरी, किशोर पारेख, सौरभ सोनावाला, कंडेरप, दीपक चौधरी, रवि जसवानी, भगवान पाटिल और मोनिका ग्रोवर शामिल थे।

लेकिन बिमल मेहता के नेतृत्व में रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे खुद इस मुहिम का मजबूत केंद्र बन गया। निकुंज झवेरी ने लॉजिस्टिक्स संभाला, जबकि योगेश ज़वेरी ने योगदान के वादों का सिलसिला जारी रखा। मीना चौधरी ने बारीकियों पर नजर रखी, वहीं तहमीना और कंडेरप खंडवाला ने जमीनी स्तर पर काम किया। बीना और परेश दत्तानी, भारत और नीलिमा झुनझुनवाला तथा स्मिता पारेख ने केवल योगदान ही नहीं दिया, बल्कि इन वादों को स्थायी अस्पतालों में बदलने में भी अहम भूमिका निभाई।

मुंबई के दूसरे क्लब भी इस मुहिम से जुड़ते गए। रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली, डॉ पाउला गोयल के नेतृत्व में; रोटरी क्लब बॉम्बे बेव्यू, सोनाली शाह के नेतृत्व में, जिनके साथ उर्वी मोदी और विद्या मोरजानी ने सहयोग किया; रोटरी क्लब मुंबई रॉयल्स, दीपिका शारदा के नेतृत्व में; रोटरी क्लब क्वीन्स नेकलेस, अपूर्वा शाह के नेतृत्व में, जिनके साथ संजीव मेहता जुड़े; रोटरी क्लब बॉम्बे क्वीन सिटी, जहाँ सोनल अग्रवाल ने CSR ग्रांट्स को समर्थन दिया; और रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे सेंट्रल, जहाँ फैनी और आशीष मेहता ने आगे योगदान दिया।

रो ई मंडल 3000 सदस्यता में दुनिया में नंबर 1

एक ही रोटरी वर्ष में 47 नए रोटरी क्लब, 53 रोटरेक्ट क्लब, 232 इंटरेक्ट क्लब, 1,800 से अधिक रोटेरियनों की शुद्ध वृद्धि और 5,000 से अधिक नए रोटरेक्टर। इन उपलब्धियों के साथ डीजी जे कार्तिक के नेतृत्व वाला रो ई मंडल 3000 2025-26 में सदस्यता वृद्धि के मामले में दुनिया का नंबर 1 मंडल बना।

तीसरी पीढ़ी के रोटेरियन कार्तिक बताते हैं कि उन्हें इसकी पहली प्रेरणा *रोटरी न्यूज़* में प्रकाशित रोटरी क्लब चेन्नई आइकॉन्स पर एक लेख से मिली। इस क्लब की शुरुआत 225 सदस्यों के साथ हुई थी। उन्होंने यह विचार रोटेरियन विजयालयन के साथ साझा किया और दोनों ने इससे भी बड़ा लक्ष्य तय किया। उन्होंने 415 सदस्यों के साथ रोटरी क्लब ऑफ तिरुचिरापल्ली सक्सेस का चार्टर कराया। कार्तिक कहते हैं, इसने यह सोच बदल दी कि क्या संभव है और क्या नहीं।

मंडल ने यह उपलब्धि कैसे हासिल की, इस पर वे कहते हैं, हमने हर मौजूदा रोटरी क्लब के लिए 1:2:3-एक नया रोटरी क्लब, दो रोटरेक्ट और तीन इंटरेक्ट क्लब-का नियम नहीं थोपा। हमने इसे एक नए तरीके से पेश किया। क्लबों को असेंबली लाइन का हिस्सा नहीं, बल्कि आर्किटेक्ट बनाया।

फोकस बड़े लक्ष्य को छोटे और आसान कदमों में बाँटने पर रहा। जब आप 50 या 100 नए क्लबों का लक्ष्य देखते हैं, तो वह बहुत बड़ा लग सकता है। लेकिन अगर हर मौजूदा रोटरी क्लब एक या दो नए क्लब शुरू करने की जिम्मेदारी ले, तो कुल लक्ष्य हासिल करना कहीं आसान हो जाता है।

इस तरीके ने उन क्लबों को भी नई ऊर्जा दी, जिनकी रफ्तार कम हो गई थी। उदाहरण के लिए, रोटरी क्लब ट्रिची डायनेमिक में कभी 24 सदस्य थे, लेकिन सक्रिय सदस्यों की संख्या घटकर 12 रह गई थी। इन 12 सदस्यों ने आगे चलकर एक नया क्लब शुरू किया। कार्तिक कहते हैं, बदला उनका नजरिया। कई बार कोई क्लब सदस्य जोड़ने से नहीं, बल्कि नेतृत्व करने का आत्मविश्वास वापस पाने से दोबारा मजबूत होता है।

मंडल ने कोई बिल्कुल नया फॉर्मूला बनाने की कोशिश नहीं की। कार्तिक कहते हैं, एक दिशा का विचार मेरे साथ रहा-पीआरआईपी शेखर मेहता का *'Each One, Bring One'* यही मंडल की सदस्यता रणनीति का केंद्र बना।

यह पूरी कोशिश सामूहिक थी। रो ई निदेशकों के पी नागेश और एम मुरुगानंदम के मार्गदर्शन में, मंडल लर्निंग फैसिलिटेटर पीडीजी पी गोपालकृष्णन के नेतृत्व में रणनीति तैयार हुई। सदस्यता चेयरमैन शनमुगवेल और उनकी टीम, रीजनल कोऑर्डिनेटर्स तथा असिस्टेंट गवर्नर्स ने इसे आगे बढ़ाया। कार्तिक

RID 3000: World's #1 district for membership growth, 2025–26

- 47 new Rotary clubs
- Net gain 1,800+ Rotarians
- 53 new Rotaract clubs
- 5,000+ Rotaractors
- 232 new Interact clubs
- 200+ new Women Rotarians
- ₹85 crore in district projects

Largest charters

- Tiruchirappalli Success (415)
- Pudukkottai Perarasu (471)

आईपीडीजी मनीष मोटवानी (बाएँ से सातवें), उनके बाईं ओर पीआरआईपी फ्रांसेस्को अरेज़ो के साथ रो ई मंडल 3141 के रोटेरियन।

आईपीडीजी जे कार्तिक (दाएँ से तीसरे), रोटरी क्लब ऑफ पुदुक्कोट्टई पेरारसु के चार्टर समारोह में।

कहते हैं कि इतनी बड़ी उपलब्धि इसलिए संभव हुई क्योंकि जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति पर नहीं डाली गई। "DREAM Dozen+', "RAG Analysis' और "1AG1 new club - 25 new members' जैसे अभियानों ने बड़े लक्ष्यों को ठोस कदमों में बदल दिया।

महिला सदस्यता में 200 से अधिक की वृद्धि हुई। मुरुगराज के नेतृत्व में रोटरी क्लब ऑफ पुदुक्कोट्टई पेरारसु ने 471 सदस्यों के साथ चार्टर हासिल किया।

लेकिन कार्तिक के अनुसार, सदस्यता बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। लोगों को रोटरी से जोड़ना ही जिम्मेदारी का अंत नहीं है। हमें उन्हें रोटरी से जुड़े रहने के कारण भी देने होंगे।

मंडल ने ₹85 करोड़ के प्रोजेक्ट किए, एक 'बिज़नेस RYLA' और कई ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किए। अपने उत्तराधिकारी के लिए कार्तिक का संदेश सरल है: ऐसा कुछ बनाइए, जिसे अगला व्यक्ति आगे बढ़ाना चाहे-न कि ऐसा जिसे उसे आपसे बेहतर बनाने के लिए मजबूर होना पड़े।

लेखक रोटरी क्लब हिरानंदानी एस्टेट, रो ई मंडल 3141 के पूर्व अध्यक्ष हैं।

2027 कन्वेंशन

सबसे अलग, सबसे खास

रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन जैसा अनुभव आपको कहीं और नहीं मिलेगा। आखिर और कहाँ आपको एक ही मंच पर ग्रैमी पुरस्कार विजेता गायक और नोबेल पुरस्कार विजेताओं को देखने का मौका मिलेगा? 26-30 जून को स्पेन के बार्सिलोना में होने वाले कन्वेंशन में एक बार फिर ऐसी ही शानदार हस्तियों की मौजूदगी होगी। साथ ही, दुनिया भर से आए सेवा के लिए समर्पित रोटेरियनों से जुड़ने और नए दोस्त बनाने के ढेरों मौके भी मिलेंगे।

इस साल ताइपेई में पहली बार कन्वेंशन में शामिल हुए विनय गांधी बिलापति कहते हैं, कन्वेंशन में बनने वाली दोस्तियाँ, मिलने वाले नए विचार और मिलने वाली प्रेरणा जीवनभर आपके साथ रहती है। उनके लिए इस अनुभव को यादगार बनाने वाली कुछ खास बातें:

- शानदार स्वागत। जैसे ही हम पहुँचे, हमें बेहतरीन मेहमाननवाजी का अनुभव हुआ। स्वयंसेवकों ने गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया और हर कदम पर मार्गदर्शन दिया। उनकी आत्मीयता और मदद करने की तत्परता ने मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ी।
- प्रेरणा से भरा माहौल। ब्रेकआउट सेशन, जनरल सेशन, हाउस ऑफ फ्रेंडशिप, रोटरी पीस पार्क और रोटरी एक्शन ग्रुप्स की प्रदर्शनियाँ मेरी कल्पना से कहीं बढ़कर थीं। हर जगह कुछ नया सीखने, लोगों से जुड़ने और प्रेरित होने के अवसर थे।

- रोटरी के खास लोगों से मुलाकात। मेरा एक सपना पूरा हुआ-2024-25 की रोटरी अध्यक्ष स्टेफनी उरचिक के साथ फोटो खिंचवाने का।
- जुड़ाव। ओपनिंग सेरेमनी में हुई 'परेड ऑफ फ्लैग्स' ने रोटरी की वैश्विक भावना को बखूबी दिखाया। हर रोटेरियन ने एक-दूसरे का गर्मजोशी से स्वागत किया। रोटरी वह साझा भाषा थी, जिसने हम सभी को एक-दूसरे से जोड़ दिया।
- एक नई सोच। कन्वेंशन मेरे रोटरी सफर के सबसे यादगार और संतोषजनक अनुभवों में से एक रहा। इससे मेरा विश्वास और मजबूत हुआ कि रोटरी सिर्फ एक संगठन नहीं है-यह सेवा और मित्रता के रिश्ते से जुड़ा एक वैश्विक परिवार है। अब मैं अपने अगले कन्वेंशन का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ।

रजिस्ट्रेशन 17 सितंबर से शुरू होगा। कन्वेंशन की वेबसाइट पर जानकारी देखें: https://convention.rotary.org/en-us/

ADVT.

Purposeful Living and Thoughtful Retirement

2 Award-Winning Books for Life After 55 — from a Rotarian, Since 1990 (RI Dist 3131)

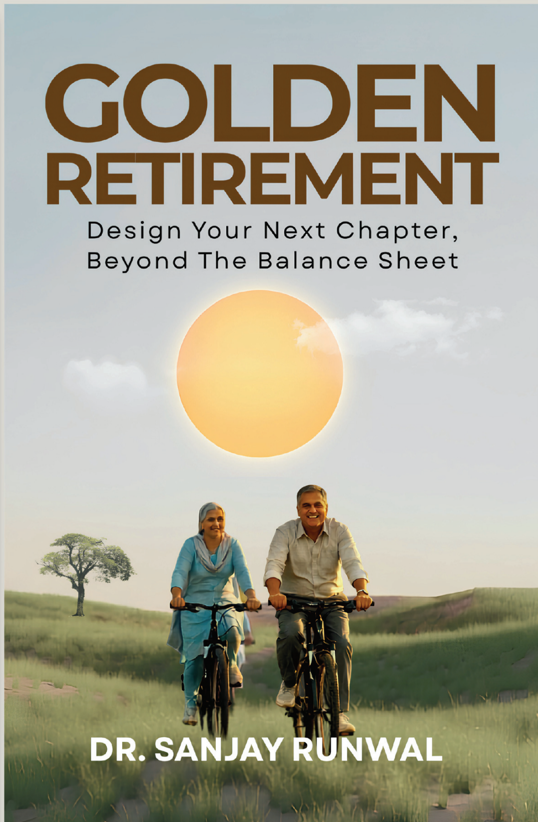

THE TWO BOOK COMBO: How to Live Life? SBOP Living and Golden Retirement offer a complete perspective on life after 55 — guiding you to **Retire, Rewire, and Refire** with Purpose, Balance, and Fulfillment with **DGL (Doing Good in Life)** at the heart of your life.

Special Rotary Offer: Get **15%** off on the already discounted price of **₹ 945** by entering Discount Code **ROTARY.**
(Offer Valid until December15, 2026 on all book combos)
Order your copies online at: **www.drsanjayrunwal.com** or Scan the QR code for direct access.

SANJAY RUNWAL FOUNDATION
Supporting Humanity

Contact us at: **Sanjay Runwal Foundation**, 1st Floor, Shantiprasad Apartment, Above Punarvasu Chikitsalay, Model Colony Road, Pune - 411 016. email: sanjayrunwalfoundation@gmail.com

द रोटरी फाउंडेशन के ट्रस्टी, 2026-27

द रोटरी फाउंडेशन के ट्रस्टी फाउंडेशन के कामकाज का संचालन करते हैं। यह रोटरी की परोपकारी संस्था है, जो सेवा गतिविधियों के लिए धन उपलब्ध कराती है। रो ई अध्यक्ष-निर्वाचित ट्रस्टियों के लिए नामांकन करते हैं और रो ई बोर्ड उन्हें चार साल के कार्यकाल के लिए चुनता है। चार नए ट्रस्टी 1 जुलाई से अपना कार्यभार संभालते हैं।

जेनिफर जोन्स

अध्यक्ष 2026-27
ट्रस्टी 2023-27
रोटरी क्लब विंडसर-रोज़लैंड, ओंटारियो

जेनिफर जोन्स ने 2022-23 में रो ई अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। रोटरी की स्थापना के 117 साल बाद इस पद के लिए चुनी जाने वाली वह पहली महिला बनीं। संचार क्षेत्र की अनुभवी पेशेवर जेनिफर, ओंटारियो के विंडसर में पुरस्कार विजेता मीडिया कंपनी मीडिया स्ट्रीट प्रोडक्शंस इंक. की संस्थापक हैं।

रो ई अध्यक्ष के रूप में जेनिफर ने इमैजिन इम्पैक्ट टूर की शुरुआत की। इसका उद्देश्य दुनिया भर में रोटरी की टिकाऊ और बड़े पैमाने पर चल रही परियोजनाओं की कहानियों को सामने लाना था। इस टूर से जुड़े संदेश 1.3 अरब से अधिक लोगों तक पहुंचे। वह फंड जुटाने के नए अवसर तैयार करने में भी अग्रणी रही हैं। गोल्फ कार्यक्रम भी शामिल है, जिसने एक ही दिन में पोलियो उन्मूलन के लिए 5.25 मिलियन डॉलर से अधिक जुटाए।

जेनिफर को रो ई का सर्विस अबव सेल्फ पुरस्कार, द रोटरी फाउंडेशन का साइटेशन फॉर मेरिटोरियस सर्विस और सिल्विया व्हिटलॉक लीडरशिप अवॉर्ड मिल चुका है। उनके पास यूनिवर्सिटी ऑफ विंडसर और क्वीन्स यूनिवर्सिटी से डॉक्टर ऑफ लॉज़ की मानद उपाधियां हैं। वह फैमिली फिजिशियन निक क्रायासिच से विवाहित हैं। दोनों की रोटरी, यात्रा, साइकिलिंग, गोल्फ और अपने परिवार के कॉटेज में सुकून के पल बिताने में खास दिलचस्पी है।

गॉर्डन आर मेकिनली

अध्यक्ष-निर्वाचित 2026-27, ट्रस्टी 2024-28
रोटरी क्लब साउथ क्वींसफेरी, स्कॉटलैंड

गॉर्डन मेकिनली ने एडिनबर्ग के रॉयल हाई स्कूल और डंडी यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त की, जहां उन्होंने डेंटल सर्जरी में स्नातक डिग्री हासिल की। वह इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ डेंटिस्ट्स के फेलो हैं और 2016 तक एडिनबर्ग में अपनी डेंटल प्रैक्टिस चलाते रहे। मेकिनली ब्रिटिश पीडोडॉन्टिक सोसाइटी की ईस्ट ऑफ स्कॉटलैंड शाखा के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

मेकिनली 1984 में, 26 साल की उम्र में, रोटरी से जुड़े। उन्होंने 2023-24 में रो ई अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और RIGBI के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष भी रहे। वह रो ई निदेशक के रूप में भी सेवा दे चुके हैं और कई समितियों में जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं। उन्होंने इस संस्था और RIGBI के बीच साझेदारी का नेतृत्व किया, जिसके तहत 1994 के नरसंहार में अनाथ हुए रवांडा के बच्चों की मदद की गई। वह ट्रेड-एड के भी संरक्षक हैं। यह इंग्लैंड के रोटरी क्लब ग्रांथम कैस्टेवन की एक पहल है, जो मानवीय सहायता उपलब्ध कराती है।

वह और उनकी पार्टनर हीदर, दोनों पॉल हैरिस फेलो, मेजर डोनर्स, द रोटरी फाउंडेशन के बेनिफैक्टर्स और बेक्वेस्ट सोसाइटी के सदस्य हैं।

विकी पुलिज़

उपाध्यक्ष 2026-27, ट्रस्टी 2025-29
रोटरी क्लब स्पार्क्स, नेवाडा

विकी पुलिज़ ने यूनिवर्सिटी ऑफ यूटा से मार्केटिंग में स्नातक डिग्री और एमबीए किया। इसके बाद 1984 में वह नेवाडा की एक इलेक्ट्रिकल कंपनी में पार्टनर बनीं। उन्होंने कारोबार का विस्तार किया और 2003 में इसे एक शेयर बाजार में सूचीबद्ध कंपनी के साथ मिला दिया।

1992 में रोटरी से जुड़ने के बाद उन्होंने रो ई निदेशक, लर्निंग फैसिलिटेटर और RIPC के रूप में सेवा की। वह रोटरी पीस सेंटर्स कमेटी की सदस्य हैं और इंग्लैंड के ब्रैडफोर्ड तथा इस्तांबुल के पीस सेंटर्स में आयोजित कार्यक्रमों में भी हिस्सा ले चुकी हैं। विकी और उनके पति टिम, जो खुद भी रोटेरियन हैं, नेवाडा के रेनो में रहते हैं। उनके परिवार में कुल सात बच्चे, 12 पोते-पोतियां और रोटरी यूथ एक्सचेंज (RYE) की तीन बेटियां हैं।

दोनों को सिएरा नेवाडा के पहाड़ों में आउटडोर गतिविधियों का आनंद लेना पसंद है। वे दोनों इंटरनेशनल फेलोशिप ऑफ फ्लाइंग रोटेरियंस के सदस्य हैं। इसके अलावा वे AKS, पॉल हैरिस सोसाइटी, बेक्वेस्ट सोसाइटी और पोलियोप्लस सोसाइटी के भी सदस्य हैं।

फ्रांसेस्को अरेज़ो

ट्रस्टी 2026-30
रोटरी क्लब रागूसा, इटली

फ्रांसेस्को अरेज़ो ऑर्थोडॉन्टिस्ट हैं और सिसिली में एक कृषि उद्यम भी चलाते हैं, जहां एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑयल का उत्पादन होता है। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ पाडुआ और यूनिवर्सिटी ऑफ कैग्लियारी से शिक्षा प्राप्त की, जहां उन्होंने लिंगुअल ऑर्थोडॉन्टिक्स में मास्टर्स किया। वह इटली, यूरोप और अमेरिका की ऑर्थोडॉन्टिक्स एसोसिएशनों के सदस्य हैं।

अरेज़ो ने 2025-26 में रो ई अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह 1991 से रोटरी के सदस्य हैं। उन्होंने जॉइंट स्ट्रैटेजिक प्लानिंग कमेटी के उपाध्यक्ष, रो ई निदेशक और लर्निंग फैसिलिटेटर के रूप में सेवा दी है। वह फोंदाजियोने रोटरी इटालिया के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। उनके कार्यकाल में इतालवी नागरिकों के लिए रो ई की परियोजनाओं में सहयोग करना और आसान हुआ।

अरेज़ो की पार्टनर अन्ना मारिया क्रिस्चियोने पर्यटन क्षेत्र में उद्यमी हैं। उनकी दो बेटियां और दो पोते-पोतियां हैं। फ्रांसेस्को और अन्ना फाउंडेशन के बेनिफैक्टर्स और मेजर डोनर्स हैं। अरेज़ो को शास्त्रीय संगीत पसंद है, खासकर सिसिली के ओपेरा संगीतकार विंचेंजो बेलिनी का संगीत।

ऐन-ब्रिट ओसेबोल

ट्रस्टी 2024-28

रोटरी क्लब फालुन-कोप्पारवोगेन, स्वीडन

ऐन-ब्रिट ओसेबोल 2022 में स्वीडन की संसद रिक्सडाग से सेवानिवृत्त हुईं। इससे पहले वह कई कार्यकाल तक डालार्ना काउंटी की काउंटी काउंसलर रहीं। राजनीति में आने से पहले उन्होंने शिक्षक, प्रिंसिपल और फालुन के टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में प्रशिक्षक के रूप में काम किया, जहां से उन्होंने स्वयं भी शिक्षा प्राप्त की थी। बाद में उन्होंने एक निजी सेकेंडरी स्कूल की स्थापना की और उसकी सीईओ रहीं। उनके पास उप्साला यूनिवर्सिटी से स्वीडिश और इतिहास में मास्टर्स डिग्री है।

ऐन 1993 में अपने रोटरी क्लब की पहली महिला सदस्य के रूप में रोटरी से जुड़ीं। उन्होंने रोटरी में लर्निंग फैसिलिटेटर और रीजनल रो ई मेंबरशिप कोऑर्डिनेटर के रूप में सेवा दी है। इसके अलावा वह रो ई निदेशक भी रह चुकी हैं और विभिन्न रो ई समितियों में उपाध्यक्ष या अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाल चुकी हैं।

उन्हें स्कीइंग, इतिहास से जुड़ी किताबें पढ़ना, बागवानी करना और अपने पांच पोते-पोतियों के साथ समय बिताना पसंद है।

वह द रोटरी फाउंडेशन की बेनिफैक्टर, मेजर डोनर, मल्टीपल पॉल हैरिस फेलो और पॉल हैरिस सोसाइटी की सदस्य हैं। उन्हें साइटेशन फॉर मेरिटोरियस सर्विस से भी सम्मानित किया जा चुका है।

सिंथिया डब्ल्यू कोविंगटन

ट्रस्टी 2026-30

रोटरी क्लब साउथ जैक्सनविल, फ्लोरिडा

सिंडी कोविंगटन मॉन्यूमेंट लीजिंग कॉर्प. की सीईओ हैं। यह परिवार द्वारा संचालित रियल एस्टेट कंपनी है। ट्रस्टी के रूप में अपनी भूमिका में वह 40 से अधिक वर्षों के कारोबारी और वित्तीय योजना के अनुभव को साथ लेकर आती हैं। सिंडी 1999 में रोटरी से जुड़ीं, जब एक दोस्त ने उन्हें एक नए रोटरी क्लब में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने रोटरी में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाली हैं, जिनमें स्ट्रैटेजिक प्लानिंग कमेटी की अध्यक्ष, CDC फाउंडेशन के पोलियो एराडिकेशन हीरोज फंड में रोटरी प्रतिनिधि, लर्निंग फैसिलिटेटर और एंड पोलियो नाउ कोऑर्डिनेटर शामिल हैं।

निकारागुआ में उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर पानी की पाइपलाइन बिछाने के लिए खाइयां खोदने में काम किया। उन्हें द रोटरी फाउंडेशन का 'डिस्टिंग्विश्ड सर्विस अवॉर्ड', 'साइटेशन फॉर मेरिटोरियस सर्विस' और पोलियो-मुक्त दुनिया के लिए रो ई का 'सर्विस अवॉर्ड' मिल चुका है।

सिंडी और उनके पति बैरी, जो तीसरी पीढ़ी के रोटेरियन हैं, को यात्रा करना और प्रकृति के बीच समय बिताना पसंद है। दोनों कई रोटरी यूथ एक्सचेंज (RYE) विद्यार्थियों की मेज़बानी कर चुके हैं। यह दंपति मेजर डोनर्स हैं और पॉल हैरिस सोसाइटी, पोलियोप्लस सोसाइटी और बेक्वेस्ट सोसाइटी के सदस्य हैं।

फ्रैंक चिंग-हुई हॉन्ग

ट्रस्टी 2024-28

रोटरी क्लब पंचियाओ वेस्ट, ताइवान

फ्रैंक हॉन्ग ट्रोजन ऑर्थोडॉन्टिक क्लिनिक के प्रमुख हैं, जिसकी स्थापना उन्होंने 1988 में की थी। उन्होंने ताइपे मेडिकल यूनिवर्सिटी से डॉक्टर ऑफ डेंटल सर्जरी की डिग्री और यूनिवर्सिटी ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया से क्रैनियोफेशियल बायोलॉजी में मास्टर्स डिग्री हासिल की है।

हॉन्ग ताइवान में ऑर्थोडॉन्टिस्टों से जुड़े कई पेशेवर संगठनों में नेतृत्व की जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। वह पैन-चियाओ प्राइमरी स्कूल में 30 से अधिक वर्षों से स्कूल डेंटिस्ट भी हैं। 1993 में वह अपने रोटरी क्लब के चार्टर सदस्य के रूप में रोटरी से जुड़े। उन्होंने न्यू ताइपेई सिटी के प्राथमिक स्कूलों के लिए फुलक्रम एजुकेशन स्कॉलरशिप प्रोजेक्ट शुरू करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

द रोटरी फाउंडेशन के कैडर ऑफ टेक्निकल एडवाइजर्स के सदस्य के रूप में उन्होंने बाली और ताइवान के क्रैनियोफेशियल सर्जनों को आपस में जोड़ा। उन्होंने एक ग्लोबल ग्रांट पहल के तहत मंगोलिया में व्यावसायिक प्रशिक्षण टीम का नेतृत्व भी किया, जिसमें 360 मंगोलियाई स्वास्थ्यकर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया।

हॉन्ग को हाइकिंग और गोल्फ पसंद है। उनकी पार्टनर शु-यान चुआंग भी पंचियाओ वेस्ट रोटरी क्लब की सदस्य हैं। हॉन्ग और चुआंग AKS के सदस्य हैं। हॉन्ग को 'सर्विस अबव सेल्फ' अवॉर्ड और द रोटरी फाउंडेशन का 'साइटेशन फॉर मेरिटोरियस सर्विस' मिल चुका है।

चुन-वूक ह्यून

ट्रस्टी 2023-27

रोटरी क्लब सियोल-हानसू, कोरिया

चुन-वूक ह्यून एशिया की सबसे बड़ी लॉ फर्मों में से एक, सियोल स्थित किम एंड चांग, में सीनियर पार्टनर हैं। वह 1981 से फर्म के लेबर एंड एम्प्लॉयमेंट प्रैक्टिस ग्रुप के प्रमुख के रूप में काम कर रहे हैं। जेजू द्वीप प्रांत में जन्मे और पले-बढ़े ह्यून ने सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री हासिल की और 1978 में कोरियाई बार में शामिल हुए। उन्होंने हार्वर्ड लॉ स्कूल से मास्टर्स डिग्री भी हासिल की है।

ह्यून ने कई कानूनी जर्नल्स के लिए लेख लिखे हैं। वह कोरियाई कंपनियों को कानूनी सलाह देते हैं। इसके अलावा वह सियोल लेबर रिलेशंस कमीशन के कमिश्नर, दक्षिण कोरिया के मिनिस्ट्री ऑफ एम्प्लॉयमेंट एंड लेबर के कानूनी सलाहकार और कोरिया यूनिवर्सिटी लॉ स्कूल में प्रोफेसर रह चुके हैं। 1991 से रोटरी क्लब सियोल-हानसू के चार्टर सदस्य ह्यून ने ट्रेनिंग लीडर के रूप में सेवा की है। 2016 में सियोल में हुए रो ई अधिवेशन की मेज़बान संगठन समिति के सदस्य भी रहे। वर्तमान में वह रोटरी फाउंडेशन कोरिया के निदेशक हैं।

इजियोमा पर्ल ओकोरो

ट्रस्टी 2024-28

रोटरी क्लब पोर्ट हारकोर्ट, नाइजीरिया

इजियोमा ओकोरो को बीमा क्षेत्र के प्रबंधन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव है। उन्होंने थिएटर आर्ट्स में स्नातक डिग्री और मैनेजमेंट में पोस्टग्रेजुएट डिग्री हासिल की है। उन्होंने लागोस बिजनेस स्कूल में भी अध्ययन किया है।

अपने दिवंगत पिता की स्मृति में इजियोमा ने महिलाओं के सशक्तीकरण और शिक्षा के विकास के लिए रोमानुस एमेआनुरु फाउंडेशन फॉर एम्पावरमेंट एंड एजुकेशन डेवलपमेंट की स्थापना की। वह लागोस बिजनेस स्कूल के एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम के अपने पूर्व छात्रों के चैप्टर की चार्टर अध्यक्ष और एग्बू विमेन्स ऑर्गनाइज़ेशन की संरक्षक भी रह चुकी हैं।

इजियोमा 1999 में रोटरी से जुड़ीं। उन्होंने रो ई लर्निंग फैसिलिटेटर, असिस्टेंट रीजनल रोटरी फाउंडेशन कोऑर्डिनेटर, एंडोमेंट/मेजर गिफ्ट्स एडवाइजर, एंड पोलियो नाउ कोऑर्डिनेटर और इंटरनेशनल पोलियोप्लस कमेटी की सदस्य के रूप में सेवा दी है। उन्हें रोटरी का डिस्टिंग्विश्ड सर्विस अवॉर्ड और पोलियो-मुक्त दुनिया के लिए रीजनल सर्विस अवॉर्ड मिल चुका है।

वह पॉल हैरिस सोसाइटी की चार्टर सदस्य और फाउंडेशन की बेनिफैक्टर हैं। उनके पति किंग्सले भी रोटेरियन हैं। दोनों मेजर डोनर्स और बेक्वेस्ट सोसाइटी के सदस्य हैं। वे और उनके दोनों बच्चे पॉल हैरिस फेलो हैं।

कार्लोस सैंडोवाल

ट्रस्टी 2023-27

रोटरी क्लब सैन निकोलास दे लॉस गार्सा, मेक्सिको

कार्लोस सैंडोवाल मेक्सिको की ऊर्जा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी ओरसान कॉर्प के सीईओ हैं। कंपनी के 270 से अधिक सर्विस स्टेशन हैं और इसमें 3,000 से ज्यादा कर्मचारी काम करते हैं। सैंडोवाल 1975 में रोटरी से जुड़े।

उन्होंने रीजनल रोटरी फाउंडेशन कोऑर्डिनेटर, फंड डेवलपमेंट कमेटी और रोटरी पीस सेंटर्स कमेटी के सदस्य तथा एंडोमेंट एंड मेजर गिफ्ट्स इनिशिएटिव के सलाहकार के रूप में सेवा दी है।

अपने दिवंगत बेटे कार्लोस की स्मृति में उन्होंने द रोटरी फाउंडेशन को ऐसा दान दिया, जिससे मेक्सिको, डोमिनिकन रिपब्लिक और कोलंबिया में महिला उद्यमियों की मदद करने वाली परियोजनाओं को सहयोग मिल सके। सैंडोवाल अब तक छह मिलियन-डॉलर डिनर आयोजित कर चुके हैं।

उन्हें कार रेस देखना पसंद है और अपनी तीन बेटियों, 15 पोते-पोतियों और एक परपोती के लिए फिट रहने के लिए वह दौड़ लगाते हैं। सैंडोवाल को द रोटरी फाउंडेशन का 'साइटेशन फॉर मेरिटोरियस सर्विस' मिल चुका है। वह और उनकी पत्नी मार्था, AKS के सदस्य और प्लैटिनम ट्रस्टीज़ सर्कल के सदस्य हैं।

डेनिस जे शोर

ट्रस्टी 2023-27

रोटरी क्लब हॉथॉर्न, ऑस्ट्रेलिया

डेनिस शोर केमिकल इंजीनियर हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स से स्नातक और मास्टर्स डिग्री हासिल की। ऑस्ट्रेलियन पेपर मैन्युफैक्चरर्स (बाद में एमकॉर) में वरिष्ठ अधिकारी के रूप में उन्होंने अमेरिका, यूरोप और एशिया में काम किया। इसके बाद उन्होंने अपनी कंसल्टिंग कंपनी शुरू की और 2021 में सेवानिवृत्त हुए।

शोर 1980 में रोटरी से जुड़े। उन्होंने एंडोमेंट/मेजर गिफ्ट्स एडवाइजर के रूप में सेवा दी है और वर्तमान में रोटरी फाउंडेशन ऑस्ट्रेलिया के उपाध्यक्ष हैं। वह काउंसिल ऑन लेजिस्लेशन (CoL) के प्रतिनिधि के रूप में दो बार सेवा दे चुके हैं।

उन्होंने कई रोटरी परियोजनाओं को सहयोग दिया है, जिनमें डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ तिमोर-लेस्ते में छात्रवृत्ति और पानी की टंकियां लगाना, कंबोडिया में एक अस्पताल और ऑस्ट्रेलिया में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी पहल शामिल हैं। 2017 में उन्होंने एक मिलियन-डॉलर डिनर का आयोजन भी किया, जिससे द रोटरी फाउंडेशन के लिए 3.5 मिलियन डॉलर से अधिक जुटाए गए।

शोर और उनकी पत्नी लिंडा, दोनों मेजर डोनर्स और बेक्वेस्ट सोसाइटी के सदस्य हैं। शोर को द रोटरी फाउंडेशन का डिस्टिंग्विश्ड सर्विस अवॉर्ड और साइटेशन फॉर मेरिटोरियस सर्विस मिल चुका है।

कात्सुहिको 'कात्स'तात्सुनो

ट्रस्टी 2025-29

रोटरी क्लब टोक्यो-वेस्ट

कात्सुहिको तात्सुनो तात्सुनो कॉर्प के सीईओ हैं। 1964 में टोक्यो यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री हासिल करने के बाद वह अपने पिता द्वारा स्थापित कंपनी से जुड़े।

वह 1982 में रोटरी क्लब टोक्यो-वेस्ट से जुड़े। उन्होंने काउंसिल ऑन लेजिस्लेशन (CoL) प्रतिनिधि और रो ई लर्निंग फैसिलिटेटर के रूप में सेवा दी है। वह रो ई मेंबरशिप कमेटी और रो ई अध्यक्ष के लिए नॉमिनेटिंग कमेटी समेत कई समितियों के सदस्य रहे हैं। 2011 में आए तोहोकू भूकंप और सुनामी के बाद राहत कार्यों और प्रभावित लोगों की मदद के लिए काम करने

वाली जापानी रोटरी कमेटी में भी वह शामिल थे। उन्होंने 2020-22 में रो ई निदेशक के रूप में सेवा दी।

उनके लिए एक यादगार पल 2011 के मंडल सम्मेलन का है। उस समय वह मंडल 2750 के मंडल गवर्नर थे। उन्होंने सभी 95 रोटरी क्लब अध्यक्षों को मंच पर बुलाया और प्रत्येक से अपने क्लब की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताने को कहा। इस तरह उन्होंने सम्मेलन का ध्यान सिर्फ मंडल गवर्नर पर रखने के बजाय क्लबों के काम पर केंद्रित कर दिया।

उन्होंने तात्सुनो एनवायरनमेंट फाउंडेशन की स्थापना की, जो कॉलेज के विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां प्रदान करता है। तात्सुनो को जीवनभर गोल्फ का शौक रहा है। वह शोदच् यानी जापानी सुलेख कला का भी अध्ययन करते हैं। वह AKS के सदस्य हैं।

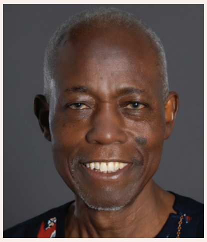

फ्रांसिस एफ 'तुसु' तुसुबिरा

ट्रस्टी 2026-30

रोटरी क्लब कंपाला-नॉर्थ, युगांडा

फ्रांसिस तुसुबिरा इंजीनियर और नॉलेज कंसल्टिंग लिमिटेड के वरिष्ठ संस्थापक पार्टनर हैं। उन्होंने इंग्लैंड की यूनिवर्सिटी ऑफ साउथैम्पटन से इलेक्ट्रॉनिक्स में पीएचडी की है। उनके काम का मुख्य क्षेत्र सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) है।

युगांडा में तुसुबिरा नेशनल इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एजेंसी के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने युगांडा कम्युनिकेशंस कमीशन और इलेक्ट्रिसिटी रेगुलेटरी अथॉरिटी सहित कई संस्थाओं के बोर्ड में भी काम किया है।

1988 से रोटेरियन तुसुबिरा के लिए सबसे महत्वपूर्ण परियोजनाओं में से एक रोटरी की ग्लोबल ग्रांट परियोजना 'नकोंडो अडॉप्ट अ विलेज' रही है। सात वर्षों तक उनके क्लब ने इस गांव में क्षमता निर्माण, प्राथमिक शिक्षा में सुधार, पानी और बिजली की उपलब्धता, स्वास्थ्य सेवाओं, माइक्रो-इरिगेशन और माइक्रोक्रेडिट के लिए काम किया।

क्लब अध्यक्ष-निर्वाचित रहते हुए उनके मंडल गवर्नर ने उन्हें द रोटरी फाउंडेशन ग्रांट के आवेदन के लिए तंजानिया में परियोजना स्थल का पहले से निरीक्षण करने भेजा था। उन्हें द रोटरी फाउंडेशन का 'साइटेशन फॉर मेरिटोरियस सर्विस' मिल चुका है। उनकी पत्नी डोरकस, जो रोटरी क्लब सनराइज़-कंपाला की सदस्य हैं, के साथ वह दोनों मेजर डोनर्स हैं।

स्टेफनी ए उर्चिक

ट्रस्टी 2025-29

रोटरी क्लब मैकमरे, पेनसिल्वेनिया

स्टेफनी उर्चिक ने 2024-25 में रोटरी के रो ई अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व किया। वह रो ई निदेशक, द रोटरी फाउंडेशन की ट्रस्टी और ट्रेनिंग लीडर, रीजनल रोटरी फाउंडेशन कोऑर्डिनेटर तथा रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधि सहित कई अन्य महत्वपूर्ण भूमिकाओं में सेवा दे चुकी हैं।

स्टेफनी 1991 से रोटरी की सदस्य हैं। उन्होंने दुनिया भर में कई सेवा परियोजनाओं में हिस्सा लिया है, जिनमें भारत और नाइजीरिया में नेशनल इम्यूनाइजेशन डे (NID) कैंप भी शामिल हैं। वियतनाम में उन्होंने रोटरी क्लबों के साथ मिलकर एक प्राथमिक स्कूल बनाने में मदद की। डोमिनिकन रिपब्लिक में उन्होंने पानी के फिल्टर लगाने के काम में भी हिस्सा लिया।

उन्होंने यूक्रेन में नए रोटरी सदस्यों का मार्गदर्शन किया और पोलैंड के एक अस्पताल के लिए मैमोग्राफी उपकरण और बायोप्सी यूनिट खरीदने हेतु द रोटरी फाउंडेशन ग्रांट का समन्वय किया। उन्होंने अमेरिका के रोटरी क्लबों और मंडलों को कोसोवो, रोमानिया और यूक्रेन के रोटरी क्लबों के साथ जोड़ने में भी मदद की, ताकि मानवीय और शैक्षणिक परियोजनाओं को आगे बढ़ाया जा सके।

2025 में उन्होंने इस्तांबुल में 'हीलिंग इन अ डिवाइडेड वर्ल्ड' यानी 'बंटती दुनिया में उपचार' विषय पर एक शांति सम्मेलन आयोजित किया।

अनंतनारायणन एस 'वेंकी' वेंकटेश

ट्रस्टी 2026-30

रोटरी क्लब चेन्नई मंबलम, भारत

इंजीनियरिंग में आईआईटी मद्रास से डिग्री और आईआईएम अहमदाबाद से एमबीए करने के बाद एस वेंकटेश ने 23 साल की उम्र में सिविल कंस्ट्रक्शन के कारोबार में कदम रखा। आज वह ऐसी कंपनी का नेतृत्व करते हैं, जिसमें 1,400 से अधिक लोग काम करते हैं।

वह 1999 में दोस्तों के साथ नेटवर्किंग के लिए रोटरी से जुड़े थे। लेकिन एक स्कूल में बेंच दान करने की सेवा परियोजना के दौरान एक बच्ची से हुई बातचीत ने रोटरी और सेवा को देखने का उनका नजरिया ही बदल दिया। वह बताते हैं, मैंने उससे पूछा कि वह वहां से हट क्यों नहीं रही है। उसने बताया कि अपनी जिंदगी में पहली बार वह जमीन पर नहीं, बल्कि बेंच पर बैठी थी।

इसके बाद से वेंकटेश ने साक्षरता और लड़कियों व महिलाओं के सशक्तीकरण को अपना प्रमुख उद्देश्य बनाया। उन्होंने इंडिया लिटरेसी मिशन में संयुक्त सचिव के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके तहत 2,900 से अधिक स्कूलों में शिक्षकों के प्रशिक्षण और साक्षरता कार्यक्रमों को सहयोग दिया गया।

उन्होंने 2021-23 में रो ई निदेशक के रूप में सेवा दी और मेंबरशिप कोऑर्डिनेटर तथा लर्निंग फैसिलिटेटर भी रहे। वेंकटेश को ब्रिज खेलना और समुद्र किनारे की जगहों की यात्रा करना पसंद है। उनकी पत्नी विनीता, रोटरी क्लब चेन्नई एंकरिज की सदस्य हैं। दोनों मेजर डोनर्स हैं।

जॉन ह्यूको

महासचिव, रोटरी क्लब कीव, यूक्रेन

बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की जीवनी देखें।

©Rotary

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 2981

रोटरी क्लब पांडिचेरी मरीना

बोलने-सुनने में कठिनाई और शारीरिक दिव्यांगता वाले 15 लोगों को सिलाई और बैग बनाने का व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें नियमित रोजगार भी उपलब्ध कराया गया।

रो ई मंडल 3030

रोटरी क्लब बल्लारपुर

स्थानीय नगरपालिका द्वारा संचालित यशवंतराव चव्हाण प्राइमरी स्कूल और साईबाबा प्राइमरी स्कूल को RO वॉटर प्यूरिफायर यूनिट दी गईं।

रो ई मंडल 3040

रोटरी क्लब रतलाम प्राइम

क्लब सदस्यों ने वन विभाग के वृक्षारोपण अभियान में हिस्सा लिया। इस अभियान के तहत 50 हेक्टेयर क्षेत्र में 50,000 पौधे लगाए जा रहे हैं।

रो ई मंडल 3053

रोटरी क्लब जोधपुर मिडटाउन

मथुरादास माथुर अस्पताल, जोधपुर को व्हीलचेयर, स्ट्रेचर, गद्दे और एक एयर कंडीशनर दिए गए, ताकि मरीजों की देखभाल को बेहतर बनाया जा सके।

रो ई मंडल 3000

रोटरी क्लब करूर यंग जेन

करूर के CSI गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल की 150 छात्राओं को नि:शुल्क लाइब्रेरी सदस्यता दी गई, ताकि उनमें पढ़ने की आदत को बढ़ावा मिले।

रो ई मंडल 3070

रोटरी क्लब अमृतसर सिविल लाइंस

वुड ब्लॉसम स्कूल, कैरों; नेशनल पब्लिक स्कूल, नौशेरा पन्नू; और सरकारी गर्ल्स स्कूल, कैरों के 100 से अधिक इंटरेक्टर्स ने 30 किलो से अधिक प्लास्टिक कचरे का इस्तेमाल कर इकोब्रिक्स बनाए।

रो ई मंडल 3110

रोटरी क्लब बांस बरेली

'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत ISKCON मंदिर परिसर में जामुन, आँवला और अमलतास सहित 11 पौधे लगाए गए।

Membership and TRF Summary 2026-27

Top 20 Districts in the world in membership

Rank	District	Zone	Country	Rotary Clubs	Members
1	3000	5	India	212	8,798
2	2981	5	India	162	6,981
3	3141	4	India	122	6,859
4	3170	7	India	142	6,432
5	3030	6	India	124	6,268
6	3203	5	India	120	6,042
7	3011	4	India	147	5,712
8	3292	6	Bhutan	165	5,489
9	3211	5	India	165	5,402
10	9213	22	Uganda	151	5,392
11	3060	4	India	105	5,244
12	1910	21	Austria	112	5,231
13	3630	11	Korea	118	5,219
14	3131	7	India	132	4,992
15	9214	22	Tanzania	150	4,810
16	1900	15	Germany	92	4,803
17	3212	5	India	124	4,782
18	3820	10	Philippines	159	4,778
19	9141	22	Nigeria	191	4,738
20	1810	15	Germany	89	4,736

Zonewise ranking - New member addition

Rank	Zone	Members
1	5	3,552
2	4	2,189
3	7	1,866
4	6	1,359
Total (Net Growth since 1July)		8,966
Rest of the World Total (Net Growth since 1July)		15,346
World Total (Net Growth since 1July)		24,312

Rotaract Interact membership as on July 2026

Zone	Rotaract		Interact	RCCs
	Clubs	Rotaractors	Clubs	
4	657	12,000	2,073	2,091
5	909	26,627	2,015	1,750
6	576	9,359	2,320	2,514
7	685	12,207	2,321	1,589

India Districts - New member addition ranking

Rank	District	Zone	NewMembers
1	3000	5	1,081
2	2981	5	689
3	3141	4	451
4	3080	4	424
5	3233	5	344
6	3191	7	327
7	3250	6	266
8	3011	4	263
9	3120	6	237
10	3231	5	227
11	3203	5	225
12	3150	7	224
13	3131	7	223
14	3030	6	217
15	3170	7	216
16	3132	7	213
17	3142	4	210
18	3192	7	204
19	3212	5	198
20	3234	5	194
21	3060	4	178
22	3292	6	157
23	3182	7	157
24	3012	4	142
25	3211	5	140
26	3020	7	140
27	3181	7	137
28	3206	5	126
29	3070	4	118
30	3204	5	115
31	3291	6	113
32	3040	4	108
33	3055	4	97
34	3240	6	95
35	3090	4	95
36	2982	5	86
37	3262	6	78
38	3100	6	71
39	3110	6	70
40	3220	5	65
41	3205	5	62
42	3056	4	62
43	3261	6	55
44	3053	4	41
45	3160	7	25
Total			**8,966**

Top 10 Districts - TRF Giving

Annual Fund

Rank	Zone	District	Annual Fund ($)
1	7	3150	195,100
2	4	3142	93,090
3	7	3131	82,787
4	4	3141	81,060
5	6	3250	75,328
6	7	3132	69,435
7	6	3120	65,145
8	6	3291	51,349
9	6	3240	29,919
10	4	3060	24,395

PolioPlus Fund

Rank	Zone	District	PolioPlus Fund ($)
1	5	3234	8,302
2	7	3020	6,965
3	7	3150	6,700
4	4	3141	6,233
5	7	3170	4,592
6	4	3142	3,931
7	6	3291	3,519
8	6	3240	3,094
9	5	2981	3,078
10	7	3181	2,165

Endowment Fund

Rank	Zone	District	Endowment Fund ($)
1	4	3053	50,000
2	5	3233	38,706
3	7	3150	36,221
4	6	3120	34,425
5	6	3291	31,604
6	5	3212	30,000
7	4	3141	26,263
8	6	3250	18,798
9	7	3020	13,589
10	7	3131	13,263

Zone ranking in implementing 10:20:30 formula for adding new clubs

Rank	Zone	Rotary	Rotaract	Interact
1	5	28	10	20
2	4	15	15	13
3	6	9	21	24
4	7	3	30	21
Total		**55**	**76**	**78**
Target		**500**	**1,000**	**1,500**

Top 20 Giving Districts in India

Rank	District	Zone	Total Contributions ($)
1	4	3141	495,857
2	7	3150	250,661
3	7	3131	129,295
4	7	3132	125,397
5	6	3120	101,622
6	4	3142	98,334
7	6	3250	95,835
8	6	3291	90,222
9	4	3011	82,906
10	4	3053	68,453
11	5	3205	62,395
12	5	3234	61,021
13	7	3020	56,557
14	5	3233	49,902
15	5	3203	47,946
16	5	3212	47,390
17	7	3170	40,874
18	4	3060	39,864
19	7	3191	36,282
20	5	2981	36,250

Leading Districts with CSR Credits in Zone 4,5,6 & 7

Rank	Zone	District	CSR ($)
1	7	3141	288,931.34
2	4	3132	54,533.68
3	7	3191	23,750.00
4	4	3131	22,500.00

परिवर्तन की शक्ति

टीम रोटरी न्यूज़

महिलाओं के कौशल विकास पर जोर

अपने महिला सशक्तीकरण और कौशल विकास प्रोजेक्ट के तहत रोटरी क्लब मुंबई-बैंडअप, रो ई मंडल 3141 ने 190 महिलाओं को सिलाई मशीन ऑपरेटर और फैशन ऑर्नामेंटेशन का प्रशिक्षण दिया है। अब तक दो बैचों की 80 महिलाएँ कोर्स पूरा कर चुकी हैं। प्रोजेक्ट चेयर और इमीडिएट पास्ट प्रेसिडेंट सीमा क्षीरसागर कहती हैं, हम प्रशिक्षुओं के लिए टिकाऊ आजीविका सुनिश्चित करना चाहते हैं। गारमेंट उद्योगों ने हमारे उम्मीदवारों को नौकरी देने में रुचि दिखाई है और हमें उम्मीद है कि पहले बैच की 36 में से 75 प्रतिशत महिलाओं को रोजगार मिलेगा। ■

रोटरी क्लब मुंबई-बैंडअप की आईपीपी सीमा क्षीरसागर (बीच में) और अन्य सदस्य एक प्रशिक्षु को कोर्स पूरा करने का प्रमाणपत्र देते हुए।

मुंबई के अस्पताल में बच्चों की हार्ट सर्जरी

रो ई मंडल 3142 के आईपीडीजी हर्ष मकोल ने प्रोजेक्ट फॉर हीलिंग हार्ट्स के तहत 64 बच्चों की हार्ट सर्जरी के लिए श्री सत्य साईं संजीवनी हॉस्पिटल, खारघर को ग्रांट वर्क ऑर्डर सौंपा। रोटरी क्लब डोंबिवली ईस्ट के 107,000 डॉलर के इस GG प्रोजेक्ट में रोटरी क्लब लंदन, ओंटारियो, रो ई मंडल 6330 मुख्य ग्लोबल पार्टनर है। रोटरी क्लब ऑफ कल्याण, कल्याण रिवरसाइड, डोंबिवली विनर्स और अमेरिका व कनाडा के रोटरी क्लब ऑफ सेंट क्लेयर व अजाक्स ने भी सहयोग किया। अरुण अष्टिकर के नेतृत्व में GG टीम ने तत्कालीन क्लब अध्यक्ष संदीप घरत के साथ प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया। रो ई मंडल 3142, 5810 और 7070 ने DDF सहयोग दिया।■

आईपीडीजी हर्ष मकोल (दाँए) प्रोजेक्ट टीम के साथ।

मॉरीशस में आँखों की सर्जरी का कैंप

मॉरीशस के मोका स्थित सुब्रमणि भारती आई हॉस्पिटल में रोटरी क्लब ठाणे, रो ई मंडल 3142 ने रोटरी क्लब फीनिक्स, रो ई मंडल 9220 के साथ पाँच दिवसीय विट्रियॉरेटिनल सर्जरी कैंप आयोजित किया। 100 से अधिक मरीजों की जाँच में 48 सर्जरी के लिए चुने गए। भारत से गए डॉ करण कुमारास्वामी और डॉ शुभांक खरे ने स्थानीय डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ के सहयोग से सर्जरी की। मॉरीशस के स्वास्थ्य मंत्री अनिल बच्चू ने अस्पताल का दौरा कर मरीजों और डॉक्टरों से मुलाकात की। रोटरी क्लब ऑफ ठाणे के इमीडिएट पास्ट प्रेसिडेंट गिरीश वर्तक भी मौजूद रहे।■

सर्जरी करते हुए डॉक्टर।

पुथेनवेलिक्कारा के सरकारी तालुक अस्पताल में ब्लॉक पंचायत अध्यक्ष सेबा मोहम्मदअली हार्मोन एनालाइज़र का उद्घाटन करते हुए।

केरल के अस्पताल में हाई-टेक मेडिकल उपकरण

रोटरी क्लब ग्रेटर कोचीन, रो ई मंडल 3205 ने ₹28 लाख के GG प्रोजेक्ट के तहत पुथेनवेलिक्कारा के सरकारी तालुक अस्पताल में आधुनिक मेडिकल उपकरण लगाए। यूके के रोटरी क्लब वूल्वरहैम्पटन, रो ई मंडल 1210 ने ग्लोबल पार्टनर के रूप में सहयोग किया। केरल के मुख्यमंत्री वी डी सतीशन ने इन उपकरणों का उद्घाटन किया। इसी ग्लोबल पार्टनर के साथ क्लब ने 2023-24 में ₹26 लाख का GG प्रोजेक्ट भी किया था, जिसके तहत अस्पताल को अल्ट्रासाउंड स्कैनर, बायोकेमिस्ट्री एनालाइज़र और फिजियोथेरेपी उपकरण दिए गए।■

शहर की गर्मी से निपटना

प्रीति मेहरा

आपके इलाके में कितनी गर्मी होगी, यह वहाँ के स्थानीय मौसम पर निर्भर करता है।

क्या आपने कभी सोचा है कि मौसम विभाग के बताए अधिकतम और न्यूनतम तापमान से आपके शहर के अलग-अलग हिस्सों का तापमान इतना अलग क्यों होता है? कुछ जगहें मौसम की रिपोर्ट में बताए तापमान से कहीं ज्यादा गर्म लगती हैं, जबकि कुछ जगहें कई डिग्री तक ठंडी होती हैं। आखिर ऐसा क्यों होता है? क्या यह सचमुच तापमान का फर्क है या सिर्फ हमें ऐसा महसूस होता है?

पुणे की पर्यावरण सलाहकार संस्था रेस्पायरर लिविंग साइंसेज (RLS) ने पिछले साल मुंबई के अलग-अलग हिस्सों के तापमान का अध्ययन किया। इसमें पता चला कि शहर के भीतर ही अलग-अलग स्थानीय जलवायु क्षेत्र यानी माइक्रोक्लाइमेट ज़ोन बन रहे हैं। अध्ययन के मुताबिक, गर्मी से निपटने के लिए पूरे मुंबई पर एक ही तरह का उपाय लागू करना सही नहीं होगा। हर इलाके की जरूरत के हिसाब से अलग योजना बनानी होगी। यही बात दूसरे बड़े शहरों पर भी लागू होती है।

तापमान का यह फर्क काफी चौंकाने वाला था। RLS के अध्ययन में पाया गया कि घनी आबादी वाले घाटकोपर में पिछले साल 1 से 22 मार्च के बीच औसत तापमान 33.3 डिग्री सेल्सियस था। वहीं, कम ऊँची इमारतों, कम आबादी और ज्यादा हरियाली वाले पवई में इसी दौरान औसत तापमान सिर्फ 20.4 डिग्री था। यानी दोनों जगहों के तापमान में पूरे 13 डिग्री का अंतर था!

पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि शहर के भीतर तापमान के ऐसे अंतर का संबंध इन माइक्रोक्लाइमेट ज़ोन से है। ये शहर के छोटे-छोटे इलाके होते हैं, जहाँ आसपास के बड़े क्षेत्र की तुलना में मौसम और तापमान अलग हो सकता है।इन इलाकों का तापमान कई चीजों से प्रभावित होता है - आबादी कितनी घनी है, सड़कों पर कितने वाहन चलते हैं, पेड़-पौधे और हरियाली कितनी है, कंक्रीट की इमारतें कितनी हैं और आसपास कितनी औद्योगिक इकाइयाँ हैं।

RLS के सीईओ रोनक सुतारिया ने मीडिया में कहा कि मुंबई जैसे शहरों के भीतर माइक्रोक्लाइमेट ज़ोन बनना एक वास्तविकता है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इसका लोगों की सेहत पर भी असर पड़ता है। किसी खास इलाके में बढ़ा हुआ तापमान पूरे शहर के औसत तापमान में दिखाई भी नहीं देता।

तो नागरिक होने के नाते हम क्या कर सकते हैं? हम अपने शहरों को अर्बन हीट आइलैंड (UHI) बनने से कैसे रोक सकते हैं? अर्बन हीट आइलैंड यानी शहर के ऐसे इलाके जो आसपास के ग्रामीण इलाकों की तुलना में काफी ज्यादा गर्म हो जाते हैं।

और अपने घर या दफ्तर के आसपास के स्थानीय तापमान को कम करने में हम क्या भूमिका निभा सकते हैं? शहर की बड़ी योजनाएँ बनाना हमारे हाथ में नहीं है। शहरी विकास योजनाएँ और बड़े निर्माण सरकार और नगर नियोजकों के स्तर पर तय होते हैं। लेकिन हम सरकार और संबंधित एजेंसियों पर दबाव डाल सकते हैं कि बड़ी इमारतों और औद्योगिक इकाइयों को मंजूरी देते समय शहर में बढ़ती गर्मी को भी ध्यान में रखा जाए।

हम पर्यावरण के अनुकूल कदमों का समर्थन भी कर सकते हैं - जैसे समुद्र के किनारे मौजूद मैंग्रोव को बचाना और जंगलों की रक्षा करना। लेकिन छोटे स्तर पर भी हम अपने आसपास का माहौल हरा-भरा, स्वस्थ और ठंडा रखने के लिए काफी कुछ कर सकते हैं। इसमें कोई जादुई उपाय नहीं है जिससे एक रात में बदलाव आ जाए। लेकिन विशेषज्ञों के मुताबिक कुछ आसान कदम जरूर उठाए जा सकते हैं।

अपने आसपास ऐसे स्थानीय और मजबूत पेड़ लगाएँ जो गर्मी सह सकें। खिड़कियों और पक्की जमीन के पास लगाए गए पेड़ छाया देंगे और गर्मी को रोकने में मदद करेंगे। अगर आप अपार्टमेंट में रहते हैं तो बालकनी या बरामदे में गमलों में पौधे, झाड़ियाँ और छोटे पौधे लगा सकते हैं। दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें। अगर निवासी अपनी रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (RWA) को मनाएँ कि इमारत की छत पर गार्डन या ग्रीन रूफ बनाया जाए, तो इससे इमारत की छत कम गर्म होगी और आसपास का तापमान भी कम करने में मदद मिलेगी। इमारतों की दीवारों पर वर्टिकल ग्रीन वॉल यानी पौधों की हरी दीवारें भी बनाई जा सकती हैं। घर और दूसरी सतहों को ठंडा रखने के भी कुछ आसान तरीके हैं। सबसे आम तरीका है छत और बाहर की दीवारों पर सफेद या हल्के रंग का ऐसा पेंट करना जो सूरज की गर्मी को ज्यादा सोखे नहीं।

इसी तरह, घर के आसपास की कंक्रीट या काली डामर वाली जमीन को घास, बजरी या ऐसी ईंटों से बदला जा सकता है जिनमें से पानी जमीन में जा सके। पौधों में सुबह या शाम पानी देने से मिट्टी में नमी बनी रहती है और आसपास का वातावरण भी ठंडा रहता है। स्थानीय गर्मी और प्रदूषण कम करने के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है। पर्यावरण विशेषज्ञों का सुझाव है कि जहाँ संभव हो, कार चलाने के बजाय पैदल चलें, साइकिल चलाएँ या सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करें। इससे वाहनों से निकलने वाली अतिरिक्त गर्मी और प्रदूषण कम होगा।

अपने आसपास ऐसे स्थानीय और मजबूत पेड़ लगाएँ जो गर्मी सह सकें। खिड़कियों और पक्की जमीन के पास लगाए गए पेड़ छाया देंगे और गर्मी को रोकने में मदद करेंगे।

घर में भी जो बिजली के उपकरण इस्तेमाल नहीं हो रहे हों, उन्हें बंद रखें। ऐसे एयर कंडीशनर भी गर्म हवा बाहर निकालते हैं, इसलिए उनका इस्तेमाल जरूरत के मुताबिक ही करें। और अगर आप अपने इलाके के पार्कों को बचाने और सामुदायिक स्तर पर पेड़ लगाने की मुहिम में साथ देते हैं, तो इससे न सिर्फ शहर ठंडा होगा, बल्कि आपके पड़ोस के लोग भी खुश होंगे।

मेरे शहर चेन्नई में नागरिकों के कई ऐसे समूह हैं जो मिलकर खाली सार्वजनिक जगहों पर पेड़-पौधे लगाते हैं, सड़क किनारे लगे पौधों को पानी देते हैं या पार्कों और फुटपाथों की सफाई करते हैं। इन प्रयासों को अच्छी पहचान भी मिली है - और बिल्कुल सही कारणों से। लेकिन अगर हम इससे एक कदम आगे बढ़ें और अपनी कॉलोनियों के आसपास बनी झुग्गियों और बस्तियों पर भी ध्यान दें, तो शहर को ठंडा रखने की हमारी कोशिश और ज्यादा प्रभावी हो सकती है।

कम आय वाले इलाकों में अक्सर लोग टीन या एस्बेस्टस की बनी नीची छतों वाले छोटे घरों में रहते हैं। ये घर एक-दूसरे से बहुत सटे होते हैं और इनमें हवा के आने-जाने की भी पर्याप्त जगह नहीं होती। पेड़-पौधों और हरियाली की कमी के कारण यहाँ ठंडक का प्राकृतिक इंतजाम भी लगभग नहीं होता। मुंबई की झुग्गी बस्तियों में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि यहाँ का औसत तापमान आसपास की आवासीय सोसायटियों की तुलना में छह डिग्री ज्यादा हो सकता है।

इस स्थिति को सुधारने के लिए हम प्रशासन पर दबाव डाल सकते हैं कि इन बस्तियों की छतों को ज्यादा पर्यावरण-अनुकूल सामग्री से बदला जाए और उन पर सूरज की गर्मी को कम सोखने वाला सफेद पेंट किया जाए। जिन खाली जगहों पर आज कचरा पड़ा रहता है, वहाँ साफ-सुथरे और हरे सार्वजनिक स्थान बनाए जा सकते हैं।कुल मिलाकर, जलवायु परिवर्तन से निपटने के हमारे तरीके में बदलाव जरूरी है। अर्बन हीट आइलैंड और माइक्रोक्लाइमेट ज़ोन अब ऐसी वास्तविकताएँ हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हम इनसे कैसे निपटते हैं, यही तय करेगा कि हमारे शहर कितने स्वस्थ, साफ और हरे-भरे रहेंगे।

कहते हैं न - सोचिए वैश्विक स्तर पर, लेकिन काम कीजिए अपने आसपास से।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं,
जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

रो ई मंडल **3132**

रोटरी ई-क्लब सोलापुर एलीट

हिराचंद नेमचंद कॉलेज ऑफ कॉमर्स के करीब 300 छात्रों ने एक इंटरेक्टिव RYLA में हिस्सा लिया। इसका संचालन IPL क्रिकेट अंपायर अनिश सहस्त्रबुद्धे ने किया।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल **3181**

रोटरी क्लब मैंगलोर सेंट्रल

पीडीजी देवदास राय द्वारा आयोजित 20वीं रोटरी अवेयरनेस क्विज में 14 रोटरी क्लबों ने हिस्सा लिया। मोबाइल ऐप पर आधारित इस क्विज में रोटरी क्लब विजयनगर मैसूर के एच एम हरीश विजेता रहे।

रो ई मंडल **3182**

रोटरी क्लब चिकमगलूर-कॉफी लैंड

स्ट्रीट फूड विक्रेताओं को छतरियाँ और दोपहिया वाहन चालकों को हेलमेट दिए गए। पुलिस प्रशिक्षण केंद्र में वाटर फिल्टर यूनिट लगाई गई और सफाई कर्मचारियों को भोजन कराया गया।

रो ई मंडल 3192

रोटरी क्लब बैंगलोर ब्रिगेड्स

क्लब अध्यक्ष भावेश शाह ने युवा सुरक्षा अधिकारी सागर कुमतागी और उनकी टीम को वोकेशनल एक्सीलेंस अवॉर्ड प्रदान किया। इस टीम ने एक बहुमंजिला इमारत को हथियारबंद घुसपैठिए से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब वैभववाड़ी

रोटरी क्लब खारेपाटन के साथ मिलकर एक संयुक्त प्रोजेक्ट के तहत 10 महिलाओं को सिलाई मशीनें दी गईं। यह वितरण मंडल गवर्नर अरुण भंडारे की यात्रा के दौरान किया गया। भागीरथ ग्रामविकास प्रतिष्ठान इस प्रोजेक्ट में सह-भागीदार था।

रो ई मंडल 3203

रोटरी क्लब अम्मापेट्टई कावेरी

स्वास्थ्य सेवा और सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम के तहत पिछले 200 सप्ताह से हर मंगलवार करीब 100 गर्भवती महिलाओं को सप्लीमेंट्स और पोषण किट दिए जा रहे हैं।

रो ई मंडल 3233

रोटरी क्लब चेन्नई ईस्ट आर ए पुरम

स्कूल और कॉलेज की 10-20 वर्ष की 1,100 छात्राओं को विशेष सेमिनारों में आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। इन सत्रों का मार्गदर्शन मार्शल आर्ट्स विशेषज्ञ और पूर्व अध्यक्ष पी वासु ने किया।

रूपरेखा वी मुत्तुकुमारन

गठिया से कैसे निपटें

गीता मथाई

क्या आपके साथ भी ऐसा हुआ है कि सुबह उठते ही जोड़ अकड़े हुए लगें और पूरे शरीर में दर्द हो? कई बार ऐसा किसी दिन जरूरत से ज्यादा मेहनत करने के बाद होता है। लेकिन कभी-कभी दर्द और अकड़न का कोई साफ कारण भी समझ नहीं आता। अगर ये लक्षण तीन-चार दिन में ठीक न हों, महीने में कई बार हों, सुबह उठने के बाद जोड़ों की अकड़न 30 मिनट से ज्यादा रहे, या किसी जोड़ के ऊपर की त्वचा लाल और गर्म हो जाए, तो हो सकता है कि आपको गठिया हो।

अगर जोड़ों का दर्द इतना है कि आप तीन या उससे ज्यादा दिनों तक रोजमर्रा के काम आराम से नहीं कर पा रहे हैं, तो इसे गंभीरता से लेना चाहिए और डॉक्टर से जांच करवानी चाहिए। दूसरी ओर, अगर दर्द हल्का है, कभी-कभार होता है और कुछ दिनों में अपने आप ठीक हो जाता है, तो इसकी वजह किसी जोड़ पर जरूरत से ज्यादा दबाव या मेहनत भी हो सकती है। गठिया (Arthritis) कोई एक बीमारी नहीं है। यह 100 से ज्यादा ऐसी बीमारियों के लिए इस्तेमाल होने वाला सामान्य शब्द है, जो जोड़ों, उनके आसपास के ऊतकों और शरीर के दूसरे जोड़ने वाले ऊतकों को प्रभावित करती हैं।

गठिया के कुछ प्रकारों में तुरंत इलाज जरूरी होता है, जबकि कुछ धीरे-धीरे बढ़ते हैं और उनकी जांच थोड़ी देर से भी की जा सकती है। अगर आपको ऐसा गठिया है जिसमें शरीर की सूजन वाली प्रक्रिया जोड़ों को स्थायी नुकसान पहुँचा सकती है, तो समय पर इलाज शुरू करने से जोड़ों की कार्यक्षमता बचाई जा सकती है और दूसरी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से भी बचा जा सकता है।

उम्र बढ़ने के साथ हड्डियों के सिरों को ढकने वाली वह मुलायम कार्टिलेज (उपास्थि) घिसने लगती है, जो हड्डियों के बीच घर्षण कम करती है। इससे ऑस्टियोआर्थराइटिस हो सकता है।

यह अक्सर शरीर के उन जोड़ों में होता है जिन पर वजन पड़ता है, जैसे कमर का निचला हिस्सा, कूल्हे, घुटने और टखने। इसके लक्षणों में सुबह या लंबे समय तक आराम करने के बाद जोड़ों में अकड़न, चलने-फिरने पर धीरे-धीरे बढ़ता दर्द और जोड़ से चरचराने या घिसने जैसी आवाज आना शामिल है। उम्र बढ़ने, मोटापे, एक ही तरह की जोड़ वाली गतिविधि बार-बार करने और पहले लगी चोट, फ्रेक्चर या हुई सर्जरी से इसका खतरा बढ़ सकता है।

कुछ परिवारों में खून में यूरिक एसिड का स्तर ज्यादा होने की प्रवृत्ति होती है। इससे यूरिक एसिड के छोटे-छोटे, सुई जैसे कण जोड़ों में जमा हो सकते हैं और गाउट हो सकता है। गाउट का दौरा अचानक शुरू होता है और इसमें बहुत तेज दर्द, लालिमा और सूजन हो सकती है। आमतौर पर इसका असर पैर के अंगूठे पर होता है, लेकिन टखने, घुटने, कोहनी, कलाई और उंगलियाँ भी प्रभावित हो सकती हैं।

अगर गाउट के बार-बार होने वाले दौरों का इलाज न किया जाए, तो समय के साथ जोड़ों को स्थायी नुकसान हो सकता है। कुछ वायरल संक्रमण भी जोड़ों में दर्द पैदा कर सकते हैं। मच्छरों से फैलने वाले चिकनगुनिया और डेंगू के अलावा पैरवोवायरस B19, कोविड-19 और हेपेटाइटिस B और C जैसे संक्रमणों में भी बुखार, त्वचा पर दाने और कई जोड़ों में दर्द हो सकता है। अक्सर ये लक्षण कुछ समय बाद ठीक हो जाते हैं। लेकिन चिकनगुनिया के बाद होने वाला जोड़ों का दर्द कई महीनों या कभी-कभी वर्षों तक भी रह सकता है।

रूमेटॉइड आर्थराइटिस ज्यादातर अधेड़ उम्र की महिलाओं में देखा जाता है, लेकिन यह किसी भी उम्र में और पुरुषों या महिलाओं - दोनों को हो सकता है। यह एक ऑटोइम्यून बीमारी है। इसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से खुद ही जोड़ों की अंदरूनी परत पर हमला करने लगती है।

आमतौर पर हाथों और पैरों के छोटे जोड़ दोनों तरफ एक जैसे प्रभावित होते हैं। इलाज न मिलने पर लगातार दर्द और जोड़ों में विकृति हो सकती है। इसका असर सिर्फ जोड़ों पर ही नहीं पड़ता। आँखों, फेफड़ों, दिल, रक्त वाहिकाओं और नसों पर भी इसका असर हो सकता है।

गठिया कुछ दूसरी ऑटोइम्यून बीमारियों का हिस्सा भी हो सकता है, जैसे सिस्टमिक ल्यूपस एरिथेमेटोसस (SLE) और सोरियाटिक आर्थराइटिस। उम्रदराज़ खिलाड़ियों, खासकर कॉन्टैक्ट स्पोर्ट्स खेलने वालों और ऐसे काम करने वालों में भी जोड़ों को नुकसान होने का खतरा अधिक हो सकता है, जिनमें शरीर पर बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। कई बुजुर्गों में बिना किसी स्पष्ट कारण के भी जोड़ों में दर्द और अकड़न हो सकती है।

जिन लोगों का वजन ज्यादा है, जो शारीरिक रूप से बहुत कम सक्रिय हैं, धूम्रपान करते हैं या तंबाकू चबाते हैं, या जिनके परिवार में गठिया का इतिहास रहा है, उनमें गठिया होने का खतरा अधिक हो सकता है। जोड़ों के दर्द की सही वजह पता लगाने के लिए डॉक्टर को आपकी बीमारी और लक्षणों की पूरी जानकारी लेनी पड़ती है। इसके बाद शारीरिक जांच, खून की जांच और जरूरत के अनुसार एक्स-रे या दूसरी इमेजिंग जांच की जाती है।

ऑस्टियोआर्थराइटिस में एक्स-रे से जोड़ के बीच की जगह कम होना, हड्डी के छोटे उभार यानी ऑस्टियोफाइट्स और हड्डी में होने वाले बदलाव दिखाई दे सकते हैं। रूमेटॉइड आर्थराइटिस में दोनों तरफ के जोड़ों की जगह कम हो सकती है और हड्डियों में नुकसान दिखाई दे सकता है। हालांकि बीमारी की शुरुआती अवस्था में एक्स-रे सामान्य भी आ सकता है।

अल्ट्रासाउंड या चळख से जोड़ों में सूजन और शुरुआती नुकसान का पता लगाया जा सकता है। खून की जांच में ESR और C-reactive protein (CRP) जैसे टेस्ट किए जा सकते हैं, जो शरीर में सूजन का पता लगाने में मदद करते हैं। यूरिक एसिड की जांच गाउट का संकेत दे सकती है, लेकिन जोड़ से निकाले गए तरल पदार्थ में यूरिक एसिड के क्रिस्टल की जांच गाउट की ज्यादा पक्की पुष्टि करती है। रूमेटॉइड आर्थराइटिस का पता लगाने में रूमेटॉइड फैक्टर और anti-CCP antibodies मदद कर सकते हैं।

अगर संक्रमण का शक हो, तो एंटीबॉडी, एंटीजन, ELISA या PCR जैसी जांचों की जरूरत पड़ सकती है।एक बार बीमारी की सही पहचान हो जाए तो उसके अनुसार इलाज शुरू किया जा सकता है। गाउट में ऐसी दवाएँ दी जा सकती हैं जो यूरिक एसिड का स्तर कम करती हैं और भविष्य में होने वाले गाउट के दौरों को रोकती हैं। रूमेटॉइड आर्थराइटिस के इलाज में भी काफी प्रगति हुई है। दर्द की दवाओं और सूजन कम करने वाली दवाओं के अलावा डिजीज-मॉडिफाइंग एंटीरूमेटिक ड्रग्स (DM-RDs) दी जाती हैं। इनमें मेथोट्रेक्सेट, लेफ्लुनोमाइड, हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्विन और सल्फासालाजीन जैसी दवाएँ शामिल हैं।

कुछ मरीजों के लिए बायोलॉजिक्स और Janus kinase inhibitors भी उपलब्ध हैं। इन दवाओं का इस्तेमाल विशेषज्ञ डॉक्टर की निगरानी में ही होना चाहिए। ऑस्टियोआर्थराइटिस को दवाओं, वजन नियंत्रित रखने, व्यायाम और फिजियोथेरेपी से संभाला जा सकता है।

अगर दर्द इतना बढ़ जाए कि दवाओं से राहत न मिले और रोजमर्रा के काम करना मुश्किल हो जाए, तो सर्जरी पर विचार किया जा सकता है। इसमें हड्डी की स्थिति सुधारने की सर्जरी, जोड़ को स्थिर करने की सर्जरी या आंशिक/पूरे जोड़ को बदलने की सर्जरी शामिल हो सकती है। कुछ मरीजों को जोड़ में लगाए जाने वाले इंजेक्शन से थोड़े समय के लिए राहत मिल सकती है। लेकिन ये घिस चुकी कार्टिलेज को दोबारा नहीं बना सकते। जोड़ों में दर्द होने पर उसकी सही वजह पता लगाना और उसी के अनुसार इलाज करना जरूरी है। गठिया ऐसी बीमारी नहीं है जिसमें हर व्यक्ति के लिए एक ही इलाज काम करे।

गठिया का खतरा और असर कम करने के लिए

- अपना वजन स्वस्थ सीमा में रखें।
- धूम्रपान न करें और तंबाकू न चबाएँ।
- ज्यादातर दिनों में करीब 40 मिनट एरोबिक व्यायाम करें। अगर चलने या वजन डालने वाले व्यायाम से दर्द होता है, तो तैराकी या स्टेशनरी साइकिल आजमा सकते हैं।
- स्ट्रेंथ ट्रेनिंग करें, ताकि मजबूत मांसपेशियाँ जोड़ों को सहारा और स्थिरता दे सकें।
- दर्द कम करने, शरीर का लचीलापन और संतुलन बेहतर करने तथा मांसपेशियों को मजबूत बनाने के लिए फिजियोथेरेपी की मदद लें।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

लंदन की अंधेरी दुनिया की गहराइयों में

यह कहानी है मासूमियत की, जो अपनी हद से बढ़ी महत्वाकांक्षा और झूठे आदर्शों से बुने छल–कपट के जाल में ऐसी फँसी कि आखिरकार उसकी जान चली गई।

संध्या राव

हाल ही में ब्रिटिश एयरवेज़ की एक उड़ान के दौरान मनोरंजन सेक्शन में मुझे *लंदन फॉलिंग* नाम की इस किताब की सिफारिश दिखी। इसके लेखक पैट्रिक रैडन कीफ़ का नाम कुछ जाना-पहचाना-सा लगा। लेकिन असली उत्सुकता किताब के बारे में लिखे छोटे-से परिचय ने जगाई। आखिरकार जब मैं बाथ के टॉपिंग एंड कंपनी बुकसेलर्स पहुँचा - जिसका ज़िक्र पिछले महीने के कॉलम में भी किया था - तो पता चला कि किताब बिक चुकी है। दरअसल, कीफ़ का उस दुकान में एक कार्यक्रम भी हुआ था। बहुत बाद में, चेन्नई लौटने पर मुझे याद आया कि मैंने उनका नाम कहाँ सुना था। कीफ़ ने 2021 में सैकलर परिवार पर लिखी अपनी किताब *एम्पायर ऑफ़ पेन* के लिए नॉन-फिक्शन का प्रतिष्ठित बैली गिफर्ड पुरस्कार जीता था। इस किताब का ज़िक्र फरवरी 2022 के वर्ड्सवर्ल्ड में भी आया था, 2016 में यही पुरस्कार जीतने वाली बेन जूडा की किताब *दिस इज़ लंदन* के संदर्भ में। खैर, आखिरकार मुझे लंदन फॉलिंग हीथ्रो एयरपोर्ट पर मिल गई।

इस संस्करण का आगे और पीछे का कवर बेहद फीका-सा है। काले और पीले रंग की धारियाँ उस पर आड़ी-तिरछी नहीं, बल्कि सीधी क्षैतिज रेखाओं में फैली हुई हैं। किताब का एक दूसरा संस्करण भी है, जिसके कवर पर टेम्स नदी दिखाई गई है। लेकिन इस फीके-से कवर को ध्यान से देखने पर कुछ शब्द उभरते दिखाई देते हैं - चमक-दमक से भरे शहर में एक रहस्यमयी मौत... और सच की तलाश में एक परिवार।

नवंबर 2019 में रैशेल और मैथ्यू ब्रेटलर का 19 साल का बेटा लापता हो जाता है। ज़ैक उनके दो बेटों में छोटा था। बचपन में वह बहुत हँसमुख और मज़ाकिया था और उसकी याददाश्त भी कमाल की थी। मौज-मस्ती पसंद करने वाला, खेलकूद में अच्छा और तेज़ दिमाग वाला - दूसरे बच्चों की तरह एक सामान्य लड़का। ब्रेटलर परिवार में बहुत प्यार था। माता-पिता अपने दोनों बेटों को हमेशा प्रोत्साहित करते थे और लंदन के एक अच्छे इलाके में आराम की ज़िंदगी जी रहे थे। लेकिन जब ज़ैक करीब 16-17 साल का हुआ, तो उसमें धीरे-धीरे बदलाव आने लगा। पहले उसके माता-पिता, बड़े भाई जो और दोस्तों ने इस पर खास ध्यान नहीं दिया। लेकिन कुछ समय बाद उन्हें महसूस हुआ कि ज़ैक के सपने बहुत बड़े हो गए हैं। वह किसी भी तरह अमीरों जैसी शानदार ज़िंदगी जीना चाहता था।

माता-पिता को थोड़ी चिंता हुई, लेकिन उन्होंने इसे किशोर उम्र का सामान्य आकर्षण मान लिया। और काफी हद तक ऐसा सोचना गलत भी नहीं था।

लेकिन धीरे-धीरे चीज़ें अजीब होने लगीं। ज़ैक के कुछ नए दोस्त बन गए थे, जिनमें से कई उससे उम्र में काफी बड़े थे। वह ऐसा भी जताने लगा था कि उसके पास बहुत पैसा आ रहा है और वह बेहद शानदार ज़िंदगी जी रहा है। अब उसके माता-पिता सचमुच परेशान होने लगे। मिसाल के लिए, ज़ैक उनसे कहता कि वह लंबे समय तक रिवरवॉक नाम के एक बेहद महँगे अपार्टमेंट में रहता है, जहाँ से टेम्स नदी दिखाई देती है। माता-पिता को समझ नहीं आता था कि एक किशोर लड़के को इतनी महँगी जगह पर रहने का मौका आखिर मिल कैसे रहा है। दिलचस्प बात यह है कि किताब का आखिरी पैराग्राफ भी इसी जगह से जुड़ी एक बेहद मार्मिक तस्वीर हमारे सामने रखता है।

2019 की गर्मियों में पूरा परिवार एक जन्मदिन की पार्टी में गया था। वहाँ ज़ैक कुछ समय के लिए फिर वही पुराना, हँसता-खेलता लड़का दिखाई दिया। लेकिन वह पार्टी से जल्दी निकल गया और रिवरवॉक लौट गया, जहाँ वह उस गर्मी में रह रहा था।

उसे मालूम था कि उसके माता-पिता घर लौटते समय वॉक्सहॉल ब्रिज से गुजरेंगे। उसने उनसे कहा कि जब वे पुल के करीब पहुँचें तो उसे फोन करें।

पार्टी खत्म होने के बाद रैशेल, मैथ्यू और जो कार से घर लौटने लगे। एमआई6 की इमारत पार करके जैसे ही वे पुल पर पहुँचे, रैशेल ने ज़ैक को फोन किया। फिर तीनों ने ऊपर देखा।

दूर पाँचवीं मंज़िल की बालकनी में एक छोटी-सी आकृति दिखाई दी। वह ज़ैक था। वह अपने परिवार की ओर हाथ हिला रहा था। रिवरवॉक की जगह पर गौर कीजिए। टेम्स नदी के किनारे, ठीक एमआई6 मुख्यालय के सामने और वॉक्सहॉल ब्रिज के पास। जाहिर है, यह ऐसी जगह नहीं थी जहाँ एक सामान्य मध्यमवर्गीय छात्र आसानी से रह सके। फिर भी ज़ैक वहीं था - फ्लैट नंबर 504 की बालकनी पर खड़ा, अपने परिवार को हाथ हिलाता हुआ।

साल खत्म होने से पहले इसी फ्लैट की बालकनी से ज़ैक नीचे गिरा - या कूदा - और

टेम्स नदी में जा गिरा। उसकी मौत हो गई। गिरते समय उसका कूल्हा नदी के किनारे बने तटबंध से टकराया था।

उसका शव बैक्सटर विलिस नाम के एक युवक ने देखा, जो संयोग से वहाँ से गुजर रहा था। हैरानी की बात यह थी कि कुछ साल पहले विलिस से एक अन्य किशोर की मौत के मामले में भी पूछताछ हुई थी, जिसका शव बाद में टेम्स में तैरता मिला था। लंबे समय तक परेशान किए जाने के बाद आखिरकार विलिस का नाम उस मामले से साफ हो गया था।

अब जो शव उसे मिला था, उसके शरीर के ऊपरी हिस्से पर कोई कपड़ा नहीं था। उसने स्वेटपैंट पहन रखी थी और चेहरे के एक हिस्से पर इतनी जबरदस्त चोट थी, मानो किसी मुक्केबाज़ ने घूँसा मारा हो।

पुलिस और जाँचकर्ता पहुँचे तो उन्होंने मान लिया कि नदी की धारा शव को बहाकर वहाँ लाई होगी। किसी ने ऊपर रिवरवॉक की ओर नहीं देखा। किसी ने यह नहीं सोचा कि वह ऊपर से गिरा भी हो सकता है। रिवरवॉक जाकर पूछताछ करने में पुलिस को कई दिन लग गए।

तो आखिर उस रात हुआ क्या था? क्या ज़ैक दुर्घटनावश गिरा था? क्या किसी ने उसे धक्का दिया था?

या वह किसी से बचने के लिए नदी की ओर कूद गया था?

लंदन फॉलिंग इन्हीं सवालों और ऐसी कई दूसरी संभावनाओं की गहराई से पड़ताल करती है। लेखक उस समय की परिस्थितियों, घटना से जुड़े लोगों के अतीत और उनके आपसी रिश्तों की एक-एक परत खोलते हैं। साधारण लोगों से लेकर बेहद प्रभावशाली लोगों तक फैले एक उलझे हुए जाल की कड़ियाँ जोड़ने की कोशिश करते हैं। कीफ़ हर कड़ी का बहुत बारीकी से पीछा करते हैं। वे लोगों के बयान और यादें दर्ज करते हैं, तथ्यों और राय को परखते हैं, अटकलों और निष्कर्षों के साथ सबूतों पर भी गौर करते हैं। और सबसे बढ़कर, अपने बेटे की मौत का सच जानने के लिए बेचैन माता-पिता की बात बहुत ध्यान से सुनते हैं।

कीफ़ तक ज़ैक की कहानी संयोग से पहुँची। उनके एक दोस्त रब्बी थे, जिन्होंने कभी ज़ैक का

बार मिट्ज़्वा संस्कार करवाया था। उन्होंने कीफ़ को बताया कि ज़ैक के माता-पिता अपने बेटे की मौत के सवालों का जवाब पाने के लिए किस कदर परेशान हैं।

जब कीफ़ ने मामले की तह तक जाना शुरू किया, तो उनके सामने एक के बाद एक ऐसे किरदार आते गए जो लंदन की चमकती दुनिया के नीचे छिपे अँधेरे का हिस्सा थे।

इनमें ड्रग माफिया, हत्यारे, फुटबॉल क्लबों के मालिक, कारोबारी, रसूखदार लोग और कई दूसरे किरदार शामिल थे। इन सबके ऊपर मंडरा रही थी नए-नए अमीर बने रूसी धनकुबेरों की ताकत और प्रभाव की छाया।

और इन सबके बीच थी लंदन की मेट्रोपॉलिटन पुलिस, जिसका रवैया कई मौकों पर हैरान करने वाला निष्क्रिय दिखाई देता है। लेकिन ब्रेटलर परिवार के लिए सबसे बड़ा झटका कुछ और था।

उन्हें पता चला कि उनका बेटा लोगों के सामने खुद को ज़ैक इस्माइलोव नाम का एक बेहद अमीर निवेशक बताता था। उसकी बनाई कहानी के मुताबिक वह एक रूसी अरबपति का अनाथ बेटा था।

ज़ैक के माता-पिता को इसकी भनक तक नहीं थी। एक पाठक के रूप में मुझे एक और बात ने खास तौर पर चौंकाया - भारतीय मूल के दो लोगों का ज़ैक से करीबी जुड़ाव। ऐसा लगता था कि या तो उन्हें ज़ैक में खास दिलचस्पी थी या फिर उस दौलत में, जिसका वह दिखावा कर रहा था।

इनमें एक था अकबर शामजी, एक युगांडाई भारतीय का बेटा, जिसने लंदन में संदिग्ध तरीकों से सफलता हासिल की थी। दूसरा था वीरेंद्र शर्मा, जिसे इंडियन डेव के नाम से भी जाना जाता था। वह कथित तौर पर रबर का बड़ा कारोबारी था, लेकिन संभवतः ड्रग्स की दुनिया से भी जुड़ा हुआ था। उसके संबंध कई संदिग्ध लोगों से थे, फिर भी उसने खुद कभी जेल की सज़ा नहीं काटी थी। ब्रेटलर परिवार को शक था कि वह पुलिस का मुखबिर हो सकता है।

लेकिन सवाल वही थे - ज़ैक इन लोगों के इतना करीब कैसे पहुँचा? उसने उन्हें कैसे यकीन दिलाया कि वह एक रूसी अरबपति का वारिस है? पुलिस ने ज़ैक की मौत को आत्महत्या मानकर मामला बंद कर दिया। लेकिन ब्रेटलर परिवार तब भी मानता था - और आज भी मानता है - कि उनके बेटे की हत्या हुई थी। *लंदन फॉलिंग* एक बेहद प्रभावशाली, रोमांचक और बेचैन कर देने वाली किताब है। इसे पढ़ते हुए उन लाखों युवाओं का खयाल आता है जो दिल में उम्मीद और आँखों में सपने लिए बड़े शहरों की ओर निकल पड़ते हैं। रास्ता भटकना आसान है। किसी के हाथों इस्तेमाल हो जाना आसान है। और इस भीड़ में अचानक गायब हो जाना भी आसान है।

संयोग से किताब के कवर पर दिखाई देने वाली तस्वीर उसी रिवरवॉक अपार्टमेंट की है। यह इमारत ठीक एमआई6 मुख्यालय के सामने है। और एमआई6 के कैमरे में वह दृश्य कैद हुआ था जिसमें एक आकृति फ्लैट नंबर 504 की बालकनी से नीचे टेम्स नदी में गिरती दिखाई देती है।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

LBW

भाषा की उलझन

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

भाषा और पहनावा आपस में गहराई से जुड़े हो सकते हैं। यह बात मुझे कई साल पहले तब समझ आई, जब मैंने चेन्नई से कोयंबटूर की छोटी-सी उड़ान ली थी। मैंने धोती पहन रखी थी, क्योंकि मेरी सारी पतलूनें पहनने लायक नहीं बची थीं। मैं करीब 10 दिनों से लगातार सफर कर रहा था और वे सब गंदी हो चुकी थीं। मेरा इरादा था कि कोयंबटूर पहुँचकर उन्हें ड्राई क्लीन करवा लूँ। इसलिए फिलहाल काम चलाने के लिए मैंने एक धोती खरीद ली। पायजामा भी पहन सकता था, लेकिन वे भी गंदे थे। तो मैं धोती और बुश शर्ट पहनकर घूम रहा था और जिससे भी मिलता, वह मुझसे या तो हिंदी में बात करता या तमिल में। हिंदी इसलिए कि मेरा चेहरा उन्हें उत्तर भारतीय लगता था और तमिल इसलिए कि मेरा पहनावा उन्हें दक्षिण भारतीय लगता था। लेकिन असली मुसीबत यह थी कि उन्हें मेरी हिंदी भी समझ नहीं आती थी और तमिल भी! मैंने अपना पूरा बचपन उत्तर भारत में, मध्य प्रदेश और दिल्ली में बिताया था। इसलिए मेरी तमिल भले ही ठीक-ठाक थी, लेकिन वह जैसे 1950 के दशक में ही अटक गई थी। मैं तमिल वैसे बोलता था जैसे उस जमाने में बोली जाती होगी, जबकि तमिलनाडु में भाषा तब से बहुत बदल चुकी थी।

जहाँ तक हिंदी की बात थी, वहाँ लोग हिंदी जानते ही नहीं थे - कम से कम इतनी नहीं कि मेरी बात समझ सकें। मजेदार बात यह थी कि हम सब अंग्रेजी जानते थे। लेकिन उन्हें लगता था कि मुझे अंग्रेजी नहीं आती! अगले दिन जब मेरी पतलूनें ड्राई क्लीन होकर वापस आईं, तभी जिंदगी और भाषा दोनों फिर सामान्य हो पाए। इसके बिल्कुल उलट अनुभव मुझे बिहार में हुआ था। वहाँ मैं जीवन में सिर्फ एक बार गया हूँ - करीब आधी सदी पहले। सुबह छह बजे मैं ट्रेन से उतरा और अपने चाचा के घर जाने के लिए रिक्शा ढूँढ़ने लगा। सारे रिक्शावाले सो रहे थे और कोई मुझे ले जाने को तैयार नहीं था।

आखिरकार एक रिक्शावाला ग्राहकों की तलाश में वहाँ आया और मुझे ले जाने के लिए तैयार हो गया।

लेकिन उसकी एक शर्त थी - वह मुझसे अंग्रेजी में ही बात करेगा। मुश्किल यह थी कि उसे अंग्रेजी का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था। फिर भी उसे पूरा विश्वास था कि वह अंग्रेजी बोल रहा है! मेरी जिंदगी का यह शायद सबसे अजीब अनुभव था। आज 50 साल बाद भी मैं सोचता हूँ कि आखिर उस समय उसके दिमाग में चल क्या रहा था!

लगता है कि भाषा और पहनावे को हमारा दिमाग किसी अजीब तरीके से आपस में जोड़ देता है।

मेरी पत्नी ने भी इसका अनुभव किया था - और वह भी ऐसी जगह जहाँ इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी: 1970 के दशक के आखिर में कोरिया में। वह अपने समय से बहुत आगे की सोच रखने वाली थीं। पढ़ाई के लिए कोरिया गई थीं। वहाँ उन्होंने देखा कि जैसे ही स्थानीय लोग उन्हें साड़ी में देखते, वे तुरंत अंग्रेजी में बोलना शुरू कर देते। मुश्किल यह थी कि उन्हें अंग्रेजी आती ही नहीं थी। यहाँ तक कि जब मेरी पत्नी उनसे कोरियाई भाषा में बात कर रही होतीं, तब भी वे अंग्रेजी में जवाब देने लगते!

उन दिनों कोरिया में विदेशी बहुत कम होते थे। और जो विदेशी वहाँ दिखाई देते थे, वे आमतौर पर गोरे लोग होते थे और पश्चिमी कपड़े पहनते थे।इसलिए साड़ी पहने हुए एक साँवली भारतीय महिला उनके लिए बिल्कुल अनजाना अनुभव थी। इससे कई मजेदार घटनाएँ हुईं। एक बार बस में दो स्कूली लड़के मेरी पत्नी को देखकर आपस में उनके बारे में बातें करने लगे। वे कई मिनट तक अपनी भाषा में लगातार कुछ बोलते रहे। मेरी पत्नी चुपचाप सुनती रहीं। फिर जब उनका बस स्टॉप आया, तो वे मुड़ीं और उन लड़कों से कोरियाई में कहा कि वह भारत से हैं और घर जाकर अपनी भूगोल की किताब में भारत के बारे में पढ़ें। बेचारे लड़कों को ऐसा झटका लगा कि जैसे उनके पैरों तले जमीन खिसक गई हो!

लेकिन इसका उलटा भी होता है। एक बार मेरे माता-पिता ट्रेन में सफर कर रहे थे। सामने वाली बर्थ पर एक आदमी बैठा था, जिसने पगड़ी और पारंपरिक पठानी कपड़े पहन रखे थे। मेरी माँ बीच-बीच में मेरे पिता से उसके बारे में तमिल में कुछ कहती रहती थीं। कई घंटे बाद जब वह आदमी ट्रेन से उतरने लगा, तो उसने मेरे माता-पिता को विदा कहा और उनसे कहा कि अगर वे कभी उसके शहर आएँ तो उसके घर जरूर आएँ। और फिर जो हुआ, वह यादगार था।

उस आदमी ने उनसे एकदम शुद्ध तमिल में बात की। ■

The Rotary Foundation

INSPIRE LEARNING

Rotary members are creating community-driven, sustainable projects to improve access to quality education around the world. From foundational literacy and numeracy classes to classroom technology programs and continuing education for teachers, your gift to The Rotary Foundation's Annual Fund supports these projects to inspire learning at all ages.

GIVE TODAY: rotary.org/donate

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹50
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26